VIDYA
UNIVERSITY PRESS

समाज एवं संस्कृति

BASED ON NEP GUIDELINES

8

1. आधुनिक काल

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) तीन भागों में 2. (c) नादिर शाह 3. (a) तृतीय
4. (b) सन् 1858 ई० में

(ख) 1. 1858 ई० 2. प्राथमिक 3. 1857 ई०
4. सर सिरिल रेडक्लिफ

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. (iii) 2. (i) 3. (iv) 4. (ii)

(ङ) 1. भारत में आधुनिक युग की शुरूआत अठारहवीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा उसके अधीन होने के बाद हुई थी।

2. आधुनिक भारतीय इतिहास के प्राथमिक स्रोत मौलिक दस्तावेज और साहित्यिक साक्ष्य, पुरातात्विक अवशेष, ऑडियो कैसेट, फिल्में, घटनाओं के वीडियो टेप और महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के साक्षात्कार आदि हैं।

3. आधुनिक भारतीय इतिहास के द्वितीयक स्रोत महान इतिहासकारों और विद्वानों के कार्य, लेख, समीक्षाएँ, पुस्तकें और समाचार-पत्र हैं।

4. 26 जनवरी, 1950 को भारत गणतन्त्र बना।

(च) 1. अठारहवीं शताब्दी को भारतीय इतिहास का सबसे अन्धकारपूर्ण काल माना जाता है। सन् 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही महान मुगलों के शासन का समापन हुआ। राजपूतों, जाटों, बुन्देलों, सतनामियों तथा सिखों के कई विद्रोह हुए। दक्कन में मराठों के उभार से औरंगजेब के शासनकाल में ही मुगल साम्राज्य की जड़ें हिलने लगी थीं। नादिरशाह के आक्रमण (1739 ई०) ने मुगल शक्ति पर गहरा वज्रपात किया। अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण (1748-57 ई०) तथा पानीपत के तीसरे युद्ध (1761 ई०) मराठों तथा मुगलों के लिए घातक सिद्ध हुए। इन परिस्थितियों ने इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल में आधिपत्य जमाने का अवसर दिया और भारत में ब्रिटिश सत्ता स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया। मुगल साम्राज्य की कमजोरी का लाभ उठाते हुए बंगाल, अवध, हैदराबाद, रूहेलखण्ड, मैसूर, राजपूताना आदि स्वायत्तशासी बन गए। कर्नाटक के तीन युद्ध (1744-63 ई०) अंग्रेजों के पक्ष में निर्णायक सिद्ध हुए। भारत में राजनीतिक अस्थिरता ने देश पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए यूरोपीय व्यापारिक शक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता को आमंत्रित किया। इसका भारतीय कृषि, हस्तशिल्प तथा व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। विभिन्न कलाओं का भी ह्रास हुआ। अंग्रेजों ने भारतीय व्यापार को अपने हाथों में ले लिया। उन्होंने भारतीयों का शोषण किया, जिससे कारीगरों एवं शिल्पकारों का विनाश हो गया।

2. भारतीय इतिहास का आधुनिक काल अन्तिम महान मुगल शासक औरंगजेब की मृत्यु के साथ शुरू हुआ। शक्तिशाली मुगल साम्राज्य धीरे-धीरे कई स्वायत्त राज्यों में विघटित हो रहा था। जबकि ब्रिटिश सत्ता में आ रहे थे। सन् 1757 से 1857 ई० के बीच अंग्रेज भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने और उसका विस्तार करने में लगे रहे। उन्होंने बंगाल तथा अवध पर अपना अधिकार स्थापित किया, मराठों को अधीन किया और बर्मा एवं सिंध पर अधिकार कर लिया। सिख भी अधीन थे। भारत में ब्रिटिश शासन के महान सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक प्रभाव हुए। इसने अनेक सामाजिक-धार्मिक सुधारों और सांस्कृतिक पुनरुत्थान को जन्म दिया। अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से भारतीय लोग पाश्चात्य विज्ञान, दर्शन, साहित्य एवं विचारधारा से परिचित हुए, जिनसे भारतीयों में स्वतन्त्रता, समानता एवं बन्धुत्व के उच्च आदर्श जाग्रत हुए। भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना जाग्रत हुई। सन् 1857 के विद्रोह ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी। कम्पनी के शासन का अन्त हो गया और सन् 1858 ई० में राजनीतिक सत्ता ब्रिटिश साम्राज्ञी (ताज) में स्थानांतरित हो गई।

   सन् 1905 में राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष प्रारम्भ हुआ। महात्मा गाँधी ने 1919 ई० में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अहिंसात्मक राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किया। अंत में, भारत 15 अगस्त, 1947 को स्वतन्त्र हुआ और 26 जनवरी, 1950 को एक संप्रभु लोकतान्त्रिक गणराज्य बन गया, जब हमारा संविधान लागू हुआ।

3. सन् 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही महान मुगलों के शासन का आरंभ हो गया। राजपूतों, जाटों, बुंदेलों, सतनामियों तथा सिखों के तीव्र व स्वत:स्फूर्त विद्रोह हुए। दक्कन में मराठों के उभार से औरंगजेब के शासनकाल में ही मुगल साम्राज्य की जड़ें हिलने लगी थीं। नादिरशाह के आक्रमण (1739 ई०), अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण (1748-57 ई०) ने मुगल शक्ति पर गहरा आघात किया। मुगल साम्राज्य की घटती हुई शक्ति का पूरा लाभ उठाते हुए बंगाल, अवध, हैदराबाद, रूहेलखण्ड, मैसूर, राजपूताना आदि स्वायत्तशासी बन गए। इसी बीच मराठे मुगलों की राजनीतिक सत्ता के दावेदार के रूप में उभरने का प्रयास कर रहे थे, किन्तु अंग्रेजों के हाथों वे भी पराजित हुए। सन् 1757 ई० से लेकर 1857 ई० के बीच मुगल शासक केवल नाममात्र के शासक रह गए तथा उनकी सत्ता केवल दिल्ली तक ही मिसट कर रह गई।

4. आधुनिक भारतीय इतिहास के विभिन्न स्रोतों को प्राथमिक और द्वितीयक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

   प्राथमिक स्रोत—प्राथमिक स्रोत में मौलिक दस्तावेज और साहित्यिक साक्ष्य आते हैं। पुरातात्विक अवशेष, घटनाओं के ऑडियो कैसेट, फिल्में, वीडियो टेप तथा प्रमुख व्यक्तियों के साक्षात्कार आदि आधुनिक इतिहास के प्राथमिक स्रोत हैं। इन्हें राज्य व राष्ट्रीय अभिलेखागार में संरक्षित किया जाता है।

द्वितीयक स्रोत—द्वितीयक स्रोत में महान इतिहासकारों तथा विद्वानों के कार्य, लेख, समीक्षाएँ, पुस्तकें तथा समाचार-पत्र। ऐसी पुस्तकें तथा अभिलेखों के रिकॉर्ड पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

2. ब्रिटिश शक्ति की स्थापना

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) सन् 1600 में 2. (d) बक्सर 3. (a) वेलेस्ली
4. (d) मंगलौर 5. (d) बक्सर

(ख) 1. निजाम 2. वॉरेन हेस्टिंग्स 3. पंजाब 4. डलहौजी 5. 1774 ई०

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (i) 4. (ii)

(ङ) 1. भारत के साथ व्यापार में पुर्तगाली, डच, डेनिश, अंग्रेज और फ्रेंच यूरोपीय शक्तियों में प्रतिद्वन्द्विता थी।

2. कारखाना (फैक्ट्री) निर्माण करने का स्थान नहीं था, बल्कि यह माल रखने के लिए गोदाम, रिकॉर्ड रखने के लिए कार्यालय तथा कम्पनी के नौकरों के रहने के लिए क्वार्टर होते थे। इसे फैक्ट्री इसलिए कहा जाता था, क्योंकि इसके अधिकारियों को फैक्टर कहा जाता था।

3. इलाहाबाद की सन्धि रॉबर्ट क्लाइव और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय के बीच हुई।

4. बंगाल का प्रथम गवर्नर वॉरेन हेस्टिंग्स था।

5. प्लासी का युद्ध (1757) अंग्रेजों के लिए महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि नवाब को पराजित कर मौत के घाट उतार दिया गया था। नवाब की सेना के सेनापति को नवाब बनाया गया। वह अंग्रेजों के हाथों की कठपुतली मात्र था जो बंगाल का आभासी शासक बन गया।

(च) 1. लॉर्ड कॉर्नवॉलिस का उत्तराधिकारी लॉर्ड वेलस्ली 'भारत में ब्रिटिश साम्राज्य' को 'भारत का साम्राज्य' में बदलने के उद्देश्य से भारत आया था। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसने 'सहायक सन्धि' की नीति अपनाई। इस सन्धि के सिद्धान्त सरल थे—

(i) इस सन्धि को स्वीकार करने वाले भारतीय शासकों से यह अपेक्षित था कि वे अंग्रेजों की अनुमति के बिना किसी भी अन्य शक्ति से न तो लड़ेंगे और न ही किसी प्रकार का सम्पर्क रखेंगे।

(ii) सहायक राज्य में आन्तरिक शान्ति तथा व्यवस्था हेतु अंग्रेजों की सेना ब्रिटिश सेनापतियों के नियन्त्रण में राज्य में रहेंगी।

(iii) सेना का व्यय वहन करने के लिए भारतीय राज्य को अपने क्षेत्र का एक भाग अथवा एक निश्चित वार्षिक धनराशि कम्पनी को देनी होगी। इसके बदले में कम्पनी सहायक राज्य की बाह्य आक्रमणों से रक्षा करेगी। हैदराबाद का निजाम सहायक सन्धि को स्वीकार करने वाला सर्वप्रथम भारतीय शक्ति था।

2. बक्सर का युद्ध 22 अक्टूबर, 1764 ई० को ईस्ट इण्डिया कम्पनी और बंगाल के नवाब मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेनाओं के बीच लड़ा गया। इसमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेना विजयी हुई तथा 1765 में इलाहाबाद की सन्धि पर हस्ताक्षर के साथ युद्ध समाप्त हो गया। इस युद्ध को प्लासी के युद्ध से अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के एकीकरण में इसके दूरगामी प्रभाव हुए। इसने विशेष रूप से बंगाल और सामान्य रूप से भारत की राजनीतिक-आर्थिक परिस्थितियों को प्रभावित किया। प्लासी के युद्ध के विपरीत, बक्सर का युद्ध एक पूर्ण युद्ध था, जिसने युद्ध में अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित किया। इस युद्ध में मुगलों की हार बहुत महत्त्वपूर्ण थी। इसने भारतीय उपमहाद्वीप में अंग्रेज सैनिकों को शक्तिशाली ताकतों में से एक के रूप में चिन्हित किया। इलाहाबाद की सन्धि ने औपचारिक रूप से ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल के पूर्वी प्रांत से राजस्व वसूलने का अधिकार दिया, जिसने कम्पनी की आर्थिक स्थिति को पूरी तरह से बदल दिया, जिससे बेहतर संसाधनों का प्रयोग कर वे अपनी सेना को और अधिक मजबूत कर सकते थे। इसका अर्थ यह भी था कि उपमहाद्वीप के पूर्वी भाग में उनकी स्थिति को चुनौती देने के लिए अन्य कोई दूसरा दल नहीं था। अवध के नवाब की हार ने एक मध्यवर्ती राज्य का निर्माण किया, जिसने अंग्रेजों और मराठों के बीच प्रभावी रूप से एक दीवार बना दी। इस प्रकार, बक्सर के युद्ध में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की शक्ति को बढ़ा दिया था, क्योंकि यह बंगाल की सीमा से परे अपने अधिकार क्षेत्र का विस्तार करने में सफल रही।

3. 1834 में निर्मित, 'गोद निषेध अधिनियम' ने घोषणा की 'यदि किसी निर्भर राज्य के शासक की मृत्यु, बिना किसी उत्तराधिकारी (अर्थात् पुत्र) के हो जाती है तो उसके दत्तक पुत्र (गोद लिया गया पुत्र) को उत्तराधिकारी नहीं माना जा सकता। इसके बजाए वह राज्य समाप्त माना जाएगा या ब्रिटिश कम्पनी के अधिकार में वापस चला जाएगा। डलहौजी ने 'गोद निषेध अधिनियम' लागू करते हुए सतारा, जयपुर, उदयपुर, सम्बलपुर, नागपुर, मगध और झाँसी पर अधिकार कर लिया। कुशासन का आरोप लगाते हुए बरार तथा अवध पर भी अधिकार कर लिया। इसी प्रकार, उसने कर्नाटक तथा तंजौर के शासकों के पद तथा पेंशन समाप्त करके इन्हें ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

4. मराठा बहादुर तथा निर्भीक थे, जिनके पास मजबूत सेना तथा विशाल साम्राज्य था। फिर भी वे अंग्रेजों के विरुद्ध असफल रहे। इसके अनेक कारण थे—उनमें एकता तथा संगठन का अभाव था। उनके सरदार एक-दूसरे से ईर्ष्या रखते थे। उन्होंने वित्तीय प्रशासन की परवाह नहीं की। वे गुरिल्ला युद्ध में निपुण थे, लेकिन आमने-सामने की लड़ाई में निपुण नहीं थे। उन्हें भौगोलिक, चातुर्य और कूटनीति का ज्ञान नहीं था। उन्होंने अपनी सेना को प्रशिक्षित करने की परवाह नहीं की तथा सैन्य संगठन, तोपखाना एवं नौसेना की भी उपेक्षा की। उनके अधिकांश नेताओं की मृत्यु 19वीं सदी की शुरुआत में हो गई थी। उनका दृष्टिकोण संकुचित था तथा उनमें राष्ट्रीय भावना की कमी थी। वे अपनी प्रजा का भी ध्यान नहीं रखते थे। वे अपने निजी स्वार्थों को पूरा करने में लगे रहते थे। इसलिए वे अपनी प्रजा के अत्यन्त अलोकप्रिय शासक थे।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें।

❑

3. प्रशासनिक ढाँचा

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) पुलिस 2. (a) रेग्युलेटिंग ऐक्ट के द्वारा
3. (c) लॉर्ड कॉर्नवॉलिस के द्वारा 4. (b) लॉर्ड कॉर्नवॉलिस के द्वारा

(ख) 1. सन् 1801 ई० 2. 1853 3. विलियम पिट 4. कॉर्नवॉलिस
5. 1853 ई०

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (iv) 3. (i) 4. (iii)

(ङ) 1. वॉरेन हेस्टिंग्स भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था।
2. सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना सन् 1774 ई० में कलकत्ता (कोलकाता) में हुई थी। सर एलिजा इम्पी को इसका पहला मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया था।
3. लॉर्ड कॉर्नवॉलिस ने भारत में ब्रिटिश सिविल सर्विसेज का गठन किया।
4. कम्पनी की पहली सेना कर्नाटक युद्धों के दौरान संगठित की गई थी।

(च) 1. भारत में ब्रिटिश शासन के तीन स्तंभ सिविल सेवा, सेना और पुलिस थे।
(i) सिविल सेवा—गवर्नर जनरल की परिषद् को बड़ी संख्या में अधिकारियों द्वारा सहायता प्रदान की गई, जिन्होंने सिविल सेवा का गठन किया। लॉर्ड कॉर्नवॉलिस को भारत में ब्रिटिश सिविल सेवा का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन दिनों प्रभावशाली ब्रिटिश परिवारों के सदस्य ही मुख्य रूप से इन सेवाओं के लिए नामित होते थे। इसके बाद 1853 ई० के

अधिनियम द्वारा भारतीय सिविल सेवाओं के लिए एक खुली प्रतियोगिता की प्रणाली लागू की गई।

(ii) सेना—भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा तथा विस्तार के लिए सेना महत्त्वपूर्ण थी। सेना में अधिकांशत: भारतीय सैनिक तथा सिपाही होते थे। भारतीय सैनिक का सर्वोच्च पद सूबेदार का होता था।

(iii) पुलिस—लॉर्ड कॉर्नवॉलिस ने पुलिस को एक नियमित शक्ति के रूप में संगठित किया। सन् 1791 ई० में कलकत्ता के लिए एक पुलिस अधीक्षक की नियुक्ति की गई। अन्य नगरों को कोतवालों के नियन्त्रण में रखा गया। जिलों को थानों में विभाजित किया गया। प्रत्येक थाने का नियन्त्रण एक दरोगा करता था। बाद में प्रतयेक जिले को एक पुलिस अधीक्षक के नियन्त्रण में रखा गया। गाँवों में चौकीदार होते थे। पुलिस विभाग के उच्च पद अंग्रेजों के लिए आरक्षित होते थे।

2. गवर्नर जनरल की परिषद को बड़ी संख्या में अधिकारियों द्वारा सहायता प्रदान की गई, जिन्होंने सिविल सेवा का गठन किया। लॉर्ड कॉर्नवॉलिस को भारत में ब्रिटिश सिविल सेवा का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन्होंने अधिकारियों के लिए कठोर नियम बनाए। समय के साथ ये अधिकारी दुनिया में सबसे ज्यादा वेतन पाने वाले सिविल सेवक बन गए। इन सेवाओं के सम्मान और उच्च वेतनों के कारण कुलीन परिवारों के युवक इसकी ओर आकर्षित होने लगे। उन दिनों प्रभावशाली ब्रिटिश परिवारों के सदस्य ही मुख्य रूप से इन सेवाओं के लिए नामित होते थे। इसके बाद 1853 ई० के अधिनियम द्वारा भारतीय सिविल सेवाओं के लिए एक खुली प्रतियोगिता की प्रणाली लागू की गई। लॉर्ड वेलेस्ली ने इन अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। हालांकि 1806 ई० में निदेशकों ने इन अधिकारियों को प्रशिक्षित करने का काम इंग्लैण्ड के हेलीबरी कॉलेज में स्थानान्तरित कर दिया। प्रशासनिक दृष्टि से ब्रिटिश भारत को अनेक जिलों में बाँटा गया। प्रत्येक जिला एक कलेक्टर के अधीन रखा गया, जो प्रशासन का प्रमुख व्यक्ति होता था तथा राजस्व वसूलने एवं कानून व्यवस्था कायम रखने के लिए उत्तरदायी होता था।

3. अंग्रेजों ने भारत में 'कानून के शासन' की स्थापना की, जिसका अर्थ यह है कि सभी कानून के सामने एक समान हैं। जाति तथा धर्म पर आधारित सभी भेदभाव समाप्त कर दिए गए। ब्रिटिश न्यायिक व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं—
   (i) प्रचलित कानूनों का स्थान व्यवस्थापित कानूनों ने ले लिया।
   (ii) कानून बनाने के साथ ही न्यायिक एकरूपता की स्थापना हुई, जो कानून शासक तथा शासित दोनों पर लागू होते थे।
   (iii) मुकदमें की प्रक्रिया बहुत महँगी होने के कारण निर्धन लोगों की पहुँच के बाहर हो गई।

(iv) यद्यपि न्याय-व्यवस्था में कानूनी समानता की बात कही गई थी, किन्तु यूरोपीय लोगों के मुकदमें ब्रिटिश न्यायाधीशों द्वारा अलग अदालतों में सुने जाते थे।

4. भारत के संवैधानिक इतिहास में 'पिट्स इण्डिया ऐक्ट' एक मील का पत्थर है। इसने इंग्लैण्ड से दोहरे नियन्त्रण की व्यवस्था को लागू किया। ऐक्ट ने गवर्नर जनरल की सर्वोच्चता स्थापित करके भारत के एकीकरण में सहायता की। ब्रिटिश संसद ने भारत में कम्पनी की सम्पत्तियों पर अपनी सर्वोच्चता का दावा किया। यह ऐक्ट 1858 ई० तक लागू रहा। इसके बाद भारत का प्रशासन ब्रिटिश ताज के हाथों में चला गया।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

4. ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) भू-राजस्व 2. (b) वॉरेन हेस्टिंग्स ने 3. (b) महालवाड़ी
4. (b) बंगाल तथा बिहार में 5. (d) इनमें से कोई नहीं

(ख) 1. 1883 2. वॉरेन हेस्टिंग्स 3. 1796
4. लॉर्ड कॉर्नवॉलिस 5. थॉमस मुनरो

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (i) 4. (ii)

(ङ) 1. भारत के विभिन्न भागों में ब्रिटिश शासकों द्वारा चालू की गई विभिन्न राजस्व संग्रहण व्यवस्थाओं के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) इजारादारी व्यवस्था (ii) बंगाल का स्थायी बन्दोबस्त प्रणाली (iii) रैयतवाड़ी व्यवस्था (iv) महालवाड़ी बन्दोबस्त व्यवस्था।

2. रैयतवाड़ी व्यवस्था में तीस वर्ष की अवधि के लिए राजस्व निश्चित किया जाता था। यह भूमि की गुणवत्ता और फसल की प्रकृति पर आधारित था। राजस्व की दर बहुत अधिक होती थी।

3. महालवाड़ी व्यवस्था पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और पंजाब के कुछ भागों में लागू की गई थी, जहाँ अनेक गाँवों के समूहों जिन्हें 'महाल' या 'भाईचारा' कहा जाता था, में भूमि के सामूहिक स्वामित्व की व्यवस्था प्रचलित थी। इस व्यवस्था में ताल्लुकेदार या महाल के मुखिया के साथ समझौता किया जाता था। वह राजस्व वसूल कर ब्रिटिश कलेक्टरों को सौंप दिया करता था।

4. वॉरेन हेस्टिंग्स ने इजारादारी व्यवस्था की शुरूआत की, जिसमें राजस्व वसूलने का अधिकार सबसे ऊँची बोली (नीलामी) लगाने वाले व्यक्ति को पाँच वर्ष के लिए दिया जाता था। इस व्यवस्था ने किसानों के कष्टों को और भी बढ़ा दिया, क्योंकि बोली धनी व्यापारियों द्वारा लगाई जाती थी, जो भूमि की उत्पादकता को ध्यान में रखे बिना केवल राजस्व की वसूली में रुचि रखते थे।
5. ब्रिटिश उद्यमी नील बागान के मालिक थे। उन्होंने नील की खेती करने वालों के साथ समझौते किए।

(च) 1. स्थायी बन्दोबस्त व्यवस्था में जमींदार भूमि के स्थायी मालिक बन गए। अब राजस्व एकत्रित करने वाले वंशानुगत मालिकाना अधिकार के साथ जमींदार बन गए। वे अपनी जमीन किसी को भी बेच सकते थे। भूमि जोतने वाले किसान काश्तकार मात्र बनकर रह गए। जमींदारों को निश्चित धनराशि नियमित रूप से अदा करनी पड़ती थी, ऐसा न करने पर उनकी जमीन को जब्त करके बेच दिया जाता था। परम्परागत जमींदारों का स्थान क्रमश: धनी वर्ग ने ले लिया, जो अनुपस्थित जमींदार के रूप में नगरीय क्षेत्रों में रहना पसन्द करते थे। वे अपनी जमीन काश्तकारों को ऊँची दरों पर पट्टे पर दे देते थे, जिन्होंने आगे अन्य काश्तकारों को जमीन पट्टे पर दी। इस प्रकार स्थायी बन्दोबस्त का फायदा सरकार से ज्यादा जमींदारों को हुआ।

2. निम्नलिखित कारकों के कारण अंग्रेजों के अधीन कृषि का व्यवसायीकरण हुआ—

(i) इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति—इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप उसके उद्योगों के लिए अधिक मात्रा में अनेक प्रकार के कच्चे माल की आवश्यकता हुई, जैसे—उन्हें अपने फलते-फूलते कपड़ा उद्योग के लिए कच्चे कपास की आवश्यकता थी। इसलिए भारतीय किसानों को इंग्लैण्ड में कपड़ा कारखानों द्वारा उपयोग की जाने वाली कपास की खेती करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

(ii) बागानी कृषि—भारत की जलवायु अनेक प्रकार की बागानी फसलों; जैसे—नील, गन्ना, चाय, कहवा, नारियल आदि की खेती के लिए उपयुक्त थी। अंग्रेज भारत में बागानी कृषि की ओर आकर्षित हुए, क्योंकि इससे वे बहुत लाभ कमा सकते थे। इसलिए उन्होंने भारत के विभिन्न भागों में बागानी खेती का विकास किया।

(iii) अनुपस्थित जमींदारों का उदय—अनुपस्थित जमींदारों का नया वर्ग अधिक से अधिक लाभ कमाने में रुचि रखता था। इसलिए वे व्यावसायिक फसलें उगाने में रुचि रखते थे।

3. आधुनिक युग के सबसे बड़े आन्दोलनों में से एक नील आन्दोलन था, जिसने 1859-60 ई० में बंगाल को अपनी चपेट में ले लिया। नील की खेती पर यूरोपीय बागान मालिकों का एकाधिकार था। यूरोपीय बागान मालिक किसानों को नील की खेती करने के लिए विवश करते थे और उन पर अत्याचार करते थे। बागान

मालिकों ने मारपीट और कारावास तक का सहारा लिया। सन् 1859 ई० में किसानों का आक्रोश फूट पड़ा। हजारों-लाखों किसानों ने नील की खेती करने से इनकार कर दिया। वे लाठी, तलवारों, तीर-कमार और बन्दूकों आदि शस्त्रों से लैस होकर अपनी बस्तियों की रक्षा करने लगे। अनेक बुद्धिजीवियों ने किसानों के पक्ष का समर्थन किया। सरकार को नील आयोग की नियुक्ति करनी पड़ी, जिसने 1862 ई० में कानून बनाकर किसानों के कष्टों को दूर करने के लिए प्रभावी कदम उठाए।

4. ब्रिटिश नीतियों ने भारतीयों किसानों और कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। भारत में ब्रिटिश कृषि नीतियाँ ऐसी थीं, जिनसे उन्हें भूमि से अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त हो तथा भूमि-सुधारों पर कम-से-कम व्यय हो। अंग्रेजों की भू-राजस्व नीतियों ने किसानों को अपना बकाया भुगतान करने के लिए उच्च ब्याज दरों पर पैसा उधार लेने के लिए मजबूर किया। इससे किसानों की ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई। अंग्रेजों ने कृषि की विधियों को सुधारने या सिंचाई परियोजनाओं को प्रारम्भ करने की कोई पहल नहीं की। जिससे भूमि की उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। उन्होंने सूखे से निपटने के भी उपाय नहीं किए। अकाल एक नियमित विशेषता बन गई। इसने किसानों को कंगाल कर दिया। कृषि में गतिरोध तथा अधोगति की स्थिति उत्पन्न हो गई, जिससे भूमि की उत्पादकता में अत्यधिक गिरावट आई। यह स्थिति जमींदारी व्यवस्था, छोटे तथा अनार्थिक जोत, आधुनिक कृषि उपकरणों की कमी, सिंचाई के साधनों की कमी और कृषि के प्रति सरकार की उदासीनता आदि कारणों से उत्पन्न हुई।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

5. उपनिवेशवाद और जनजातीय समाज

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) कोल ने 2. (b) खासी का 3. (c) संथाल विद्रोह
4. (a) सन्थाल के

(ख) 1. छोटा नागपुर 2. 8.6 3. हैजे 4. होरोको 5. मेघालय

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (i) 4. (ii)

(ङ) 1. 'जनजाति' शब्द का प्रयोग सामान्यत: भारत के दुर्गम पहाड़ी तथा पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाले मूल निवासियों के लिए किया जाता है। एक जनजातीय समूह एक निश्चित भाषा बोलता है, निश्चित प्रजातीय वर्ग से सम्बन्धित होता है, एक विशिष्ट धर्म को अपनाता है तथा विभिन्न विधि-विधानों का पालन करता है।

2. उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में रहने वाली जनजातियाँ—खासी, सिंगफो, खामती, गारो, नागा और कूकी हैं, छोटा नागपुर क्षेत्र में रहने वाली प्रमुख जनजातियाँ—संथाल, कोल, मुण्डा और खोण्ड हैं।

3. बिरसा मुण्डा बिहार (झारखण्ड) में छोटा नागपुर पठार क्षेत्र में रहने वाली मुण्डा जनजाति के एक नेता थे। उनका जन्म 1875 ई० में हुआ था। सन् 1895 ई० में उसने एक नए धर्म का प्रचार किया, जिससे कई शिष्य उसकी ओर आकर्षित हुए।

4. संथाल सिंहभूम, हजारीबाग, भागलपुर, मुँगेर, बीरभूम, बाँकुड़ा तथा मयूरभंज में रहते हैं। उनका मुख्य व्यवसाय वन उत्पादों का संग्रह और निर्वाह खेती है।

(च) 1. 19वीं शताब्दी में जनजातीय अर्थव्यवस्थाओं तथा समाजों में अनेक परिवर्तन हुए। वे मुख्य रूप से शिकार करके, मछली पकड़कर और भोजन इकट्ठा करके अपना गुजारा करते थे। बाद में, उन्होंने झूम खेती को अपनाया। उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश राजस्व प्रशासन ने पाया कि कई आदिवासी क्षेत्रों में भूस्वामित्व का संचार माध्यम अभी भी बरकरार है। हालांकि यह प्रथा लम्बे समय तक नहीं चली, जब भू-अभिलेख विभाग निहित स्वार्थों के दबाव के आगे झुक गया और धीरे-धीरे भूमि गैर-जनजातीय किसानों को हस्तांतरित कर दी गई। जनजातीय लोग अपनी भूमि से वंचित कर दिए गए। सड़क-निर्माण, रेल पटरियाँ बिछाने, खनन आदि क्रियाओं से जनजातियों के संसाधनों का विनाश हुआ था तथा उनके जीवन में गरीबी और कष्ट आ गए। इससे उनके समाज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। छोटा नागपुर क्षेत्र में इस तरह के विकास कार्यों से जनजातीय अर्थव्यवस्था में अनेक संरचनात्मक परिवर्तन हुए—

(i) जनजातीय अपनी भूमि से अलग कर दिए गए, लेकिन उनका पुनर्वास संतोषजनक रूप से नहीं किया जा सका।

(ii) गैर-जनजातीय लोगों के प्रवेश से जनजातीय बस्तियों में उल्लेखनीय जनांकिकीय परिवर्तन हुए।

(iii) जनजातीय लोगों को उनकी पारंपरिक भूमि से बेदखल करने से व्यावसायिक परिवर्तन हुए। उनमें से कई लोग बागानों, खानों और उद्योग में सामान्य श्रमिक बन गए।

2. भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में सात राज्य अवस्थित हैं, जहाँ जनजातीय संख्या पर्याप्त प्रभावी है। अंग्रेजों द्वारा उनके निरन्तर उत्पीड़न के परिणामस्वरूप, कई आदिवासी समुदायों ने ब्रिटिश शासकों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। खासियों ने अपने क्षेत्र से गुजरने वाली सड़क निर्माण के लिए अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया, जो नए कब्जे वाले बर्मी क्षेत्रों को सिलहट के साथ जोड़ती है। उन्होंने नौंगला के तिरुत सिंह के नेतृत्व में विद्रोह किया। उन्होंने यूरोपीय बस्तियाँ जला डालीं तथा सड़क-मार्ग

के निर्माण में लगे अपराधियों को छुड़ा दिया। अन्ततः तिरुत सिंह ने जनवरी 1833 में समर्पण कर दिया। सिंगफो नामक एक अन्य पर्वतीय जनजाति ने 1830 ई० में विद्रोह किया। उन्होंने अन्य पहाड़ी जनजातियों; जैसे—खामती, गारो, नागा आदि को ब्रिटिश लोगों के विरुद्ध उठने का आह्वान किया। उन्होंने असम (अब असोम) में स्थित ब्रिटिश सेनाओं पर आक्रमण किया तथा अनेक लोगों को मार गिराया। सन् 1839 ई० में उन्होंने पुनः विद्रोह किया और दीमापुर पुलिस चौकी के प्रभारी को मार डाला। कूकी जनजाति ने 1826 ई०, 1844 ई० एवं 1849 ई० में विद्रोह किए। उन्होंने ब्रिटिश क्षेत्रों पर आक्रमण करके ब्रिटिश सेना से मुकाबला किया। अन्ततः 1850 ई० में वे दबा दिए गए।

3. वर्ष 1855-56 का सन्थाल विद्रोह छोटा नागपुर प्रदेश में विभिन्न जनजातियों में फैले आर्थिक असन्तोष से उत्पन्न विद्रोहों के क्रम की परिणति था। लगभग दस हजार सन्थाल लोगों ने सिद्धू तथा कान्हू नामक दो भाइयों के नेतृत्व में अपनी भूमि को विदेशी शक्तियों से मुक्त कराकर अपनी सरकार स्थापित करने का बीड़ा उठाया। यूरोपीय बागान मालिकों, अंग्रेज अधिकारियों, रेलवे के इन्जीनियरों, जमींदारों तथा महाजनों पर आक्रमण किए। ये विद्रोह फरवरी, 1856 ई० तक जारी रहे। अन्ततः सरकार को उनकी माँगों के आगे झुकना पड़ा तथा 'बंगाल काश्तकारी अधिनियम' पारित करना पड़ा। सन्थाल क्षेत्र को एक अलग अस्तित्व के रूप में पुनर्गठित किया गया, जिसे 'सन्थाल परगना' नाम दिया गया।
4. वर्ष 1857 के विद्रोह के बाद भी जनजातीय विद्रोह जारी रहे। एक ऐसे ही विद्रोह का प्रयास बिरसा मुण्डा ने किया था। सन् 1895 ई० में उसने एक नए धर्म का प्रचार किया और अनेक शिष्यों को आकर्षित किया। वे बिरसा मुण्डा को भगवान की प्रतिमूर्ति समझते थे, जिसके पास अलौकिक शक्तियाँ थीं। वह अंग्रेजों द्वारा 24 अगस्त, 1895 में पकड़ा गया, लेकिन जनजातियों के कठोर प्रतिरोध के कारण जनवरी, 1898 में उसको छोड़ना पड़ा। अपनी रिहाई के तुरन्त बाद, बिरसा ने जमींदारों और ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी गतिविधियाँ जारी रखीं। भीषण अकाल तथा महामारियों का सामना करते हुए आदिवासियों ने उन पर थोपे गए गैर-जनजातीय कृषकों का विरोध करते रहे, जिन्होंने उन्हें उनकी भूमि से बेदखल कर दिया था। अतएव बिरसा मुण्डा ने एक सैन्य-शक्ति का गठन कर उन्हें युद्ध-कला में प्रशिक्षित करना प्रारम्भ कर दिया। उसके प्रशिक्षित अनुयायियों ने मिशन आवासों, ब्रिटिश बस्तियों, पुलिस स्टेशनों तथा नए जमींदारों के घरों पर आक्रमण किए। मुठभेड़ की गतिविधियों में कुछ विद्रोहियों को बन्दी बना लिया गया, जबकि अन्य कई मारे गए। बिरसा मुण्डा को भी गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में डाल दिया गया, जहाँ जून 1900 में उनकी मृत्यु हो गई।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें। ❑

6. महान विद्रोह

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) जनरल कैम्पबेल 2. (d) मेरठ से 3. (d) एनफील्ड प्रिचेट राइफल
4. (a) सन् 1862 ई० में

(ख) 1. अगस्त 1858 2. अहमदुल्लाह 3. नाना साहब
4. भारतीय इतिहासकारों

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗)

(घ) 1. (ii) 2. (i) 3. (iv) 4. (iii) 5. (v)

(ङ) 1. सन् 1857 के विद्रोह के प्रमुख केन्द्र बैरकपुर, मेरठ, दिल्ली, बरेली, लखनऊ, कानपुर, आगरा, बनारस, झाँसी तथा राजस्थान एवं बिहार के अनेक स्थान थे।

2. सेना में नई एनफील्ड प्रिचेट राइफल लाई गई, जिसने 1857 के विद्रोह को भड़का दिया। इन राइफल्स के कारतूसों पर जानवरों की चर्बी (गाय और सुअर) लगाई जाती थी। इन कारतूसों का प्रयोग करना हिंदू और मुसलमान दोनों ही सैनिकों के लिए पाप था; इसलिए भारतीय सैनिकों ने इन राइफलों का प्रयोग करने से मना कर दिया और अंग्रेज अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

3. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने 1857 के विद्रोह में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों के साथ बहुत बहादुरी से युद्ध किया और ग्वालियर में वीरतापूर्वक लड़ते हुए उनकी मृत्यु हो गई।

4. 1857 के विद्रोह के दौरान, अधिकांश अवध और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान स्थानीय जमींदारों द्वारा किए गए उत्पीड़न को भुलाकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ उनके साथ मिल गए। उन्होंने वीर भूमिका निभाई, महान सैन्य कौशल, शक्ति का प्रदर्शन किया और सफलता प्राप्त की।

(च) 1. विजय और विलय की नीतियों ने न केवल भारतीय शासक वर्ग को बल्कि सामान्य रूप से भारतीय भावनाओं को भी प्रभावित किया। सफलता के बाद ऐसी नीतियाँ बनीं, जो औपनिवेशिक सरकार के हितों की रक्षा करती थीं। इसने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब (मृतक पेशवा के दत्तक पुत्र), अवध के नवाब, मुगल सम्राट बहादुर शाह द्वितीय और राजपूत नेता कुँवर सिंह आदि भारतीय शासकों को क्रोधित कर दिया।

2. विद्रोह की प्रकृति पर बहुत बहस हुई है। वास्तव में, इसके विस्तार तथा सहभागिता की प्रकृति की दृष्टि से इस विद्रोह को भारत की स्वतन्त्रता का प्रथम संघर्ष माना जाता है। तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासकों ने इस विद्रोह को 'सिपाही विद्रोह' की संज्ञा दी। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि यह विद्रोह एक संगठित आन्दोलन था। इसका एक राष्ट्रीय दर्शन था तथा यह विद्रोह उन दिनों के सन्दर्भ में

एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता था। सैद्धान्तिक रूप से यह विद्रोह विदेशियों के विरुद्ध किया गया था तथा स्वतन्त्रता के लिए इच्छा का प्रतिनिधित्व करता था।

3. यद्यपि क्रान्तिकारियों ने वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी, फिर भी उनके पास एक एकीकृत कमान का अभाव था तथा वे एक संयुक्त मोर्चे को संगठित करने में असमर्थ थे। भारतीय सैनिक बहादुरी से लड़े, लेकिन ''बिना कुशल संगठन तथा उन्नत हथियारों के''। विद्रोह के फैलने से पहले कोई पूर्व-योजना नहीं थी। इसलिए क्रान्तिकारियों को पराजित करना ब्रिटिश सेना और कुशल जनरलों के लिए काफी आसान था। इस प्रकार विद्रोह जल्द ही समाप्त हो गया।
4. विद्रोह के तात्कालिक और दीर्घकालिक दोनों परिणाम थे। विद्रोह के तात्काल परिणाम के रूप में, भारत पर शासन करने की शक्ति 1858 में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी से ब्रिटिश ताज को स्थानान्तरित कर दी गई। रानी की उद्घोषणा में नए शासन की घोषणा की गई थी। इसने ब्रिटिश सरकार की ओर से क्षेत्रों का विस्तार करने और भारतीय राजकुमारों के अधिकार, गौरव और सम्मान को कोई ठेस न पहुँचाने की इच्छा व्यक्त की। इसने सामान्य रूप से भारत के लोगों की मदद करने की इच्छा की भी घोषणा की। लेकिन ये आश्वासन मात्र वादे बनकर रह गए। विदेशी सरकार और भारतीयों के बीच वास्तविक खाई को कभी पाटा नहीं जा सका। इस प्रकार राष्ट्रीय जागरण का आरम्भ हुआ।
5. राष्ट्रवादी इतिहासकार 1857 के विद्रोह को स्वतन्त्रता की लड़ाई कहते हैं, जबकि आधुनिक इतिहासकार इससे असहमत हैं। उनका तर्क है कि यह न तो पहली लड़ाई थी और न ही यह स्वतन्त्रता के लिए पहला संघर्ष था। यह पहला ऐसा विद्रोह नहीं था, क्योंकि इससे पहले स्थानीय स्तर पर अनेक जनजातीय और किसान विद्रोह हुए थे। सन्थाल विद्रोह सिपाही विद्रोह से दो साल पहले हुआ था। केरल में मालाबार के मोपलाओं ने 1793 ई० से 1805 ई० तक अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह के सिर्फ दो उदाहरण हैं। इसे युद्ध कहना भी भ्रामक है। वास्तव में, इतिहास घटनाओं को स्थानीय लड़ाइयों की एक शृंखला के रूप में दर्ज करता है, जिसमें छावनियों में फैले विद्रोहियों के बीच बहुत कम या कोई समन्वय नहीं था। इसके अतिरिक्त, विद्रोह बंगाल सेना तक ही सीमित था, जबकि बंबई और मद्रास की सेनाएँ काफी हद तक अप्रभावित रहीं। हालांकि, सबसे अनुचित पहलू यह है कि विद्रोह स्वतन्त्रता के लिए था। वास्तव में, विद्रोह में शामिल होने वाले भारतीय प्रमुखों ने मुख्य रूप से व्यक्तिगत शिकायतों पर ऐसा किया था। कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व करने वाले नाना साहब इस बात से व्यथित थे कि अंग्रेजों ने उनकी पेंशन काट दी थी। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई इस बात से व्यथित थी कि उसके दत्तक पुत्र को झाँसी के शासक (ब्रिटिश आधिपत्य के अनुसार) के रूप में मान्यता दी जाए। इसी तरह लखनऊ की बेगम हजरत महल ने अपने युवा बेटे बिरजिस कादिर के हितों की रक्षा के लिए विद्रोहियों को समर्थन दिया, कुँवर सिंह, जिन्होंने आरा में

विद्रोह का नेतृत्व किया, अपने जमींदारी अधिकारों की रक्षा करने की इच्छा से प्रेरित थे। वास्तव में, हितों की इस विविधता ने सुनिश्चित किया कि विद्रोह के नेताओं के बीच उद्देश्य की कोई एकता नहीं थी। यह विद्रोह की असफलता का एक प्रमुख कारण था, जबकि भारतीय नायकों के व्यापक रूप से अलग-अलग हित थे, ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने एक ऐसे देश में आत्म-संरक्षण के एकमात्र उद्देश्य के साथ लड़ाई लड़ी जहाँ उनकी संख्या बहुत कम थी। कमान की एकता के बिना भारतीय तत्त्वों के सेना में शामिल होने की बहुत कम संभावना थी। 1857 का विद्रोह अप्रभावित सैनिकों द्वारा शुरू किया गया और फिर स्थानीय शासकों द्वारा उठाया गया था। हालांकि किसी भी स्तर पर यह सामूहिक विद्रोह नहीं था। विद्रोह को अगली शताब्दी की घटनाओं को आकार देने वाली अनेक घटनाओं में से एक के रूप में याद करना अधिक उपयुक्त होगा।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

7. शिक्षा एवं ब्रिटिश शासन

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) 1781 में 2. (d) 1802 में 3. (c) जोनाथन डंकन द्वारा
4. (b) सर सैयद अहमद खान ने 5. (b) बड़ौदा में

(ख) 1. 1857 2. लॉर्ड रिपन 3. टोल, मदरसे
4. महाराजा सयाजी राव तृतीय 5. चार्टर एक्ट 1813 ई०

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. (i) 2. (iii) 3. (ii) 4. (iv)

(ङ) 1. लॉर्ड मैकॉले को आधुनिक भारतीय शिक्षा का निर्माता कहा जाता है।
2. सन् 1792 ई० में जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की थी।
3. प्रशासकों तथा प्रबुद्ध भारतीयों के दो वर्ग थे। एक वर्ग जिसे 'प्राच्यवादी' कहा जाता है, ने प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से परम्परागत शिक्षा देने का समर्थन किया, जबकि दूसरा वर्ग जिसे 'आंग्लवादी' कहा जाता है, ने अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य शिक्षा देने की वकालत की।
4. सर सैयद अहमद खान ने सन् 1875 ई० में अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की।

(च) 1. पूर्व-ब्रिटिश काल में उच्च शिक्षा लगभग अनुपस्थित थी। यद्यपि परम्परागत प्रारम्भिक शिक्षा व्यापक रूप से उपलब्ध थी, किन्तु यह समाज में परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त नहीं थी। हिन्दुओं को प्रारम्भिक शिक्षा पाठशालाओं में दी जाती थी तथा

मुसलमानों को मकतबों में। उच्च शिक्षा समाज के उच्चतम वर्ग तक सीमित थी। हिन्दुओं के लिए 'टोल' तथा मुसलमानों के लिए 'मदरसे' क्रमश: संस्कृत तथा फारसी भाषाओं में उच्च शिक्षा प्रदान करते थे। ये संस्थाएँ तर्क, दर्शन, व्याकरण, भाषा, साहित्य, कानून, खगोल, औषधि तथा गणित जैसे विषयों की शिक्षा देती थीं। भारतीयों ने नवाचारों तथा वैज्ञानिक अन्वेषण को प्रोत्साहन नहीं दिया।

2. शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजों की दिलचस्पी उन्नीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में उत्पन्न हुई। सरकार ने यह अनुभव किया कि शिक्षित भारतीयों को रोजगार देना बेहतर होगा, जिससे प्रशासन के खर्चों से भी भारी कटौती होगी। इसके अतिरिक्त, ऐसे शिक्षित भारतीय सरकार के प्रति वफादार होंगे और ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं को आसानी से स्वीकार कर लेंगें।
3. सन् 1854 ई० में, राज्य सचिव चार्ल्स वुड ने एक आधिकारिक रिपोर्ट भेजी, जिसने भारत की शिक्षा–नीति में और परिवर्तन किए। इस रिपोर्ट को भारत में अंग्रेजी शिक्षा का 'मैग्ना कार्टा' कहा जाता है। इस योजना के अन्तर्गत स्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों की एक शृंखला खोली जानी थी। स्कूलों को प्राइमरी, मिडिल तथा सेकण्डरी स्तरों पर श्रेणीबद्ध किया गया, जिसमें शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी रखा गया। शिक्षकों को प्रशिक्षित करने वाले विद्यालय भी खोले जाने थे। सन् 1857 ई० में मद्रास (अब चेन्नई), बम्बई (अब मुंबई) और कलकत्ता (अब कोलकाता) विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। सन् 1887 ई० तक इलाहाबाद तथा लाहौर विश्वविद्यालय भी स्थापित किए गए। शिक्षा विभाग की स्थापना की गई, किन्तु तकनीकी शिक्षा उपेक्षित ही रही। रूड़की में केवल एक इंजीनियरिंग कॉलेज तथा प्रेसीडेन्सी नगरों में तीन मेडिकल कॉलेज थे।
4. सर सैयद अहमद खान अपने समुदाय की दयनीय स्थिति से बहुत व्यथित थे। उन्होंने दृढ़ता से अंग्रेजी भाषा और साहित्य सीखने की आवश्यकता महसूस की। 1830 के दशक में सरकारी नौकरी पाने के लिए अंग्रेजी का ज्ञान अनिवार्य करने के ब्रिटिश सरकार के फैसले ने मुस्लिम नेताओं को अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी विज्ञान में दक्षता हासिल करने के लिए मजबूर किया। सर सैयद अहमद खान का उद्देश्य अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को इस्लामी मूल्यों के साथ जोड़ना था। हिदायतुल्ला खान द्वारा 1875 में अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो–ओरिएण्टल कॉलेज की स्थापना के पीछे उनका ही हाथ था। यह कॉलेज पहले कलकत्ता विश्वविद्यालय और बाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संबद्ध था। इसने पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू किया, लड़कियों के लिए अनेक स्कूलों की स्थापना की और पाठ्यक्रम में अधिक विषयों को जोड़ा। अन्तत: 1920 में यह विश्वविद्यालय अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम से विकसित हुआ।
5. उच्च शिक्षा की अनुपस्थिति के कारण भारतीय समाज को आंशिक रूप से ठहराव का सामना करना पड़ा। हालांकि पारम्परिक प्रारम्भिक शिक्षा व्यापक थी, लेकिन

यह समाज में कोई भी परिवर्तन लाने के लिए अपर्याप्त थी। हिन्दुओं को पाठशालाओं में और मुसलमानों को मकतबों में प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती थी। उच्च शिक्षा समाज के ऊपरी तबके तक ही सीमित थी। हिन्दुओं के लिए टोल तथा मुसलमानों के लिए मदरसे थे। जो क्रमश: संस्कृत और फारसी में उच्च शिक्षा प्रदान करते थे। इन संस्थाओं में तर्क, दर्शन, व्याकरण, भाषा, साहित्य, कानून, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और गणित जैसे विषय पढ़ाए जाते थे। भारतीयों द्वारा नवाचार और वैज्ञानिक अन्वेषण को प्रोत्साहित नहीं किया गया था। इन्हीं कारणों से भारतीय सुधारकों ने उच्च शिक्षा के लिए विद्यालय तथा संस्थान स्थापित किए।

6. उस समय जाति व्यवस्था के कारण प्राचीन भारत में शिक्षा सभी के लिए नहीं थी। निचली जाति के लोग उन सामाजिक परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम नहीं थे। भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान भी शिक्षा सभी के लिए नहीं थी, क्योंकि केवल शहरी क्षेत्रों और कुलीन वर्ग के लोग ही शिक्षा का खर्च उठा सकते थे। यहाँ यह जाति के बजाय व्यक्ति की आर्थिक स्थितियों और स्थान से प्रेरित था।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें।

❑

8. महिलाएँ एवं सुधार

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) गोपाल हरि देशमुख को 2. (c) लॉर्ड विलियम बेण्टिक ने
3. (a) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

(ख) 1. लॉर्ड विलियम बैंण्टिक 2. 1828 ई० 3. 1856 ई०
4. गोपाल हरि देशमुख

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗)

(घ) 1. (v) 2. (iv) 3. (ii) 4. (i) 5. (iii)

(ङ) 1. राजा राम मोहन राय एक महान विद्वान, धर्म-सुधारक और समाज सुधारक थे। उन्होंने सती प्रथा की घोर निन्दा की।

2. उन्नीसवीं शताब्दी में स्त्रियों को निम्नलिखित प्रमुख सामाजिक बुराइयों का सामना करना पड़ा—
(i) शिक्षा की उपेक्षा (ii) बाल-विवाह (iii) सती प्रथा (iv) विधवा-विवाह निषेध

3. स्वामी दयानन्द आर्य समाज के संस्थापक थे। आर्य समाज ने महिलाओं के उत्थान और मुक्ति के लिए काम किया। इसने महिला शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह का दृढ़तापूर्वक प्रचार किया।

4. सबसे प्रमुख मुस्लिम सुधारक सर सैयद अहमद खान थे। एक समाज सुधारक के रूप में उन्होंने महिलाओं की पिछड़ी स्थिति पर ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने पर्दा प्रथा हटाने और महिलाओं की शिक्षा के प्रसार की वकालत की। उन्होंने बहुविवाह और सहज तलाक की निन्दा की।

(च) 1. पश्चिम में महिलाओं की स्थिति औद्योगिक क्रान्ति, मानवतावादी आन्दोलनों और समानता के लिए महिलाओं के आन्दोलनों से उत्पन्न स्थितियों से बदल गई। हालांकि भारत में यह परिवर्तन उन सुधारकों द्वारा लाया गया, जिन्होंने इस समस्या को एक मानवीय समस्या के रूप में देखना शुरू किया। अमानवीय प्रथाओं जैसे; सती, बाल विवाह, जबरन विधवापन (विधवा के पुर्नविवाह से इनकार), कन्या भ्रूण हत्या, आदि ने मानवीय आन्दोलन की माँग की। द्वारकानाथ टैगोर, राम मोहन राय आदि जैसे प्रारम्भिक सुधारकों ने देशवासियों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया कि सती धर्म के लिए बाध्य नहीं है। इसी तरह ईश्वर चन्द्र विद्यासागर सरकार द्वारा विधवा विवाह को वैधानिक बनाने में सफल हुए। उनका यह भी विश्वास था कि स्त्रियों के लिए सामाजिक सुधारों के साथ शैक्षिक अवसर भी विकसित होने चाहिए। युवा बंगाल आन्दोलन में महिलाओं के हक और अधिकारों का समर्थन किया और समाज में विशेषकर महिलाओं को, महिला शिक्षा और सभी के लिए समानता पर बल दिया। रामकृष्ण मिशन ने मानवतावाद, महिलाओं की समानता तथा उनकी शिक्षा पर बल दिया।

2. महिला उत्थान में कुछ महिला सुधारकों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी—

(i) सावित्री बाई—आधुनिक महाराष्ट्र की पहली महिला शिक्षिका थीं। उनका विवाह नौ वर्ष की आयु में ज्योतिबा फुले से हुआ था और उनकी सहायता से पढ़ाई की। सन् 1848 ई० में उन्होंने पुणे में पाँच स्कूल खोले तथा 1851 ई० में दलित वर्गों की लड़कियों के लिए एक विशेष स्कूल खोला। उन्होंने विधवाओं के लिए आश्रम भी खोले।

(ii) पण्डिता रमाबाई—भारत में महिलाओं के मुक्ति आन्दोलन की आधारशिला रखी। उन्होंने इंग्लैण्ड तथा संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा की, जिसका उद्देश्य पुणे में स्थित विधवा आश्रम 'शारदा सदन' के लिए धन इकट्ठा करना था।

(iii) रूकैया हुसैन—एक बंगाली महिला थीं, जिन्होंने बिहार में अपने पति की सहायता से मुसलमान लड़कियों के लिए एक स्कूल खोला। उन्होंने विशेषकर पर्दा प्रथा के बारे में अनेक निबन्ध लिखें।

(iv) सरोजनी नायडू—इन्होंने अखिल भारतीय महिला कॉन्फ्रेन्स की स्थापना में सहायता की और 1917 ई० में महिलाओं के लिए पूर्ण मताधिकार की माँग की।

3. बंगाल के सामाजिक और धार्मिक सुधारकों जैसे राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर और हेनरी विवियन डिरोजियो ने महिलाओं के उत्थान में बहुत योगदान

दिया। राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा की घोर निन्दा की। उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध एक जनमत बनाया और फिर गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेण्टिक से सती प्रथा को खत्म करने का आग्रह किया और इसे कानून द्वारा दण्डनीय बना दिया। उन्होंने महिलाओं के अलगाव, बहुविवाह, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध भी आवाज उठाई और महिलाओं की शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह की वकालत की।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने स्कूल निरीक्षक के रूप में लड़कियों के लिए 35 स्कूल स्थापित किए। उनका सबसे बड़ा योगदान विधवाओं के उत्थान और लड़कियों की शिक्षा के लिए था। उनके इन प्रयासों की सराहना गवर्नर जनरल डलहौजी ने भी की। विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 इन्हीं के प्रयासों से लाया गया था।

हेनरी विवियन डिरोजियो ने छात्रों के एक संघ 'युवा बंगाल' का गठन किया, जिसने 'युवा बंगाल आन्दोलन' चलाया। उन्होंने महिलाओं की मुक्ति, सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन और महिलाओं के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने की वकालत की।

4. महाराष्ट्र के सामाजिक और धार्मिक सुधारकों ने महिलाओं के उत्थान के लिए बहुत योगदान दिया। महिलाओं के उत्थान के लिए पहला आन्दोलन 1840 ई० के दशक में गोपाल हरी देशमुख द्वारा चलाया गया।

ज्योतिबा राव फुले ने सत्य शोधक समाज की स्थापना की। वह एक प्रसिद्ध समाज सुधारक थे, जिन्होंने महिलाओं की समस्याओं को गंभीरता से उठाया और विधवाओं को पुनर्विवाह कराने में सहायता की।

केशव चन्द्र सेन की महाराष्ट्र यात्रा के परिणामस्वरूप 1867 ई० में मुम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना हुई। इस समाज ने कामकाजी लोगों के लिए रात्रि-पाठशालाएँ चलाईं तथा लड़कियों की शिक्षा के लिए महिला संगठन स्थापित किए।

महादेव गोविन्द रानाडे एक प्रसिद्ध समाज सुधारक थे। उन्होंने बाल-विवाह एवं पर्दा प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया तथा विधवा पुनर्विवाह की वकालत की।

5. उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान, महिलाएँ विभिन्न सामाजिक बुराइयों से पीड़ित थीं। जिसमें सबसे प्रमुख महिलाओं के प्रति समाज का उदासीन रवैया था।

महिलाएँ निम्नलिखित अक्षमताओं से पीड़ित थीं—

(i) समाज में निम्न स्थिति (ii) शिक्षा की उपेक्षा (iii) बाल विवाह (iv) सती प्रथा (v) पुनर्विवाह का निषेध (vi) पर्दा प्रथा (vii) दहेज प्रथा (viii) घरेलू हिंसा (ix) विरासत की सम्पत्ति पर अधिकार न होना। दहेज प्रथा के कारण बाल विवाह जैसी कुरीतियाँ आम थीं। लड़कियों की शादी के लिए न्यूनतम उम्र 10 वर्ष थी, जिसे 1925 ई० के प्रारम्भ में बढ़ाकर 13 वर्ष कर दी गई। उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में सती प्रथा प्रचलित थी, जबकि पुरुष एक से अधिक पत्नियाँ रख सकते थे

या विधुर होने के बाद पुनर्विवाह कर सकते थे, लेकिन विधवा महिलाओं को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि महिलाओं की स्थिति दयनीय थी।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें।

❑

9. जाति-व्यवस्था का विरोध

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) ज्योतिबा फुले 2. (b) महात्मा गाँधी 3. (b) कंदुकुरी वीरेश लिंगम 4. (c) हरिजन

(ख) 1. शूद्र 2. द्रविड़ कज़गम 3. आर्यो 4. अस्पृश्यता 5. इझावा

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (ii) 4. (i)

(ङ) 1. 'जाति' शब्द एक पदानुक्रमिक सम्बन्ध को अभिव्यक्त करता है। जाति-व्यवस्था हिन्दू समाज के संगठन का आधार है। यह शुद्धता तथा प्रदूषण के विचार पर आधारित है। जो प्रदूषण-शुद्धता पदानुक्रम (सीढ़ी) के शीर्ष पर हैं, उन्हें उच्चतम स्थान दिया जाता है तथा सबसे नीचे पायदान पर स्थित लोग निम्नतम् स्तर पर होते हैं।

2. ब्रिटिश भारत में अस्पृश्यों की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। एक विशेष जाति में जन्म लेने वाले व्यक्ति को अपना पारिवारिक पेशा अपनाने के लिए विवश किया जाता था। समाज के विभाजन ने विभिन्न जातियों में सामाजिक असमानताओं को जन्म दिया। कठोर जाति के नियम और विनियमों ने विवाह या अन्तर भोजन में अंतरजातीय की अनुमति नहीं दी। कठोर जाति नियमों ने लोगों के दृष्टिकोण को संकुचित कर दिया और समाज के विकास को रोक दिया।

3. ज्योतिबा फुले का जन्म निम्न जाति के माली परिवार में हुआ था। उन्होंने हिन्दू समाज में निम्न जातियों द्वारा भोगे जाने वाले निरादर तथा दीनता को स्वयं अनुभव किया था। सन् 1873 ई० में उन्होंने 'सत्य शोधक समाज' की स्थापना की थी, जिसने उच्च जाति के प्रभुत्व के विरोध में धर्मयुद्ध किया। इस समाज का उद्देश्य उत्पीड़ित वर्ग के लोगों को समानता का अधिकार दिलाना था। उन्होंने जाति-व्यवस्था की निन्दा की तथा अपने सत्यशोधक समाज के द्वार, बिना किसी जाति और धर्म की बाध्यता के, प्रत्येक व्यक्ति के लिए खोल दिए।

4. कन्दुकुरी वीरेश लिंगम ने जाति-व्यवस्था के विरुद्ध अभियान चलाया तथा अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने अस्पृश्यता के विरुद्ध भी अभियान चलाया।

5. डा० भीमराव अम्बेडकर का जन्म महार जाति में हुआ था, जिसे अछूत माना जाता था। वे भारतीय संविधान के निर्माता थे और दलितों के सबसे प्रसिद्ध नेता थे। उन्होंने दलित समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

(च) 1. अस्पृश्यता हिन्दू समाज के लिए अनेक प्रकार से हानिकारक सिद्ध हुई—

(i) शूद्रों को अछूत माना जाता था। वे एकांत में रहते थे और दयनीय जीवन व्यतीत करते थे। उच्च जातियों द्वारा उनका शोषण किया जाता था।

(ii) जाति व्यवस्था, निम्न भौतिक विकास, राष्ट्रीय निर्धनता, निचली जातियों की बौद्धिक प्रगति में बाधा के लिए उत्तरदायी थी।

(iii) कठोर जाति-व्यवस्था ने हिन्दू धर्म को अलोकप्रिय बना दिया था। निम्न जातियों ने धर्म परिवर्तन (मुख्य रूप से ईसाई धर्म) का सहारा लिया।

(iv) कठोर जाति-व्यवस्था ने हिन्दू समाज को विभाजित कर दिया था। सामाजिक एकता का अभाव हिन्दू समाज के लिए घातक था।

(v) जाति-व्यवस्था ही भारतीयों के संकीर्ण दृष्टिकोण के विकास के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी थी, क्योंकि इस व्यवस्था के कारण ही भारतीय विदेशियों के साथ घुल-मिल नहीं सकते थे तथा परिवर्तनकारी विचारों को नहीं अपना सकते थे।

2. अधिकांश सुधारकों ने जाति-व्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित किया, क्योंकि हिन्दू समाज में प्रचलित जाति-व्यवस्था सामाजिक बुराइयों का प्रमुख कारण थी। यह राष्ट्रीय एकता के लिए खतरनाक थी। यह निम्न भौतिक विकास, राष्ट्रीय एकता, बौद्धिक प्रगति में बाधा, समाज-सुधारों के लिए अरुचि, निजी स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध, राष्ट्रीयता के विकास में बाधा, वर्ग-संघर्ष, नैतिक पतन, उच्च जातियों के गर्व की झूठी भावना आदि के लिए उत्तरदायी थी।

3. राजनीतिक क्षेत्र में महान योगदान देने के अतिरिक्त, महात्मा गाँधी ने जाति-व्यवस्था में सुधार और दलित वर्गों के उत्थान के लिए उपयोगी योगदान दिया। उन्होंने अस्पृश्यता की निंदा की। वे गीता में निहित समानता के सिद्धान्त में आस्था रखते थे। जब ब्रिटिश सरकार ने सांप्रदायिक पुरस्कार द्वारा हरिजनों को हिन्दुओं से अलग करने की कोशिश की तब उन्होंने आमरण अनशन किया। हरिजनों के उत्थान के लिए उन्होंने 1932 ई० में हरिजन सेवक समाज की स्थापना की। सन् 1933 ई० में उन्होंने साप्ताहिक पत्र हरिजन का प्रकाशन प्रारम्भ किया तथा इसके माध्यम से हरिजन के हितों पर ध्यान दिया। 'हरिजन' का अर्थ था—ईश्वर की संतान। वे स्वयं हरिजनों के साथ उनकी बस्ती में जाकर रहने लगे। उन्होंने अस्पृश्यता के निवारण को बहुत महत्त्व दिया।

4. सन् 1924 ई० में डॉ० अम्बेडकर ने दलित वर्गों की स्थिति सुधारने और उनमें शिक्षा का विकास करने के लिए अखिल भारतीय बहीष्कृत हितकारिणी सभा की नींव रखी। उन्होंने दलित वर्गों को किसी भी अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए नि:शुल्क कानूनी सेवा प्रदान की। उन्होंने दलित वर्गों की शिक्षा पर बहुत जोर दिया।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने दलित वर्गों की शिक्षा समिति की स्थापना की तथा दलितों के शैक्षिक उत्थान के लिए अनेक स्कूल तथा कॉलेज खोले।

डॉ० अम्बेडकर ने दलित वर्गों के सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकारों के लिए कठोर संघर्ष किया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को विभिन्न सरकारी तथा अर्द्ध-सरकारी नौकरियों में दलित वर्गों के प्रवेश से सभी प्रतिबन्ध हटाने के लिए दबाव डाला। उनके प्रयत्नों से ही विधान सभाओं तथा विधान परिषदों में दलित वर्गों को अनेक स्थान (सीट) प्राप्त हो सके।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

10. उपनिवेशवाद एवं नगरीय परिवर्तन

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) सन् 1853 में 2. (d) सीरी 3. (b) रेलवे नगर
4. (b) 1931 में

(ख) 1. 1853 2. 1911 ई० 3. डलहौजी 4. पणजी 5. कलकत्ता

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (i) 2. (iii) 3. (iv) 4. (ii)

(ङ) 1. सर एडविन लुट्येन्स नई दिल्ली का शिल्पकार था।

2. दिल्ली के प्रमुख ब्रिटिश स्मारकों के नाम निम्नलिखित हैं—
वायसराय भवन (अब राष्ट्रपति भवन), इण्डिया गेट, संसद भवन, सचिवालय, कनॉट प्लेस और कनॉट सर्कस हैं।

3. लॉर्ड डलहौजी ने प्रत्येक प्रेसिडेन्सी में एक अलग सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना की।

4. सन् 1800 ई० में भारत में वाराणसी सबसे अधिक जनसंख्या वाला नगर था।

(च) 1. उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में बड़ी संख्या में नगरों के पतन का प्रमुख कारण ब्रिटिश लोगों का भारत के परम्परागत उद्योगों, विशेषकर सूती वस्त्रोद्योग के प्रति नकारात्मक रूख था, जो इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति तथा मैन्चेस्टर में वस्त्रोद्योग के विकास का परिणाम था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक इंग्लैण्ड विश्व की एक प्रमुख औद्योगिक अर्थव्यवस्था बन गया तथा भारत ब्रिटिश वस्तुओं का प्रमुख बाजार बन गया। भारत के परम्परागत नगरीय केन्द्र, जो अपने औद्योगिक उत्पादों के निर्यात पर निर्भर थे, तेजी से पतनोन्मुख हो गए।

2. सन् 1853 ई० के प्रारम्भ में भारत में रेलमार्गों के जाल के बिछने से ब्रिटिश-पूर्व काल के नगरीय केन्द्रों का पतन हुआ। रेलमार्गों का जाल बिछने के परिणामस्वरूप रेल उद्योग के कारण व्यापार मार्ग विभिन्न शाखाओं में विस्तृत होने लगे तथा प्रत्येक रेलवे स्टेशन कच्चे माल के निर्यात का केन्द्र बन गए, जिसके कारण कुछ पूर्ववर्ती व्यापार केन्द्रों का व्यापार पर एकाधिकार समाप्त हो गया। लेकिन रेलवे ने महानगरीय शहरों के विकास में भी योगदान दिया। कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और कानपुर जैसे महानगरीय शहरों में आधुनिक उद्योगों की स्थापना में सहायता की।
3. ब्रिटिश शासन के दौरान, शासक वर्ग शहरों को भारतीय जनता के साथ साझा करने आया था। सरकार ने भारत के प्रमुख शहरों में नगरपालिकाओं की स्थापना की। ये नगर निकाय मुख्य रूप से कूड़ा-करकट हटाने, प्राथमिक शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य, सड़कों के रख-रखाव और स्थानीय करों के संग्रह से सम्बन्धित थे। इसका कारण शहर के भारतीय भाग की स्थिति थी, भीड़भाड़, अत्यधिक वनस्पति, गंदे टैंक, बदबू और खराब जल निकासी। हालांकि अंग्रेज और भारतीय शहर के अलग-अलग भागों में रहते थे, इन स्थितियों ने अंग्रेजों को चिंतित कर दिया, क्योंकि उस समय उनका मानना था कि दलदली भूमि और ठहरे हुए पानी के कुण्डों से निकलने वाली जहरीली गैसें अधिकांश बीमारियों का कारण थीं। उष्ण कटिबंधीय जलवायु को अस्वस्थकर और दुर्बल करने वाला समझा जाता था। शहर में खुले स्थान बनाना शहर को स्वस्थ बनाने का एक तरीका था। इस उद्देश्य के लिए, अनेक बाजारों, घाटों, कब्रिस्तानों और चर्म शोधन कारखानों को साफ या हटा दिया गया था। तभी से 'सार्वजनिक स्वास्थ्य' की धारणा एक विचार बन गई, जिसे शहर निकासी और शहर नियोजन की परियोजनाओं में घोषित किया गया था। अंग्रेजों का मानना था कि रहने की स्थिति और बीमारी के प्रसार के बीच सीधा संबंध है। सघन रूप से निर्मित क्षेत्रों को अस्वच्छता के रूप में देखा जाता था, क्योंकि वे सीधे सूर्य के प्रकाश और हवा के संचालन को बाधित करते थे। वे तर्कसंगत आदेश, सावधानीपूर्वक निष्पादन, एक पाश्चात्य सौन्दर्यवादी आदर्शों में दृढ़ता से विश्वास करते थे। इसलिए शहरों को साफ और सुव्यवस्थित, नियोजित और सुन्दर बनाना था।
4. ब्रिटिश शासन के 150 वर्षों के दौरान, भारत के शहरी परिदृश्य में आमूल-चूल परिवर्तन हुए। बीसवीं शताब्दी के अन्त तक मुगल काल के पुराने शहर छोटे कस्बों और शहरों तक ही सिमट गए, लेकिन इसी के साथ नए शहरों का भी उदय हुआ। इस प्रकार दिल्ली, वाराणसी, अहमदाबाद, आगरा और इलाहाबाद, जिनकी आबादी लगभग दो लाख थी, जबकि प्रमुख शहर कलकत्ता (अब कोलकाता) की आबादी नौ लाख से अधिक थी। कलकत्ता, मद्रास और बंबई प्रमुख प्रशासनिक, वाणिज्यिक और औद्योगिक शहर थे। भारत में शहरीकरण पर ब्रिटिश शासन का अन्य प्रमुख प्रभाव भारत के विभिन्न भागों जैसे शिमला, नैनीताल, मसूरी, दर्जिलिंग, शिलांग, महाबलेश्वर और कोडाइकनाल आदि में हिल स्टेशनों का

विकास था। क्योंकि ठण्डी सम शीतोष्ण जलवायु से आने वाले अंग्रेजों को पहाड़ियों में भारतीय गर्मी के मौसम से बचने का मौका मिला। उन्होंने इन हिल स्टेशनों पर गर्मियाँ बिताईं।

5. आजादी के बाद, नई दिल्ली एक शहर के रूप में काफी विकसित हुई। राजपथ पर स्थित इण्डिया गेट प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए ब्रिटिश सेना के सैनिकों की याद में बनाया गया था। 1971 के भारत-पाक युद्ध के शहीदों की याद में एक और स्मारक, अमर जवान ज्योति का निर्माण किया गया।

   वायसराय भवन (राष्ट्रपति भवन के रूप में जाना जाता है) एक भव्य इमारत हैं; जिसमें 340 से अधिक कमरे हैं। इसका स्थापत्य रोम के पार्थेम तथा प्राचीन भारतीय साँची के स्तूप एवं मुगल इमारतों से प्रेरित हैं। इसके साथ ही मुगल गार्डन एक अतिरिक्त आकर्षण है। संसद भवन विजय चौक के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह एक विशाल गोलाकार स्तम्भों वाली इमारत है, जिसके तीन अर्द्ध-गोलाकार चैम्बर-लोकसभा, राज्यसभा तथा केन्द्रीय पुस्तकालय हैं। यह भारतीय लोकतंत्र का एक प्रतीक है।

   सचिवालय में नार्थ ब्लॉक तथा साउथ ब्लॉक सम्मिलित हैं। इसका डिजाइन प्रसिद्ध ब्रिटिश वास्तुविद हरबर्ट बेकर ने बनाया था। इस इमारत में मुगल तथा राजपूत शैली के स्थापत्य के तत्त्व पाए जाते हैं। इस भवन में अनेक केन्द्रीय मन्त्रालयों के मुख्यालय स्थित हैं। कनॉट प्लेस तथा कनॉट सर्कस व्यावसायिक गतिविधियों के महत्त्वपूर्ण स्थल हैं।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

11. कलाओं में परिवर्तन : चित्रकला, साहित्य एवं स्थापत्य

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) तैलीय चित्रकला की 2. (c) गीतांजलि के लिए
3. (d) प्रेमचन्द ने 4. (a) पुर्तगाली ने

(ख) 1. एडविन लुट्येन्स 2. विलियम इमर्सन 3. गेटवे ऑफ इण्डिया
4. ली कोर्बुसियर 5. फोर्ट सेण्ट जॉर्ज

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. (v) 2. (iv) 3. (i) 4. (ii) 5. (iii)

(ङ) 1. बॉम्बे (मुम्बई) में ब्रिटिशकाल के प्रमुख नागरिक स्मारकों के नाम निम्नलिखित हैं—

विक्टोरिया टर्मिनस (छत्रपति शिवाजी टर्मिनस के रूप में नाम दिया गया), प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम (छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय के रूप में नाम दिया गया) और गेटवे ऑफ इण्डिया।

2. मद्रास (चेन्नई) में ब्रिटिशकाल के प्रमुख स्मारकों के नाम निम्नलिखित हैं— फोर्ट सेण्ट जॉर्ज, सैन थोम का कैथेड्रल, उच्च न्यायालय और युद्ध स्मारक।
3. रवीन्द्रनाथ टैगोर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपनी अमर कृति गीतांजलि के लिए नोबेल पुरस्कार जीता। वे एक प्रसिद्ध कहानी-लेखक और महान कलाकार भी थे।
4. राजा रवि शर्मा तैलचित्र कला में उत्कृष्ट थे। वे सबसे प्रसिद्ध नारी पौराणिक चित्रकार थे। उन्होंने अपने चित्रों का बड़े पैमाने पर उत्पादन प्रारम्भ करने के लिए बॉम्बे के बाहरी भाग में अपनी स्वयं की ओलियोग्राफी प्रेस स्थापित की।

अबनीन्द्रनाथ टैगोर का जालोग रंगों (वॉटर कलर) के चित्रों को आकर्षक बनाया। उनके चित्रों में मुगल इतिहास, जयदेव के गीत गोविन्द, कालिदास के ऋतु संहार और मेघदूत के विषय होते थे।

5. संगीत, नृत्य तथा नाटक (थियेटर) प्रमुख क्रियात्मक कलाएँ हैं।

(च) 1. पहले भारतीय कला को नवाबों और राजकुमारों का संरक्षण प्राप्त था। ब्रिटिश शासन के दौरान, इसमें एक बड़ा बदलाव आया। इंग्लैण्ड के परिदृश्य और चित्रकारों के लिए भारत एक प्रमुख आकर्षण बन गया। तेल चित्रकला, जल रंग, उत्कीर्णन और लिथोग्राफी की कला उनके साथ आयी। ब्रिटिश चित्रकारों ने अपने चित्रों में साम्राज्यवादी शक्ति का महिमामंडन किया। राजनीतिक सत्ता में बदलाव कलात्मक संरक्षण और लघु चित्रकारों के कृमिक विस्थापन और ब्रिटिश लघु चित्रकारों के उद्‌भव में परिलक्षित हुआ। 'कम्पनी चित्रकारी' की एक नई श्रेणी विकसित हुई, जिसने औपनिवेशिक स्वामी की पृष्ठभूमि के दृश्यों, जीवन शैली आदि की सटीक नकल के लिए ब्रिटिश माँगों को पूरा किया। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में, छपाई और चित्रों की यान्त्रिक प्रतिकृति प्रारम्भ हुई। जो विषय, पंचांगों और शास्त्रों से लेकर रोमांटिक और साहसिक कथाओं तक था। सन् 1880 तक नई प्रिन्ट तकनीकों, जैसे—इथियोग्राफी, ऑलोग्राफी और छायांकन एनाटामी कला के नए तरीके प्रारम्भ हो गए।

2. संगीत, नृत्य तथा नाटक (थियेटर) प्रमुख क्रियात्मक कलाएँ हैं। अंग्रेजों के आने से पहले इन क्षेत्रों में भारत की एक समृद्ध विरासत थी। हमारे शास्त्रीय संगीत की दोनों शैली-हिन्दुस्तानी और कर्नाटक, एक समृद्ध विरासत प्रस्तुत करती है। संगीत एवं नृत्य भी भारत में पुनर्जागरण से प्रभावित हुए। कलकत्ता (अब कोलकाता) तथा बम्बई (अब मुम्बई) के ज्ञानोत्तेजक मन्दिर ने संगीत के क्षेत्र में नवजागरण उत्पन्न किया। जहाँ शास्त्रीय संगीतज्ञ प्राचीन भारतीय संगीत का महिमामण्डन करते हैं,

वहीं चित्रपट संगीत भी श्रोताओं के हृदय तथा मन को बाँध देते हैं। इण्डी-पॉप लोकप्रिय संगीत का नवीनतम जोड़ है। इसे भारतीय संगीतकारों द्वारा एक पश्चिमी अभिविन्यास के साथ बनाया गया था। मणिपुरी, कथकली, कथक, भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, ओडिसी आदि विभिन्न शास्त्रीय नृत्य के रूप हैं। छाऊ जैसे लोक नृत्य को भी मुख्य धारा में लाया गया और नृत्य कला के लिए उपयोग किया गया। भारत के ख्याति प्राप्त नृत्य-निर्देशक उदय शंकर ने 1920 के दशक में इंग्लैण्ड में दो नृत्य नाटिकाएँ प्रस्तुत कीं। सन् 1932-60 ई० के दौरान उन्होंने नियमित रूप से अमेरिका में प्रदर्शन किए। सन् 1920 के दशक तक रवीन्द्रनाथ टैगोर भी दक्षिण-पूर्वी एशिया की नृत्य-परम्पराओं में रुचि लेने लगे। रवीन्द्र नृत्य या टैगोर स्कूल ऑफ डान्स प्रसिद्ध हो गया। सन् 1980 ई० के दशक में मृणालिनी साराभाई एवं उनकी पुत्री मल्लिका जैसे प्रमुख शास्त्रीय नर्तक और कई अन्य लोकप्रिय हुए। समकालीन नृत्य के विषय पौराणिक से हटकर आधुनिक हो गए।

3. ब्रिटिश बस्तियों का स्वरूप भी सैन्य प्रकार का था, जैसा कि कलकत्ता (अब कोलकाता) (1757 ई०) के फोर्ट विलियम तथा मद्रास (अब चेन्नई) (1783 ई०) के फोर्ट सेण्ट जॉर्ज सितारा-आकार के बहुभुजीय विस्तार से स्पष्ट होता है। बॉम्बे (अब मुम्बई) (1672-1718) के सेंट थॉमस के कैथेड्रल चर्च अंग्रेजी स्थापत्य की नव-शास्त्रीय कला है। नव-गॉथिक स्थापत्य उन्नीसवीं शताब्दी में लोकप्रिय हुआ, जैसा कि कलकत्ता (अब कोलकाता) (1839-80 ई०) में सेण्ट पॉल कैथेड्रल और इलाहाबाद में ऑल सेन्ट्स कैथेड्रल में देखा जा सकता है। शैलियों का समान मिश्रण ब्रिटिश नागरिक स्मारकों की विशेषता है। कलकत्ता (अब कोलकाता) (1799-1802 ई०) का राजभवन नवशास्त्रीय शैली की विशाल कृति है। अन्य नव-शास्त्रीय परियोजनाओं में मद्रास (अब चेन्नई) (1802 ई०) का राजीरोजी हॉल, बॉम्बे (अब मुम्बई) (1833 ई०) का टाउन हॉल तथा कलकत्ता (अब कोलकाता) (1864 ई०) विश्वविद्यालय का सीनेट हॉल सम्मिलित हैं। इस युग में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन इण्डो-सारासेनिक शैली के रूप में दृष्टिगोचर होता है, जिसमें नव-गॉथिक शैली के तत्त्वों का मुगल स्थापत्य के शिखरयुक्त मेहराबों, छतरी और बल्बनुमा गुम्बदों के साथ कल्पनापूर्ण मिश्रण किया गया है। इण्डो-सारासेनिक के कुछ महत्त्वपूर्ण स्मारक हैं—तिरुवनन्तपुरम (केरल) (1872) का आर्ट म्यूजियम और चेन्नई (1874-79) में मद्रास विश्वविद्यालय का सीनेट हाउस है। राष्ट्रपति भवन (पहले दिल्ली में वायसराय हाउस, 1912-1929) और उसके पास का परिपत्र 'संसद भवन' एडविन लुटेयन्स द्वारा निर्मित नव-शास्त्रीय शैली की स्थापत्य कला के स्मारक हैं।

4. **कथा-साहित्य**—बंगाली भाषा में सर्वाधिक साहित्य रचा गया। बंकिम चन्द्र चटर्जी (1838-94 ई०) ने प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्द मठ' लिखा, जिसमें राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' निहित है। मुंशी प्रेमचन्द ने हिन्दी में अनेक उपन्यास लिखे, जिनमें 'गोदान' तथा 'रंगभूमि' उल्लेखनीय हैं। विभूति भूषण का पाथरे, पांचाली, तारा शंकर का गणदेवता तथा मणिको पद्य नादिर माझी प्रसिद्ध बंगाली उपन्यास हैं।

प्रसिद्ध उपन्यासकारों में फणीश्वर नाथ रेणु (मैला आँचल हिन्दी में) गोपीनाथ (उडिया में प्रोजा) पन्ना लाल पटेल (गुजराती में माकेलाजीत), शिवराम कारन्थ (कन्नड़ में चोमनडूडी), भाईचन्द्र नामदे (मराठी में कोसला), शरत् चन्द्र चट्टोपाध्याय (बंगाली में), जैनेन्द्र कुमार एवं यशपाल (हिन्दी में) शामिल हैं।

5. ब्रिटिश बस्तियाँ सैन्य प्रकार के स्वरूप की थीं और ब्रिटिश साम्राज्य की महिमा को दर्शाती थीं, जैसे कि कलकत्ता (अब कोलकाता) (1757) में फोर्ट विलियम और मद्रास (अब चेन्नई) (1783) में फोर्ट सेंट जॉर्ज के सितारा-आकार के बहुभुज विस्तार से आंका जा सकता है। बॉम्बे (अब मुम्बई) (1672-1718) में सेंट थॉमस के कैथेड्रल चर्च के रूप में अंग्रेजी चर्च वास्तुकला नव-शास्त्रीय है। नव-गॉथिक वास्तुकला उन्नीसवीं शताब्दी में लोकप्रिय हुई, जैसा कि कलकत्ता (1839-80) में सेंट पॉल कैथेड्रल और इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में ऑल सेंट्स कैथेड्रल में देखा जा सकता है। ब्रिटिश नागरिक स्मारकों की खासियत में इन्हीं शैलियों का मिश्रण मिलता है। युग की सबसे बड़ी नव-शास्त्रीय परियोजनाओं में से एक कलकत्ता (1779-1802) राजभवन हैं, जो 1911 तक ब्रिटिश गवर्नर व वायसराय का कार्यालय था। अन्य नव-शास्त्रीय परियोजनाओं में मद्रास का राजीरोजी हॉल (1802), बॉम्बे का टाउन हॉल (1833) और कलकत्ता विश्वविद्यालय का सीनेट हॉल (1864) शामिल हैं। इसी प्रकार की विशेषताएँ युग की अनेक रियासतों की विशेषता है, जैसे कि पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में आईना महल (1829-37) तथा हैदराबाद का फलकनुमा महल प्रमुख हैं। नव गॉथिक शैली का उपयोग ब्रिटिश नागरिक स्मारकों के लिए भी हुआ। उदाहरण के लिए, दीक्षांत समारोह हॉल तथा बॉम्बे विश्वविद्यालय का राजा बाई टॉवर (1869-74), उच्च न्यायालय (1869), विक्टोरिया टर्मिनस (1888) तथा रेलवे कार्यालय (1894) आदि। नव-गॉथिक इमारतें वाराणसी में क्वीन्स कॉलेज (1847 ई०) तथा कलकत्ता के उच्च न्यायालय (1864-72 ई०) में भी पाई जाती हैं।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

12. राष्ट्रीय आन्दोलन : प्रथम चरण (1885-1919 ई०)

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) बाल गंगाधर तिलक 2. (b) लॉर्ड कर्जन 3. (c) लाला हरदयाल
4. (b) मैडम कामान ने

(ख) 1. 1885 ई० 2. गदर पार्टी
3. ऐनी बेसेण्ट, बाल गंगाधर तिलक 4. वी०डी० सावरकर
5. अभिनव भारत

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. (v) 2. (iv) 3. (ii) 4. (iii) 5. (i)

(ङ) 1. लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्रपाल, लाल-बाल-पाल से जाने जाते थे, जो चरमपंथी के प्रमुख नेता थे।

2. विदेशों में कुछ प्रमुख भारतीय क्रान्तिकारियों के नाम निम्नलिखित हैं— श्यामजी कृष्ण वर्मा, वी०डी० सावरकर, वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय, तिरूमल आचार्य, मैडम भीकाजी कामा, भाई परमानन्द, मदनलाल ढींगरा, लाला लाजपत राय और लाल हरदयाल।

3. मुस्लिम लीग की स्थापना सन् 1906 ई० में हुई थी।

4. लाला हरदयाल ने संयुक्त राज्य अमेरिका में गदर पार्टी की स्थापना की थी।

(च) 1. भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना के पूर्व भारत में विद्यमान प्रमुख राजनीतिक संगठनों के नाम थे—इण्डिया लीग (1875 ई०), इण्डियन एसोसिएशन (1876 ई०), पूना सार्वजनिक सभा (1870 ई०), बम्बई प्रेसिडेन्सी एसोसिएशन (1885 ई०), मद्रास महाजन सभा (1884 ई०) इलाहाबाद पीपुल्स ऐसोसिएशन और इण्डियन ऐसोसिएशन ऑफ लाहौर आदि।
इन संस्थाओं का उद्देश्य सभी भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना उत्पन्न करना और एक अखिल भारतीय संगठन बनाना था, जो अंग्रेजों द्वारा भारतीयों की अधीनता से छुटकारा दिलाने के लिए काम कर सके; जिससे भारतीयों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधार कर उन्हें राजनीतिक अधिकार प्राप्त हो सके।

2. 1905 ई० में प्रारम्भ हुए काँग्रेस के दूसरे चरण के दौरान कट्टरपंथी काँग्रेस के चरमपंथी नेता लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्र पाल, जिन्हें लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाता था, प्रमुख चरमपंथी नेता थे। उनके संघर्ष का उद्देश्य और तरीका याचिकाकर्त्ताओं या नरमपंथियों से भिन्न था। याचिकाकर्त्ताओं ने ब्रिटिश अधिकारियों को याचिकाएँ देकर ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत संवैधानिक सुधार, आर्थिक राहत, प्रशासनिक पुनर्गठन और नागरिक अधिकारों की रक्षा की माँग की। उन्होंने स्वराज या स्वशासन की कोई माँग नहीं की, जबकि चरमपंथी याचिकाओं में विश्वास नहीं करते थे। चरमपंथी किसी भी तरह से स्वशासन या पूर्ण स्वराज चाहते थे। लोकमान्य के नाम से प्रसिद्ध बाल गंगाधर तिलक ने घोषणा की कि 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा'। चरमपंथियों ने विदेशी वस्तुओं, सरकारी सेवाओं तथा उपाधियों और सम्मानों के बहिष्कार जैसे कार्यक्रमों का सुझाव दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने स्वदेशी आन्दोलन और राष्ट्रवादी शैक्षणिक संस्थानों का समर्थन किया।

3. ब्रिटिश लोगों ने भारत में एकता की भावना को रोकने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने 'बाँटों तथा राज करो' की नीति खुलकर अपनाई। यह घोषणा की गई कि यदि शिक्षित मुसलमान ब्रिटिश सरकार के वफादार रहेंगे तो उन्हें सरकारी नौकरियों तथा अन्य लाभों से पुरस्कृत किया जाएगा। परिणामत: बड़ी संख्या में शिक्षित मुसलमान या तो राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग रहे या इसके विरुद्ध हो गए। इन परिस्थितियों के कारण सन् 1906 ई० में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इसमें अधिकतर उच्च वर्ग के मुसलमान; जैसे—आगा खान, ढाका का नवाब सलीमुल्ला खान और नवाब मोहसिन-उल-मुल्क थे। प्रारम्भ में इसका उद्देश्य युवा मुसलमानों को काँग्रेस में जाने से रोकना और राष्ट्रवादी तह में जाना था। मुस्लिम लीग विशुद्ध रूप से वफादार संस्था होने के कारण, सरकार के पक्ष और संरक्षण के लिए देखती थी।
4. विदेशों में कुछ महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं—
   (i) सन् 1905 ई० में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लन्दन में इण्डियन हाउस की स्थापना की। यह भारत के बाहर क्रान्तिकारी गतिविधियों का केन्द्र बन गया। सन् 1907 ई० में वी०डी० सावरकर के इसमें शामिल होने के पश्चात् इण्डियन हाउस की गतिविधि और भी अधिक कट्टरपंथी हो गई। वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय, तिरूमल आचार्य, मैडम भीकाजी कामा, भाई परमानन्द, मदनलाल ढींगरा, लाला लाजपत राय और लाला हरदयाल इस समूह के सक्रिय सदस्य थे।
   (ii) सन् 1913 ई० में लाला हरदयाल के नेतृत्व में संयुक्त राज्य अमेरिका में क्रान्तिकारी गदर पार्टी का गठन हुआ। जैसे ही प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा, पार्टी ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए भारत में हथियार, धन और व्यक्तियों को भेजने का फैसला किया। रासबिहारी बोस तथा विष्णु गणेश पिंगले के आने के बाद इस आन्दोलन ने नया रूप ग्रहण किया।
   (iii) सन् 1915 ई० में वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, भूपेन दत्त तथा लाला हरदयाल के नेतृत्व में जर्मन विदेश कार्यालय के सहयोग से देश को आजाद कराने के उद्देश्य से बर्लिन में भारतीय स्वतन्त्रता समिति की स्थापना की गई।
   (iv) दिसम्बर 1915 ई० में, राजा महेन्द्र प्रताप, बरकतुल्ला और ओबेदुल्ला सिन्धी ने काबुल में स्वतन्त्र भारत की प्रस्तावित सरकार की स्थापना की।
5. उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान, अनेक ऐसी घटनाएँ हुईं, जिनके दूरगामी परिणाम हुए। सन् 1857 का विद्रोह, अनेक किसान और आदिवासी विद्रोह तथा आन्दोलन, सामाजिक-सांस्कृतिक जागृति एवं साम्राज्यवाद के आर्थिक प्रभावों ने भारतीय इतिहास की दिशा बदल दी। भारतीयों के हृदय में राष्ट्रवाद की भावना पहले ही जाग्रत हो चुकी थी। इससे अंग्रेजों के खिलाफ भारत की एकता बनी। उनका एकमात्र उद्देश्य अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालना था। अंग्रेजों के

व्यवहार से भारतीय वास्तव में तंग आ चुके थे और वे समझ गए थे कि उन्हें भारत में बाहर निकालने से ही उनकी प्रगति सम्भव है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

13. भारतीय स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष : द्वितीय चरण (1919-47 ई०)

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) डाण्डी 2. (a) दक्षिण अफ्रीका 3. (b) कैप्टन मोहन सिंह
4. (b) सुभाषचन्द्र बोस

(ख) 1. चितरंजन दास, मोतीलाल नेहरू 2. बारदोली सत्याग्रह
3. कैप्टन मोहन सिंह 4. 1919 ई० 5. सीधी कार्रवाई

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (i) 3. (ii) 4. (iii)

(ङ) 1. मोहनदास करमचन्द गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को भारत में काठियावाड़ प्रायद्वीप (आधुनिक गुजरात) के पोरबंदर में हुआ था। उनका विवाह 13 वर्ष की आयु में कस्तूरबा से हुआ। 19 वर्ष की उम्र में वे कानून की पढ़ाई करने के लिए इंग्लैण्ड चले गए। गुजरात और बॉम्बे (अब मुम्बई) में वकालत के असफल प्रयासों के बाद वे दक्षिण अफ्रीका के डरबन में एक फर्म के लिए कार्य करने गए।

2. 13 अप्रैल, 1919 को कुछ राष्ट्रवादी नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में बड़ी संख्या में लोग अमृतसर के जलियांवाला बाग में इकट्ठा हुए थे। यह एक शान्तिपूर्ण सभा थी। जरनल डायर ने पार्क के प्रवेश द्वारों पर ताले लगवा दिए तथा बिना किसी चेतावनी के गोली चलाने का आदेश दिया। भगछड़ में लगभग 1,000 लोग मारे गए तथा 2,000 लोग घायल हो गए।

3. आजाद हिन्द फौज सन् 1941 ई० में बनाई गई। सुभाष चन्द्र बोस, रासबिहारी बोस और कैप्टन मोहन सिंह इससे जुड़े थे।

4. कैबिनेट मिशन को ऐसा इसलिए कहा गया, क्योंकि इसमें ब्रिटिश कैबिनेट के तीन सदस्य शामिल थे। ये तीन सदस्य लॉर्ड पेट्रिक-लॉरेन्स, ए०वी० अलेक्जेण्डर तथा स्टैफर्ड क्रिप्स थे।

5. स्वराजवादियों ने असहयोग आन्दोलन के निलंबन के कारण स्वराज पार्टी का गठन किया। स्वराज पार्टी के प्रमुख नेता चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू थे। उन्होंने 1923 ई० के चुनाव लड़े तथा केन्द्रीय विधानसभा में बड़ी संख्या में सीटें प्राप्त

की। उनका उद्देश्य सरकार के कामकाज में लगातार रुकावट डालना था। केन्द्रीय विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों के रूप में उन्होंने महत्त्वपूर्ण सरकारी बिलों को पारित कराने में बाधा उत्पन्न की।

6. पूर्ण स्वराज की माँग सन् 1929 ई० में काँग्रेस के लाहौर अधिवेशन में उठाई गई।

(च) 1. दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी के अनुभव ने उनके सत्याग्रह के विचारों तथा तरीकों को आकार दिया। सन् 1906 ई० तक उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के नैटाल में निवास करने वाले भारतीयों के प्रति जातीय भेदभाव के विरुद्ध लड़ाई में वकालत की सामान्य तकनीकों का प्रयोग किया, लेकिन 1907-08 ई० तथा पुन: 1913-14 ई० में प्रारम्भ किए गए निष्क्रिय प्रतिरोध के दो मामलों में उन्होंने अपने तरीकों में परिवर्तन किया, इस परिवर्तन ने उनके दक्षिण अफ्रीका के संघर्ष के आवश्यक घटकों का गठन किया और सत्याग्रह की उनकी अवधारणा के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

2. गाँधीजी ने जिन तीन स्थानीय मुद्दों का अनुभव किया और वर्ष 1917-18 के दौरान सत्याग्रह की अपनी तकनीक का प्रयोग किया, वे चम्पारण के नील किसानों, अहमदाबाद के कपड़ा श्रमिकों और खेड़ा के किसानों द्वारा कर का भुगतान न करने से सम्बन्धित थे। चम्पारण में, यूरोपीय बागान मालिकों ने स्थानीय किसानों का अत्यधिक उत्पीड़न किया था। गाँधीजी के प्रयासों से, सरकार ने गाँधीजी के साथ एक सदस्य के रूप में एक जाँच समिति गठित की और किसानों पर दबाव को घटाने में सफल हुए। अहमदाबाद में, गाँधीजी के मार्गदर्शन में मजदूरों ने अधिक मजदूरी देने से इनकार करने वाले मिल–मालिकों के खिलाफ हड़ताल की। अंतत: मिल–मालिक 35% वेतन वृद्धि पर सहमत हुए। खेड़ा में, गाँधीजी ने किसानों को सत्याग्रह का सहारा लेने के लिए संगठित किया और अकाल की स्थिति होने पर भी भू–राजस्व के पूर्ण संग्रह का विरोध किया। अत: सरकार को किसानों के साथ समझौता कराने के लिए झुकना पड़ा।

3. सविनय अवज्ञा आन्दोलन सन् 1930 ई० में प्रारम्भ किया गया था। इस आन्दोलन के दौरान गाँधी जी ने नमक कानून को तोड़ने के लिए 12 मार्च, 1930 में दांडी मार्च प्रारम्भ किया, जो दमनकारी ब्रिटिश कानूनों के विरुद्ध भारतीय लोगों की रक्षा का प्रतीक था। इस आन्दोलन में अन्य कार्यक्रम विदेशी कपड़े जलाना, शराब की दुकानों पर धरना देना, किसानों द्वारा करों का भुगतान न करना, छात्रों द्वारा स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार करना और सरकारी कर्मचारियों के कार्यालयों का बहिष्कार करना सम्मिलित था।

4. सन् 1942-45 ई० की अवधि में सुभाष चन्द्र बोस की कट्टरपंथी गतिविधियों का प्रभुत्व रहा। गाँधीजी के विरोध के बावजूद वे दो बार (1938-1939 ई०) काँग्रेस के अध्यक्ष बने। बोस सन् 1941 में गुप्त रूप से भारत छोड़कर बर्लिन पहुँचे। वहाँ से वे जापान गए, जहाँ रासबिहारी बोस की पहल पर कैप्टन मोहन सिंह ने 'आजाद हिन्द फौज' या भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) की स्थापना की। इसमें ब्रिटिश सेना

के भारतीय सैनिक जो युद्ध में जापानियों द्वारा बन्दी बना लिए गए थे, सम्मिलित थे। बोस ने इस सेना में नया जीवन फूँका तथा नेताजी कहलाए जाने लगे। उन्होंने प्रसिद्ध युद्ध नारा भी दिया : दिल्ली चलो। आजाद हिन्द फौज जापानी सेना के साथ भारत की पूर्वी सीमा तक पहुँची और भारतीय झण्डा फहराया। उसके अनेक सैनिक बन्दी बना लिए गए। इसके बाद, लाल किले में उन पर सार्वजनिक मुकदमा चलाया गया। इससे लोगों में देशभक्ति के भाव जाग उठे। परिणामत: आजाद हिन्द फौज के नेताओं की सजा माफ कर दी गई तथा उन्हें छोड़ दिया गया। अशान्ति की लहर रॉयल इण्डियन एयर फोर्स तथा नेवी में भी फैल गई। इस अनुभूति ने देश की स्वतन्त्रता की प्रक्रिया तेज कर दी।

5. भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में गाँधीजी का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अनेक आन्दोलन किए। ये अहिंसा और सत्याग्रह पर आधारित थे। ऐसे ही कुछ महत्त्वपूर्ण आन्दोलन इस प्रकार हैं—

   (i) असहयोग आन्दोलन (1920-22)—सन् 1920 ई० में गाँधीजी के नेतृत्व में प्रारम्भ किया गया। असहयोग आन्दोलन भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष के जनव्यापी आन्दोलन के चरण का आरम्भ था। इस आन्दोलन में अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली उपाधियों और सम्मानों के बहिष्कार, सभी सरकारी कार्यक्रमों, समारोहों, कानूनी अदालतों, बैंकों, कार्यालयों, शिक्षण संस्थानों और अंग्रेजी वस्तुओं आदि के बहिष्कार की वकालत की।

   (ii) सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930-33)—गाँधीजी ने नमक कानून तोड़ने के लिए 12 मार्च, 1930 को अपने महाकाव्य 'दांडी मार्च' द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन के अन्तर्गत नमक कानून तोड़ने के साथ-साथ विदेशी कपड़ों को जलाया गया, शराब की दुकानों पर धरना दिया गया, कार्यालयों का बहिष्कार किया गया तथा शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार किया गया।

   (iii) भारत छोड़ों आन्दोलन (1942)—8 अगस्त, सन् 1942 ई० को काँग्रेस ने बॉम्बे (अब मुम्बई) में एक बैठक में 'भारत छोड़ों' का आह्वान किया। भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करने और तुरन्त एक राष्ट्रीय सरकार स्थापित करने की माँग करते हुए एक प्रस्ताव लाया गया था, साथ ही गाँधी जी ने 'करो या मरो' का नारा दिया। अन्तत: 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा और भारत को आजादी देनी पड़ी।

6. **खिलाफत आन्दोलन**—प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध में तुर्की पराजित हो गया। ब्रिटेन ने तुर्की पर शर्मनाक शर्तें लगाईं, जिसके कारण उसका विभाजन हो गया। सुल्तान का 'खलीफा' पद समाप्त कर दिया गया। खलीफा समस्त विश्व के मुसलमानों का धार्मिक मुखिया था। इससे भारत के मुसलमान अंग्रेजों के विरुद्ध हो गए। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध 'खिलाफत आन्दोलन' प्रारम्भ कर दिया। भारत में इस आन्दोलन का नेतृत्व अली भाइयों (शौकत अली तथा मुहम्मद अली), अबुल

कलाम आजाद तथा हसरत मोहानी ने किया था। दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय खिलाफत आन्दोलन में निश्चय किया गया कि यदि सरकार ने उनकी माँगें स्वीकार नहीं की तो वे सरकार से सभी प्रकार का सहयोग वापस ले लेंगे। गाँधीजी ने देशवासियों से 17 अक्टूबर को 'खिलाफत दिवस' के रूप में मनाने की अपील की। खिलाफत आन्दोलन धीरे-धीरे असहयोग आन्दोलन में समाहित हो गया।

परिवर्तन समर्थक—असहयोग आन्दोलन वापस लेने के बाद काँग्रेस पार्टी दो समूहों में बँट गई। एक समूह, जिसके नेता चितरंजन दास, विट्ठल भाई पटेल तथा मोतीलाल नेहरू थे, ने 1919 ई० के ऐक्ट के अन्तर्गत गठित विधान परिषदों में प्रवेश के लिए अपील की। उनका उद्देश्य असेम्बली तथा काउन्सिलों के माध्यम से सरकार को निरन्तर बाधित करने की नीति अपनाना था। सन् 1925 ई० में चितरंजन दास की मृत्यु ने उन्हें कमजोर कर दिया। दूसरा समूह परिषदों से दूरी बनाए रखने के पक्ष में था। यह समूह एक रचनात्मक कार्यक्रम करना चाहता था। इस समूह के नेत सरदार वल्लभभाई पटेल, सी० राजगोपालाचारी व राजेन्द्र प्रसाद थे। सन् 1923 ई० में परिवर्तन-समर्थकों ने काँग्रेस खिलाफत स्वराज्य पार्टी बनाई, जिसे स्वराज पार्टी के नाम से जाना गया। यह नई पार्टी काँग्रेस के भीतर एक समूह की तरह कार्य करती थी। काँग्रेस ने उन्हें चुनाव लड़ने की अनुमति दे दी। पार्टी ने चुनाव लड़ा तथा विधायिका में कुछ सीटें जीत लीं। अंग्रेजों के प्रत्येक कार्य का विरोध करते हुए उन्होंने अंग्रेजों को अपनी नीतियाँ व प्रस्तावों को विधायिका में पारित कराना बेहद मुश्किल कर दिया।

काकोरी षडयन्त्र केस—काकोरी षडयन्त्र केस 29 क्रान्तिकारियों के विरुद्ध अंग्रेज सरकार द्वारा लिखवाया गया मुकदमा था, जिन पर एक सनसनीखेज ट्रेन डकैती में, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेने का आरोप था। 9 अगस्त, 1925 को दस नौजवानों ने लखनऊ के पास काकोरी गाँव के करीब 8 डाउन रेलगाड़ी को रोक लिया। उस रेलगाड़ी में विभिन्न रेलवे स्टेशनों से इकट्ठा किया गया पैसा था, जिसे लखनऊ में जमा करना था। इस सुनियोजित काण्ड में रेलगाड़ी के गार्ड को बन्दूक की नोक पर ले लिया गया और धावा मारने वाले नौजवान चार हजार रुपए लूटकर ले गए। इस घटना के एक महीने के भीतर 29 क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया और कुल मिलाकर लगभग 43 लोगों को हिसारत में ले लिया गया। रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी तथा ठाकुर रोशनसिंह को फाँसी की सजा सुनाई गई थी। कुछ समय बाद अशफाकउल्लाह खान को भी फाँसी की सजा सुनाई गई। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की पकड़ में नहीं आए और 27 फरवरी, 1931 ई० को पुलिस मुठभेड़ में मार गए।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

14. संसाधन

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) प्राकृतिक 2. (c) खनिज 3. (c) प्रौद्योगिकी 4. (c) प्रौद्योगिकी

(ख) 1. मानव 2. नवीकरणीय 3. धात्विक अयस्क 4. प्राकृतिक
5. क्षयशील 6. अनवीकरणीय

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (i) 3. (ii) 4. (iii)

(ङ) 1. कोई भी पदार्थ जो पृथ्वी का भाग है और जो मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करता है, संसाधन कहलाता है।

2. संसाधनों से जुड़े चार प्रकार के मूल्य—आर्थिक, कानूनी, सौन्दर्य शास्त्रीय और नैतिक गुण हैं।

3. (i) प्राकृतिक संसाधन—भूमि, मिट्टी आदि।
मानव संसाधन—घनत्व, आयु समूह।
(ii) सम्भाव्य संसाधन—पानी, हवा।
वास्तविक संसाधन—धातु, खनिज।
(iii) नवीकरणीय संसाधन—पानी और हवा।
अनवीकरणीय संसाधन—खनिज और जीवाश्म ईंधन।

4. मानव-निर्मित संसाधन वे पदार्थ हैं, जिनका निर्माण मनुष्य स्वयं करता है। मशीन, औजार, प्रौद्योगिकी, पूँजी, मकान तथा इमारतें, यातायात और संचार के साधन, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाएँ आदि विभिन्न प्रकार के मानव-निर्मित संसाधन हैं।

(च) 1. संसाधनों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से होता है। मूल रूप से संसाधन दो प्रकार के होते हैं—(i) प्राकृतिक संसाधन, (ii) मानव-निर्मित संसाधन।

(i) प्राकृतिक संसाधन—पर्यावरण से प्राप्त कोई भी पदार्थ या तत्त्व, जो मानव द्वारा उपयोग किया जाता है, जैसे—हवा, पानी, मिट्टी, खनिज ईंधन, पौधे तथा वन्य जीवन आदि प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। कुछ संसाधन जैसे—हवा, पानी और पौधे मानव जाति के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं, जबकि अन्य जैसे—खनिज और ईंधन का उपयोग अन्य भौतिक आवश्यकताओं और चाहतों को पूरा करने के लिए किया जाता है।

(ii) मानव-निर्मित संसाधन—मानव संसाधन लोगों की संख्या और क्षमताओं (मानसिक और शारीरिक) को सन्दर्भित करता है। जनसंख्या के वितरण और घनत्व का मापन संख्यात्मक रूप में किया जाता है। लोगों की मानसिक और शारीरिक क्षमताएँ जटिल होती हैं, जिसे मापना आसान नहीं है। लोगों की मानसिक और शारीरिक क्षमताओं को समाप्त करने के लिए

शिक्षा और स्वास्थ्य को महत्त्वपूर्ण मानदंड माना जाता है। वास्तव में, ये दोनों तत्त्व लोगों को संसाधन विकसित करने में सक्षम बनाते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से शिक्षित और स्वस्थ जनसंख्या किसी भी देश की मूल्यवान धरोहर है। मानव अपनी योग्यता के आधार पर भौतिक पदार्थों को मूल्यवान संसाधनों में परिवर्तित कर देता है। उदाहरण के लिए, मशीनें, औजार, प्रौद्योगिकी, पूँजी, मकान तथा इमारतें, यातायात और संचार के साधन, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाएँ आदि विभिन्न प्रकार के मानव-निर्मित संसाधन हैं।

2. विश्व के विकसित देश विकासशील देशों की अपेक्षा अधिक मात्रा में संसाधनों का उपयोग करते हैं। उदाहरणार्थ—संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोपीय देश संसार के औसत से कई गुना अधिक खनिज तेल का उपयोग करते हैं। विकसित देशों में संसाधनों की माँग उनकी जनसंख्या की तुलना में तेजी से बढ़ती है। आर्थिक विकास से मिली सम्पत्ति लोगों को अधिकाधिक संसाधन उपभोग करने में समर्थ बनाती है। विकासशील देश भी अधिक संसाधनों का उपयोग करके अपने आर्थिक विकास को बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं।
3. विभिन्न संसाधनों की बढ़ती माँग के कारण अनेक प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास हुआ है। उदाहरण के लिए अत्यधिक उपयोग के कारण मिट्टी अनुपजाऊ हो गई है। वनों की व्यापक कटाई, वन्य जन्तुओं और पक्षियों की हत्या के परिणामस्वरूप अनेक क्षेत्रों में जैव-विविधता का ह्रास हुआ है। अनेक पौधों व जीव-जन्तुओं की प्रजातियाँ लुप्त हो गई हैं। उनमें से कुछ पहले ही विलुप्त हो चुकी हैं और कई विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रहे हैं। यदि हम इनके संरक्षण के उपाय नहीं करते हैं तो वे शीघ्र ही विलुप्त हो जाएँगे।
4. भूमि और जल संसाधनों के दुरुपयोग और अत्यधिक उपयोग ने इन प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। उद्योगजनित वायु-प्रदूषण ने मनुष्यों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाला है। पर्यावरण प्रदूषण ने पहले ही मनुष्य और जीव-जन्तुओं के जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। अब समय आ गया है कि हमें अपने संसाधनों का दुरुपयोग बन्द कर देना चाहिए। हमें अपने ग्रह के जीवनदायक तन्त्र की रक्षा करनी चाहिए और उसे बनाए रखने के लिए उपयुक्त प्रयास करने चाहिए। हमें अपने संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करना चाहिए कि वे अधिक समय तक उपलब्ध रहें। हमें पृथ्वी पर जीवन की विविधता को भी संरक्षित करना चाहिए। हमें प्राकृतिक पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम से कम करना चाहिए। वास्तव में सतत विकास हमारा लक्ष्य होना चाहिए, तभी हम अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा कर पाएँगे और आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने संसाधनों को बचा पाएँगे।

5. संसाधनों को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। मूल रूप से संसाधन दो प्रकार के होते हैं—

(i) प्राकृतिक संसाधन—प्राकृतिक संसाधन प्राकृतिक पर्यावरण के वे पदार्थ, तत्त्व और बल हैं, जिनका उपयोग मानव अपने लाभ के लिए करता है। इस प्रकार भूमि, मिट्टी, पानी, खनिज, वनस्पति, जीव-जन्तु आदि प्राकृतिक संसाधन है।

(ii) मानव संसाधन—वे संसाधन होते हैं, जिनका निर्माण मनुष्य अपने कौशल से करता है। मनुष्य अनेक संसाधनों का निर्माण करता है, जैसे—पूँजी, इमारतें, यातायात और संचार के साधन, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाएँ आदि। इन सभी संसाधनों को मानव-निर्मित संसाधन कहते हैं। मनुष्य स्वयं एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है। इसे दो प्रकार से माना जा सकता है : मात्रात्मक रूप से (किसी देश की कुल जनसंख्या) और गुणात्मक रूप से (किसी राष्ट्र में रहने वाले लोगों का कौशल और स्वास्थ्य)।

संसाधनों को उनकी उपलब्धता के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है—
(i) नवीकरणीय और (ii) अनवीकरणीय संसाधन।

(i) नवीकरणीय संसाधन—वे संसाधन, जिनका पुनरुत्पादन किया जा सकता है या जो हमेशा उपलब्ध रहेंगे, नवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं। सभी जीवित चीजें नवीकरणीय हैं। जल, वायु और सूर्य का प्रकाश भी नवीकरणीय संसाधन हैं।

(ii) अनवीकरणीय संसाधन—वे संसाधन, जिन्हें हम जिस दर पर उपयोग करते हैं, उसके बराबर दरों पर पुन: उत्पन्न नहीं किया जा सकता है, अनवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं, उदाहरण के लिए, खनिज और जीवाश्म ईंधन आदि।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

15. प्राकृतिक संसाधन : भूमि, मृदा एवं जल

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) मृदा 2. (b) बाँध 3. (a) आसवन
4. (c) ट्यूब वैल का अत्यधिक उपयोग

(ख) 1. तापमान 2. 30 3. उबला हुआ पानी 4. ऑस्ट्रेलिया
5. 40°

(ग) 1. (iii) 2. (iv) 3. (ii) 4. (i)

(घ) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

(ङ) 1. संरक्षण का अर्थ प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग तथा अपव्यय से बचाव करते हुए, बुद्धिमानी से उपयोग करना है, जिससे वे समाप्त न हों और हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए उपलब्ध रहें।

2. मिट्टी के निर्माण में मूल चट्टानें, स्थलाकृति, जलवायु, मृदा जीव तथा समय मूलभूत कारक हैं।

3. भूमि उपयोग प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले तीन कारक स्थलाकृति, मिट्टी और जलवायु हैं।

4. मृदा-अपरदन के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं—

(i) भौतिक कारक—ढाल, वर्षा की तीव्रता और हवा की गति आदि।

(ii) मानवीय कारक—वनों की कटाई, अतिचारण, अत्यधिक प्रयोग या रासायनिक उर्वरक, अत्यधिक सिंचाई और दोषपूर्ण कृषि नीतियाँ आदि।

(च) 1. मिट्टी का संरक्षण निम्नलिखित उपाय द्वारा किया जा सकता है—

(i) पहाड़ी ढलानों पर सीढ़ीदार खेती या समोच्चरेखीय जुताई के द्वारा मिट्टी के कटाव को रोका जा सकता है।

(ii) वनों की कटाई को नियन्त्रित करके और वनीकरण को बढ़ावा देकर मिट्टी का संरक्षण किया जा सकता है।

(iii) शुष्क क्षेत्रों में हवा की गति को रोकने के लिए पेड़-पौधों को पंक्तियों में लगाकर रक्षक-मेखला बनाकर मिट्टी का संरक्षण किया जा सकता है।

(iv) बाढ़ को नियन्त्रित करके मिट्टी को संरक्षित किया जा सकता है। नदियों पर बाँध बनाकर बाढ़ को नियन्त्रित किया जा सकता है।

(v) नालियों को पाट कर और रिज को भरकर मिट्टी को संरक्षित किया जा सकता है।

2. सूखे क्षेत्रों में हवा द्वारा होने वाले मृदा-अपरदन को निम्नलिखित उपाय द्वारा रोका जा सकता है—

(i) पौधों या फसल के अवशेषों को उगाकर, एक वनस्पति आवरण को बनाए रखकर।

(ii) खेती की परत को कम करना।

(iii) जुताई कम करना या समाप्त करना।

(iv) यदि जुताई अपरिहार्य हैं तो जुताई का एक उपकरण चुनें, जो अवशेषों को कम दबाता हो और जुताई की गति को कम करता हो।

(v) रक्षक-मेखला बनाकर उसका रख-रखाव करके मृदा संरक्षण किया जा सकता है।

(iv) अत्यधिक चराई से बचना।

3. भारत में कृषि-योग्य भूमि का प्रतिशत सर्वाधिक है। फ्रांस तथा यूनाइटेड किंगडम में कृषित भूमि का प्रतिशत एक-चौथाई से अधिक है, जबकि कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, रूस, ब्राजील तथा चीन में कृषि के अन्तर्गत भूमि 10% से कम है।
पर्यावरण की दृष्टि से किसी भी देश की एक-तिहाई (33%) भूमि पर वनावरण होना आवश्यक है। दुर्भाग्य से भारत सहित अनेक देश इस स्तरीय मानक का पालन नहीं करते। केवल जापान, ब्राजील, रूस तथा कनाडा में वन-क्षेत्र अत्यधिक विकसित अवस्था में है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका इसके बहुत करीब है। पशु, विशेषकर पालतू पशु मानव के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। भारत में पशुओं की संख्या सर्वाधिक है, फिर भी यहाँ बहुत ही कम भूमि पर चरागाह पाए जाते हैं। कनाडा, जापान और रूस में भी बहुत कम भूमि पर चरागाह पाए जाते हैं, जबकि ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस इस संबंध में भाग्यशाली हैं।

4. पानी एक नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन है, लेकिन जनसंख्या वृद्धि के कारण पानी की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, क्योंकि सिंचाई, घरेलू कार्यों और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए पानी की आवश्यकता होती है। जल प्रदूषण भी पूरे विश्व में एक गम्भीर समस्या है। औद्योगीकरण और रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों का बढ़ता उपयोग जल प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं। तेल रिसाव, पेट्रोल और डीजल टैंकों के रिसाव और नालियों में बहने वाले तरल पदार्थों की सफाई से पानी हाइड्रोकार्बन से दूषित होता है।
जल संरक्षण और इसकी गुणवत्ता सुधार के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं—
   (i) भूमिगत जल के भण्डारों को बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण द्वारा और अन्य द्वारा धरातल पर प्रवाहित जल की गति को कम किया जा सकता है।
   (ii) जल संचयन सतही बहाव को रोकने का तरीका है।
   (iii) निवारक बाँधों द्वारा भी पानी को रोका जा सकता है।
   (iv) अत्यधिक सिंचाई करने से बचना चाहिए। नहरों को पक्का करके उनसे होने वाले पानी के रिसाव के नुकसान को कम किया जा सकता है। फव्वारा विधि सिंचाई की बहुत प्रभावी और कुशल तकनीक है।
   (v) उद्योगों में, पुनर्नवीकरण पानी को ठण्डा करने के उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता है। अपशिष्टों को निस्तारण से पहले उपचारित किया जाना चाहिए।
   (vi) घरेलू उपयोग में पानी की बर्बादी को रोका जाना चाहिए। रसोई के कामों में अनुपयुक्त पानी को रसोई उद्यानों में उपयोग करना चाहिए।

5. मनुष्य की जनसंख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, उसे पीने और अन्य उपयोगों के लिए पानी की आवश्यकता होती है। उन्हें रहने के लिए जगह और भवन बनाने के लिए पानी चाहिए। उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कृषि माँग में

वृद्धि होगी। अब पानी की उपलब्धता सीमित है। हालांकि पृथ्वी की सतह का 71% क्षेत्र पानी से ढका हुआ है, किन्तु पृथ्वी पर उपस्थित समस्त जल उपयोग नहीं किया जा सकता। पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का 97% भाग सागरों तथा महासागरों से भरा है, जोकि खारा है। अन्य 2% पानी हिमचादरों व हिमानियों के रूप में संचित है। केवल 1% स्वच्छ जल है जो उपभोग के योग्य है। इसलिए स्वच्छ पानी की माँग बढ़ रही है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें।

❑

16. कृषि

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) भारत 2. (c) लैटिन अमेरिका 3. (c) यू०एस०ए०
4. (d) चीन 5. (d) ब्राजील

(ख) 1. मिलेट 2. उद्यान कृषि 3. काटो और जलाओ कृषि 4. रोपण कृषि

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (ii) 4. (i)

(ङ) 1. कृषि बड़े पैमाने पर फसलों की खेती करने का विज्ञान है। हालांकि कृषि फसलों के बढ़ने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जानवरों का पालन-पोषण भी शामिल है। कुछ विद्वान इसके अन्तर्गत वानिकी, बागवानी, मत्स्य पालन, रेशम उत्पादन और मुर्गीपालन को भी सम्मिलित करते हैं।

2. बीसवीं शताब्दी में कृषि में सहायक तीन तत्त्वों के नाम निम्नलिखित हैं—
   (i) साधारण औजारों खुदाई की छड़ें, कुदाल और दरांती के स्थान पर धीरे-धीरे बैलों से खींचे जाने वाले हल का प्रयोग होने लगा।
   (ii) विकसित देशों में आज सभी कृषि कार्यों का मशीनीकरण कर दिया गया है। अनेक संलग्नक वाले ट्रैक्टर अलग-अलग कार्य करते हैं।
   (iii) अधिक उपज देने वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के उपयोग ने कृषि उत्पादन को बढ़ाने में सहायता की है।

3. बीजों, उर्वरकों और सिंचाई का प्रयोग करके अधिक उपज देने वाली किस्मों के फलस्वरूप अनाज के उत्पादन में वृद्धि को 'हरित क्रान्ति' के नाम से जाना जाता है।

4. विश्व में उगाई जाने वाली तीन प्रमुख रेशेदार फसलों के नाम निम्नलिखित हैं—
   (i) कपास (ii) जूट (iii) रेशम।

(च) 1. स्वतन्त्रता के बाद, भारत सरकार ने देश में कृषि की दशा को सुधारने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए—

(i) सरकार ने खण्डित और बिखरी हुई भूमि की समस्या को हल करने के लिए 'चकबन्दी' (भूमि जोत की चकबंदी) को प्रोत्साहित किया। यह फार्म मशीनरी के उपयोग को बढ़ावा देने में भी सहायता करता है।

(ii) इसके अन्तर्गत भूमि सुधार पेश किए गए। सरकार ने जमींदारी व्यवस्था को समाप्त कर दिया और भूमिहीन मजदूरों को भूमि का पुनर्वितरण कर दिया।

(iii) सरकार ने खेती के आधुनिक तरीकों की शुरूआत की और सिंचाई, बिजली और परिवहन जैसी बेहतर बुनियादी सुविधाएँ प्रदान कीं।

(iv) किसानों को ट्रेक्टर, थ्रेशर और हार्वेस्टर जैसे कृषि उपकरण प्रदान किए गए।

(v) किसानों को उन्नत किस्म के बीज, उर्वरक, कीटनाशक तथा बिजली वास्तविक मूल्य की अपेक्षा कम मूल्य पर उपलब्ध कराए।

(vi) किसानों के लिए बैंकों से वित्त प्राप्त करना आसान बनाया गया।

(vii) फसल के भण्डारण और खराब होने की समस्या से निपटने के लिए सरकार भण्डारण सुविधाओं को विकसित करने के प्रयास कर रही है और विभिन्न फसलों के लिए बीमा योजनाएँ भी प्रारम्भ की गई हैं।

2. आज संयुक्त राज्य अमेरिका में विशिष्ट खेत लगभग 250 हेक्टेयर का है। यह खेत एक विशेष फसल उगाने में माहिर होता है। एक अमेरिकी किसान, आमतौर पर रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर बहुत निर्भर करता है। वह ट्रैक्टर, बीज बोने की मशीन, लेवेलर, संयुक्त हार्वेस्टर और थ्रेसर आदि का विभिन्न कृषि कार्यों में प्रयोग करता है। प्रति हेक्टेयर उपज आमतौर पर बहुत अधिक होती है। भारत में सामान्य खेत लगभग 1.5 हेक्टेयर का होता है। पूरी जमीन छोटे-छोटे भूखण्डों में बँटी होती है। इन भूखण्डों पर विभिन्न फसलों उगाई जाती हैं। कभी-कभी एक ही भूखण्ड पर दो या दो से अधिक फसलें उगाई जाती हैं। किसान के पास कुछ पशु भी होते हैं; जैसे—गाय, भैंस, बैल और कुछ मुर्गियाँ आदि। बैल खेतों की जुताई में उसकी मदद करते हैं। कभी-कभी वह विभिन्न कृषि गतिविधियों को करने के लिए किसी अमीर किसान या पास के शहर से ट्रैक्टर और थ्रेसर जैसी मशीनरी किराए पर लेता है। उनके परिवार के सदस्य भी विभिन्न गतिविधियों में उनकी सहायता करते हैं। वह साहूकारों, सहकारी समितियों या बैंकों पर निर्भर रहता है, जिससे कि वह बीज, उर्वरक और कीटनाशक आदि जैसे कृषि आदानों को खरीद सके। भारतीय खेत की प्रति हेक्टेयर उपज आमतौर पर कम होती है।

3. **निर्वाह कृषि**—इस प्रकार की कृषि के अन्तर्गत फसलों का उत्पादन स्थानीय समूह के उपभोग के लिए किया जाता है। अधिकांश उत्पाद उसी क्षेत्र में उपयोग हो जाते हैं, जहाँ उगाए जाते हैं। इसमें आदिम निर्वाह खेती के साथ-साथ गहन कृषि भी शामिल है। आदिम निर्वाह कृषि में सामान्यतया खेती के पुराने तरीकों का प्रयोग

किया जाता है। स्थानान्तरित खेती भी एक प्रकार की आदिम निर्वाह खेती है। सघन कृषि में किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाले बीज, उर्वरकों का उपयोग करके और सिंचाई के लिए पानी की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करके भूमि के एक छोटे से भूखण्ड से प्रति हेक्टेयर बहुत अधिक उपज प्राप्त होती है।

वाणिज्यिक कृषि—इस प्रकार की कृषि आमतौर पर विकसित देशों में की जाती है, जहाँ एक बड़े खेत में मुख्य रूप से बाजार में बिक्री के लिए एक ही फसल उगाई जाती है। इन खेतों पर अधिकांश कार्य मशीनों द्वारा किया जाता है। प्रति हेक्टेयर उपज काफी अधिक होती है।

4. भारत में कृषि-फार्म लगभग 1.5 हेक्टेयर का होता है। खेत का मालिक मुख्यत: गाँव में रहता है। खेत के एक कोने में कुआँ बना होता है। इन खेतों में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं, किसान को अपने खेतों में खेती करते समय उर्वरकों और कीटनाशकों सहित विभिन्न कृषि आदानों को खरीदने के लिए धन की आवश्यकता होती है। वह साहूकार पर निर्भर होता है, क्योंकि अधिकांश किसानों के पास आधुनिक खेती करने के लिए पर्याप्त साक्षरता और पूँजी नहीं होती है।

आज संयुक्त राज्य अमेरिका में विशिष्ट खेत लगभग 250 हेक्टेयर का होता है। सामान्यत: कृषक परिवार खेत पर ही रहता है। कृषि खेतों का क्षेत्रफल भारत के खेतों की अपेक्षा बहुत ज्यादा होता है। क्या उगाना है, इसका निर्णय किसान द्वारा यह सुनिश्चित करने के बाद लिया जाता है कि मिट्टी और जल संसाधन फसल की जरूरतों को पूरा करते हैं। वह ट्रैक्टर, बीज बोने की मशीन, लेवेलर, संयुक्त हार्वेस्टर और थ्रेशर आदि का विभिन्न कृषि कार्यों में प्रयोग करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, किसान व्यापारी की तरह कार्य करते हैं और वे किसानों की तरह रहना पसंद नहीं करते हैं। वे आय और व्यय के ब्यौरे का ठीक से रख-रखाव करते हैं।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।
(ज) स्वयं करें।
(झ) स्वयं करें।
(ञ) स्वयं करें।

❑

17. विनिर्माण उद्योग

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) सहकारी आधारित
2. (a) लोहा-इस्पात उद्योग
3. (c) कागज उद्योग
4. (a) मुम्बई

(ख) 1. अहमदाबाद
2. डेट्रायट
3. खनिज आधारित
4. कपड़ा
5. साँकची

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. (i) 2. (iii) 3. (ii) 4. (iv)

(ङ) 1. औद्योगिक प्रणाली में आगत, प्रक्रिया व निर्गत सम्मिलित होते हैं।
आगत में कच्चामाल, ऊर्जा के स्रोत, श्रम, भूमि का मूल्य, मशीनें परिवहन तथा दूसरी आधारभूत सुविधाएँ आती हैं।
प्रक्रिया में विभिन्न गतिविधियाँ आती हैं, जिसमें कच्चेमाल के उपयुक्त प्रौद्योगिकी की सहायता से उत्पादों में बदला जाता है।
निर्गत अन्तिम तैयार उत्पाद और इसके बेचने से कमाया गया लाभ होता है।

2. कच्चे माल के रूप में लोहे का उपयोग करने वाले तीन उद्योग हैं—लोहा और इस्पात, ऑटोमोबाइल और मीशनरी।

3. भारत के तीन इस्पात उत्पादक केन्द्रों के नाम हैं—जमशेदपुर, दुर्गापुर और भिलाई।

4. लौह-इस्पात उद्योग के आगत, प्रक्रिया व निर्गत निम्नलिखित हैं—
आगत—लौह अयस्क, कोयला, चूना पत्थर, मैंगनीज, साइट, श्रम, पूँजी और अन्य बुनियादी ढ़ाँचा।
प्रक्रिया—लौह अयस्क को स्टील में परिवर्तित करने में कई चरण सम्मिलित होते हैं। कच्चे माल को वात भट्टी में डाला जाता है, जहाँ इसे गलाना और फिर परिष्कृत किया जाता है।
निर्गत—लौहा और इस्पात जो अन्य उद्योगों में कच्ची सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता है।

5. संयुक्त राज्य अमेरिका में सैनफ्रांसिस्को तथा सैन जोंस नगरों के बीच पश्चिमी मध्य कैलिफोर्निया में सिलिकन घाटी स्थित है।

6. भारत में तीन सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र हैं—बंगलुरु, हैदराबाद और मुम्बई।

(च) 1. **कच्ची सामग्री के स्रोत के आधार पर**

(i) कृषि आधारित उद्योग अपने उद्योगों हेतु कच्ची सामग्री के लिए कृषि पर निर्भर करते हैं; जैसे—खाद्य उद्योग, सूती एवं जूट वस्त्र उद्योग, वनस्पति तेल उद्योग आदि सभी उद्योग कृषि उत्पादों पर निर्भर करते हैं।

(ii) देहाती आधारित उद्योग; जैसे—डेयरी उत्पाद, ऊनी वस्त्र, मांस और चमड़ा उद्योग।

(iii) समुद्री आधारित उद्योग; जैसे—मत्स्य प्रसंस्करण उद्योग।

(iv) वन आधारित उद्योग; जैसे—कागज उद्योग।

(v) खनिज आधारित उद्योग; जैसे—लोहा एवं इस्पात उद्योग, सीमेण्ट उद्योग और रासायनिक उद्योग आदि।

स्वामित्व के आधार पर

(i) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग सरकार और उसकी एजेन्सियों द्वारा चलाए जाते हैं।

(ii) निजी क्षेत्र के उद्योग व्यक्तिगत या व्यक्तियों के समूह द्वारा चलाए जाते हैं।

(iii) सहकारी क्षेत्र के उद्योग कच्ची सामग्री के उत्पादकों या आपूर्तिकर्त्ताओं या श्रमिकों या सभी के द्वारा चलाए जाते हैं।

(iv) संयुक्त क्षेत्र के उद्योग जो व्यक्तिगत स्तर पर या राज्य द्वारा चलाए जाते हैं।
(v) बहुराष्ट्रीय निगम जो विदेशी निवेशकों के सहयोग से स्थापित किए गए हैं।

2. किसी विशेष क्षेत्र में उद्योग की स्थापना निम्नलिखित सात प्रमुख कारकों पर निर्भर करती है—
(i) कच्ची सामग्री की उपलब्धता, (ii) बिजली, (iii) परिवहन, (iv) श्रमिक, (v) पूँजी, (vi) विपणन सुविधाएँ, (vii) सरकारी नीतियाँ।
औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार कुछ निश्चित आधारभूत अवसंरचना सुविधाएँ उपलब्ध कराती हैं; जैसे—औद्योगिक स्थल, सड़के, बिजली आदि, जो उस क्षेत्र में उद्योगपतियों को उद्योग स्थापित करने के लिए आकर्षित करती है।

3. भारत में सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिकी का विकास 1984 ई० में शुरू हुआ। पिछले तीन दशकों में भारत ने दूर-संचार क्षेत्र ने बहुत तरक्की की है। सन् 1984 से 1988 तक कम्प्यूटरों की संख्या दस गुना बढ़ी, कम्प्यूटर उद्योग का राजस्व चार गुना बढ़ा और कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर निर्यात पाँच गुना बढ़ा है। बंगलुरु, हैदराबाद, मुम्बई, पुणे, चेन्नई, दिल्ली-नोएडा-गुड़गाँव पेटी, चण्डीगढ़ और तिरुवनन्तपुरम सूचना प्रौद्योगिकी के कुछ महत्त्वपूर्ण केन्द्र हैं। भारतीय कम्पनियाँ अन्य क्षेत्रों के अलावा चिप डिजाइन, वेब आधारित सेवाएँ और दूरसंचार सॉफ्टवेयर में दक्ष हो रही हैं। इस क्षेत्र में भारत एक महान नेतृत्वकर्त्ता के रूप में उभरा है।

4. ओसाका जापान के वस्त्र उद्योग का महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। इसे 'जापान का मैनचेस्टर' कहा जाता है। ओसाका के चारों ओर विस्तृत मैदान सूती वस्त्र मिलों के विकास के लिए विशेष रूप से उपयुक्त हैं। दक्षिणी स्थान इसे कच्चे कपास के आयात और वस्त्र निर्यात के लिए एक सुविधाजनक बंदरगाह बनाता है। नम जलवायु, सस्ती महिला श्रमिक तथा बन्दरगाह इस शहर के वस्त्र उद्योग के विकास हेतु प्रमुख कारक हैं।

5. अहमदाबाद को 'भारत का मैनचेस्टर' कहा जाता है। यह गुजरात में साबरमती नदी के किनारे स्थित है। यह मुम्बई के उत्तर में 440 किलोमीटर दूर स्थित है। यहाँ सन् 1859 ई० में पहली कपड़ा मिल स्थापित की गई थी। इसका विकास मुम्बई के साथ-साथ हुआ और यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा वस्त्रों का शहर बन गया। अहमदाबाद में कताई-बुनाई का काम परम्परागत रूप से होता था जो एक उद्योग के रूप में विकसित हो गया। कपास उत्पादन क्षेत्र से घिरा हुआ होने के कारण इसे स्थानीय कच्चा माल सदैव उपलब्ध होता रहता है। यदि आवश्यक होता है तो यह मुम्बई पत्तन की सहायता से गुणवत्तायुक्त कच्ची कपास का दूसरे देशों से आयात भी कर लेता है। अब शहर में 70 से भी अधिक मिले हैं। अहमदाबाद की मिलें आकार में मुम्बई की मिलों से छोटी हैं, फिर भी यह नगर अच्छी किस्म के सूती वस्त्रों के लिए विख्यात है।

6. लोहा और इस्पात उद्योग अन्य सभी उद्योगों को आधार प्रदान करता है। इस धातु का व्यापक रूप से मशीनों, औजारों और विभिन्न प्रकार के दैनिक उपयोग के टिकाऊ सामान बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। इसलिए लोहा और इस्पात आधुनिक सभ्यता की वृद्धि और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें।

❑

18. मानव संसाधन

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) उत्तर प्रदेश में 2. (b) आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए
3. (a) एशिया में 4. (c) उत्तर प्रदेश

(ख) 1. केरल 2. केरल 3. बिहार, अरुणाचल प्रदेश

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (iv) 3. (i) 4. (iii)

(ङ) 1. मानव संसाधन का अर्थ है किसी देश की कुल कामकाजी आबादी, लेकिन मानव संसाधन का न्याय करने के लिए श्रमिकों का कौशल अधिक महत्त्वपूर्ण है, दूसरे शब्दों में, मात्रा के बजाय मनुष्य की गुणवत्ता अधिक महत्त्वपूर्ण है।

2. मानव संसाधन किसी देश के विकास के लिए प्रासंगिक है। जब किसी देश में उच्च शिक्षित और प्रशिक्षित लोग पर्याप्त संख्या में हों, तब यह दुर्लभ संसाधनों को बर्बाद किए बिना और अधिक कुशलता से उत्पादन कर सकता है।

3. धरातलीय क्षेत्रफल के एक इकाई क्षेत्रफल में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं। यह सामान्य रूप से प्रति वर्ग किलोमीटर के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह एक क्षेत्र के कुल सतह क्षेत्र से कुल जनसंख्या को विभाजित करके मापा जाता है।

(च) 1. उच्च शिक्षित एवं प्रशिक्षित लोग कुशलता से दुर्लभ संसाधनों को बर्बाद किए बिना उत्पादन कर सकते हैं। वे अन्य लोगों को अपनी क्षमताओं में वृद्धि करने तथा उनका अधिकाधिक उपयोग करने में सहायता करते हैं। अपनी कुशलता को लगातार विकसित करने की प्रवृत्ति ही व्यक्ति को अनेक बाधक तत्त्वों को दूर करने में दक्ष बनाती है।

2. जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं—

भौगोलिक कारक

(i) स्थलाकृति—लोग रहने के लिए पर्वतों और पठारों की अपेक्षा मैदानों में रहना अधिक पसन्द करते हैं, क्योंकि मैदानी क्षेत्रों में खेती, विनिर्माण तथा

सेवाओं जैसी गतिविधियों को आसानी से विकसित किया जा सकता है। मैदान विश्व के लगभग आधा भू-भाग पर कब्जा करते हैं, जहाँ विश्व की 90% से अधिक आबादी बसती है।

(ii) जलवायु—लोग ज्यादा गर्म और ज्यादा ठण्डी जलवायु वाले भागों में बसना पसन्द नहीं करते हैं। इसलिए अफ्रीका के भूमध्यरेखीय भाग तथा रूस, कनाडा और अण्टार्कटिक के ध्रुवीय क्षेत्र जनसंख्याविहीन हैं। पश्चिमी यूरोप और पूर्वी एशिया जैसे क्षेत्रों में मध्यम वर्षा के साथ समशीतोष्ण जलवायु और घनी आबादी है।

(iii) मिट्टी—यह कृषि को प्रभावित करती है और हमें भोजन, वस्त्र और आवास प्रदान करती है। इस प्रकार भारत में गंगा और ब्रह्मपुत्र, चीन में ह्वांगहो और चाँग जियांग (यांग्त्सीक्याँग) और मिस्र में नील नदियों के उर्वर मैदान सघन जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं।

(iv) जल की उपलब्धता—जल मानसूनी भूमियों, विशेषकर नदी-घाटी तथा उनके डेल्टाओं में बहुतायत से पाया जाता है, जिसके कारण वहाँ सघन जनसंख्या निवास करती है। इसके विपरीत मरुस्थलों और पर्वतों पर जल-संसाधनों की कमी होती है, इसलिए वे कम आबाद होते हैं।

(v) खनिज संसाधन—खनिजों ने लोगों को अत्यधिक आकर्षित किया है। दक्षिण अफ्रीका की हीरे की खदानों तथा मध्य-पूर्व में तेल-क्षेत्रों की खोज के कुछ उदाहरण हैं।

सामाजिक एवं आर्थिक कारक

धार्मिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक और व्यापारिक केन्द्र संसार के सभी भागों से लोगों को आकर्षित करते हैं। भारत के कुछ शहर जैसे—उत्तर प्रदेश में वाराणसी, ओडिशा में पुरी, तमिलनाडु में कांचीपुरम, आन्ध्र प्रदेश में तिरुपति, वैटिकन सिटी और जेरुसलम शहर धार्मिक केन्द्रों के उदाहरण हैं। मुम्बई, बंगलुरु, कोलकाता, दिल्ली, न्यूयॉर्क और टोक्यो आदि नगर औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्र सघन जनसंख्या घनत्व वाले नगरों के कुछ उदाहरण हैं।

3. लिंगानुपात में अन्तर निम्नलिखित कारणों से होता है—
   (i) जैविक रूप से बालिकाओं की अपेक्षा बालक अधिक जन्म लेते हैं।
   (ii) बालकों के लालन-पालन पर अधिक ध्यान दिया जाता है, जबकि बालिकाओं की उपेक्षा की जाती है।
   (iii) महिलाओं की मृत्यु दर पुरुषों की तुलना में अधिक है। बच्चियों की मृत्यु लापरवाही के कारण (जन्म के बाद मार दी गई) और कन्या भ्रूण हत्या (जन्म से पहले मार दी गई) जैसे जानबूझकर किए गए प्रयासों के कारण होती है। प्रसव के समय महिलाओं की मौत भी हो जाती है।
4. विकासशील देशों में, यह देखा गया है कि महिलाओं में साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में कम है। भारत में भी महिलाओं की साक्षरता दर पुरुषों से कम है। ऐसा

इसलिए है, क्योंकि अधिकांश भारतीय परिवारों में विशेषकर ग्रामीणों क्षेत्रों में बहुत-सी लड़कियों को स्कूल नहीं भेजा जाता है। उनके माता-पिता को लगता है कि लड़कियों को शिक्षा देने से कोई लाभ नहीं है, क्योंकि उन्हें घर में काम करना पड़ता है।

5. इस प्रश्न के उत्तर के लिए प्रश्न संख्या (च का) 3 देखें।
6. मानव को एक संसाधन माना जाता है, क्योंकि वह अपनी माँगों और क्षमताओं से नए संसाधनों का निर्माण कर सकता है। प्रकृति का उपहार तभी महत्त्वपूर्ण हो जाता है जब लोग इसे खोजते हैं और इसे अपने लिए उपयोगी बनाते हैं। इसलिए मानव संसाधन को समाज के लिए एक महत्त्वपूर्ण और संभावित संसाधन भी माना जाता है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें। **(ञ)** स्वयं करें।

❑

19. संविधान एवं कानून की आवश्यकता

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) संविधान में 2. (b) ग्रेट ब्रिटेन 3. (a) धर्मनिरपेक्ष देश
4. (a) समाजवादी व धर्मनिरपेक्ष 5. (c) वैध दस्तावेज

(ख) 1. कानून 2. कानूनी दस्तावेज का परिचय 3. लोकतन्त्र
4. समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, अखण्डता

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (v) 2. (iv) 3. (i) 4. (ii) 5. (iii)

(ङ) 1. संविधान कानूनों तथा नियमों का दस्तावेज होता है, जिसके अनुसार किसी देश का शासन होता है।

2. प्रस्तावना का शाब्दिक अर्थ है—'कानूनी दस्तावेज का परिचय'। वास्तव में प्रस्तावना हमारे संविधान का परिचय भी है और कुंजी भी है।
3. प्रस्तावना में निर्दिष्ट भारतीय गणतन्त्र का मुख्य उद्देश्य भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक गणराज्य बनाना और उसके सभी नागरिकों की स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व को सुरक्षित करना है।
4. एक गणतन्त्र एक राज्य है जहाँ राज्य का प्रमुख (राष्ट्रपति) एक निश्चित अवधि के लिए लोकप्रिय रूप से निर्वाचित व्यक्ति होता है। यह राजतन्त्र के बिल्कुल विपरीत होता है। जहाँ राजा एक वंशानुगत शासक होता है।

(च) 1. यह लोकतन्त्र का युग है और सत्ता का प्रयोग जनता के प्रतिनिधि करते हैं और वे जनता के प्रति जवाबदेह भी होते हैं। इस प्रकार उन्हें सत्ता का प्रयोग स्वेच्छा से नहीं

करने दिया जा सकता है। वे कुछ सिद्धान्तों से बँधे होते हैं। राज्य संगठनों का एक संगठन है। प्रत्येक संगठन कुछ नियमों के अनुसार कार्य करता है। ये सिद्धान्त किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को अपनी इच्छा से चलने से रोकते हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति की स्वतन्त्रता को सुनिश्चित करते हैं। ये सिद्धान्त सरकार के अंगों की स्थापना, उनकी शक्तियों, पारस्परिक सम्बन्ध तथा नागरिकों के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों को सुनिश्चित करते हैं। अत: प्रजातन्त्र के लिए संविधान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

2. भारतीय संविधान के प्रमुख आदर्श समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता है।

समाजवाद—एक समाजवादी राज्य वह होता है, जिसमें सभी को देश की सम्पदा तथा संसाधनों पर समान अधिकार तथा उससे लाभ प्राप्त करने के समान अवसर प्राप्त हो। हमारे देश में बहुत आर्थिक विषमताएँ विद्यमान हैं। कुछ लोग बहुत अमीर हैं तो अधिकांश लोग गरीब तथा पिछड़े हैं। अमीर और गरीब के बीच यह अन्तर कम करने के लिए हमारे नेताओं ने समाजवाद की नीति अपनाई।

धर्म-निरपेक्ष—भारत के लोग विभिन्न धर्मों जैसे—हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, बौद्ध, जैन और सिख आदि को मानते हैं। साम्प्रदायिक सौहार्द बनाने तथा देश की एकता कायम करने के लिए भारतीय संविधान की प्रस्तावना में पुष्टि की गई है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य होगा। इसका अर्थ है कि राज्य का कोई अधिकारिक धर्म नहीं होगा। सभी भारतीयों को अपनी पसन्द का धर्म अपनाने तथा प्रचार करने की स्वतन्त्रता है, लेकिन साथ ही किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को देश में साम्प्रदायिकता का प्रचार करने या विविध सम्प्रदायों के बीच घृणा या दुर्भावना फैलाने की अनुमति नहीं है।

3. अधिकांश कानून अच्छे हैं, क्योंकि वे लोगों के कल्याण के लिए बनाए गए हैं। लेकिन कुछ बुरे कानून भी होते हैं। लोग ऐसे सभी बुरे कानूनों का विरोध करते हैं। इस प्रकार एक अच्छे कानून की स्वीकृति के साथ-साथ एक बुरे कानून का विरोध भी किया जाता है।

ब्रिटिश शासन काल के दौरान, सरकार द्वारा अनेक अन्यायपूर्ण कानून पारित किए गए और लोगों ने उनका विरोध किया। वास्तव में असहमति लोकतन्त्र का अभिन्न अंग है। लोगों को स्वतन्त्र राय रखने का अधिकार है, जिसे वे अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। इसलिए प्रत्येक लोकतान्त्रिक देश में विपक्षी दल होते हैं। असहमति प्रत्येक लोकतान्त्रिक दल का अधिकार है। कभी-कभी सरकार कुछ ऐसे कानून पारित करती है, जो नैतिक दृष्टिकोण से अच्छे नहीं होते हैं। विपक्षी दल ऐसे कानूनों का संसद सभा के भीतर और बाहर दोनों जगह विरोध करते हैं। इस प्रकार, असहमति कानून बनाने की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

4. 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द का अर्थ है कि भारत पाकिस्तान, ईरान, सऊदी अरब आदि के जैसा एक धार्मिक या धर्मशासित राज्य नहीं है। यह धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करता है। राज्य का अपना कोई आधिकारिक धर्म नहीं है। सभी भारतीयों को अपनी

पसंद के किसी भी धर्म को मानने, अभ्यास करने या प्रचार करने की स्वतन्त्रता है। लेकिन साथ ही किसी भी व्यक्ति या समूह को साम्प्रदायिक प्रचार करने या विभिन्न समुदायों के बीच नफरत या दुर्भावना फैलाने की अनुमति नहीं है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

20. मौलिक अधिकार, कर्त्तव्य एवं सीमान्त समुदायों के लिए प्रयास

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) मौलिक अधिकार 2. (c) मौलिक कर्त्तव्य
3. (d) वैध, नागरिक व सामाजिक 4. (d) अनुच्छेद 17 से

(ख) 1. संवैधानिक उपचारों का अधिकार 2. मौलिक अधिकार
3. सामाजिक समानता 4. तीन प्रकार की 5. सम्पत्ति

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. (ii) 2. (v) 3. (iv) 4. (i) 5. (iii)

(ङ) 1. मौलिक अधिकार लोगों को दिए गए मूल अधिकार या विशेषाधिकार हैं जो उन्हें एक सम्मानित जीवन जीने और आत्म विकास के समान अवसर प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं।

भारतीय संविधान सभी नागरिकों को छ: मौलिक अधिकार प्रदान करता है— (i) समानता का अधिकार, (ii) स्वतन्त्रता का अधिकार, (iii) शोषण के विरुद्ध अधिकार, (iv) धर्म की स्वतन्त्रता का अधिकार, (v) सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अधिकार, (vi) संवैधानिक उपचारों का अधिकार।

2. सम्पत्ति का अधिकार मौलिक अधिकारों की सूची से हटा दिया गया। 1978 के संवैधानिक संशोधन में इसे कानूनी अधिकार बना दिया।

3. संविधान भारत के नागरिकों को छ: प्रकार की स्वतन्त्रता की गारण्टी देता है—
   (i) भाषण तथा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता
   (ii) शान्तिपूर्वक, बिना शस्त्र एकत्रित होने की स्वतन्त्रता
   (iii) संघों तथा संगठनों के निर्माण की स्वतन्त्रता
   (iv) भारत के किसी भी भाग में रहने तथा बसने की स्वतन्त्रता
   (v) भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रों में स्वतन्त्रतापूर्वक घूमने की स्वतन्त्रता
   (vi) किसी भी व्यवसाय, व्यापार या नौकरी की स्वतन्त्रता

4. संवैधानिक उपचारों का अधिकार सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकार है, क्योंकि यह संविधान द्वारा प्रदत्त अन्य सभी अधिकारों की रक्षा करता है। यह अधिकार किसी भी नागरिक को उसके किसी भी अधिकार का उल्लंघन होने पर न्यायालय में जाने की अनुमति देता है। मौलिक अधिकार न्यायोचित हैं। संविधान न्यायालयों को नागरिक की याचिका पर नागरिक के अधिकारों को बहाल करने के लिए सरकार को रिट (आदेश) जारी करने का अधिकार देता है।

5. मौलिक कर्त्तव्यों को 1976 में 42वें संशोधन द्वारा संविधान में जोड़ा गया था। संविधान मौलिक कर्त्तव्यों को निम्नलिखित रूप से निर्धारित करता है—
   (i) संविधान और उसके आदर्शों, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करना।
   (ii) हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के महान आदर्शों को संजोना।
   (iii) भारत की सम्प्रभुता, एकता और अखण्डता को बनाए रखना और उसकी रक्षा करना।
   (iv) देश की रक्षा करना और आवश्यकता के समय देश की सेवा करना।
   (v) भारत के सभी लोगों के बीच सद्भाव और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना।
   (vi) हमारी समग्र संस्कृति की समृद्ध विरासत को महत्त्व देना और संरक्षित करना।
   (vii) प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और सुधार करना।
   (viii) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीयता, जिज्ञासा और सुधार की भावना विकसित करना।
   (ix) सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना।
   (x) जीवन के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता की ओर प्रयास करना।
   (xi) छ: से चौदह वर्ष की आयु वाले बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना।

(च) 1. अधिकार और कर्त्तव्य साथ-साथ चलते हैं। लोकतान्त्रिक व्यवस्था तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक कि नागरिकों के अधिकारों और कर्त्तव्यों में सन्तुलन स्थापित न हो। सरकार अपने नागरिकों के अधिकारों की संरक्षक है। इसके बदले में नागरिकों को अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। नागरिक अपने मौलिक अधिकारों का आनन्द तभी ले सकते हैं जब वे अपने मौलिक कर्त्तव्यों का पालन करें। नागरिकों को देशभक्त बनाने और सद्भाव के विचारों को बढ़ावा देने और राष्ट्र को मजबूत करने के लिए मौलिक कर्त्तव्यों को संविधान में शामिल किया गया है।

2. शोषण के विरुद्ध अधिकार निम्नानुसार काम करता है—
गरीबी समाज के बड़े वर्ग द्वारा शोषण का मूल कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत से लोग ऊँची ब्याज दरों पर रुपये उधार लेते हैं, जब वे रुपये लौटाने में असमर्थ होते हैं तो उन्हें महाजन के लिए बिना वेतन के काम करने के लिए बाध्य किया जाता है,

जिसे बेगार या बंधुआ मजदूरी कहते हैं। इसी प्रकार, स्त्रियों और बच्चों का भी शोषण किया जाता है। आतिशबाजी, स्लेट बनाना, माचिस, खदानों आदि जैसे अनेक जोखिम भरे उद्योगों में गरीब बच्चों को बड़ी संख्या में नियोजित किया जाता है। वे बहुत कम वेतन पर और लम्बे समय तक पूरी तरह से अस्वच्छ परिस्थितियों में काम करते हैं। संविधान ऐसे सभी शोषित वर्गों को संरक्षण प्रदान करता है। इसके लिए बेगार, बालश्रम, स्त्रियों के देह शोषण आदि को निषिद्ध किया गया है।

3. संविधान के भाग IV-ए में निहित कर्त्तव्य केवल परिभाषित करते हैं कि राज्य संविधान के भाग III में सन्निहित अधिकारों के बदले में नागरिकों से क्या अपेक्षा करता है। कुछ आलोचकों को संदेह है कि क्या इन कर्त्तव्यों को शामिल करने से कोई उपयोगी उद्देश्य पूरा होगा, क्योंकि कुछ कर्त्तव्यों पर स्पष्ट रूप से काम नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए, 'वैज्ञानिक सोच' और 'मानवतावाद' जैसे शब्दों की अलग-अलग व्याख्या की जा सकती है। इसके अलावा, इन कर्त्तव्यों के प्रवर्तन के लिए कोई जबरदस्ती तंत्र नहीं है। आलोचकों की राय में, भाग IV-ए में और अधिक संशोधन और परिवर्तन की आवश्यकता है। फिर भी मौलिक कर्त्तव्यों को नागरिकों को देशभक्त बनाने और सद्भाव के विचार को बढ़ावा देने तथा राष्ट्र को मजबूत करने के लिए संविधान में शामिल किया गया है।
4. उपेक्षित समुदायों, जैसे कि अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जनजातियाँ और अन्य पिछड़ी जातियों को उनके अधिकारों का ज्ञान कराने के लिए संविधान में निम्नलिखित प्रावधान किए गए हैं—
   (i) यदि इन वंचित समुदायों के लिए कोई विशेष प्रावधान किया जाता है तो वह भेदभाव नहीं माना जाएगा। [अनुच्छेद 15(1)]
   (ii) अस्पृश्यता की प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। अब यह एक दण्डनीय अपराध है। [अनुच्छेद 17]
   (iii) सभी धार्मिक संस्थाएँ हिन्दू जातियों तथा अन्य वर्गों के लिए खुली रहेंगी। [अनुच्छेद 25(2)(b)]
   (iv) धर्म, जाति, प्रजाति या भाषा के आधार पर किसी भी भारतीय नागरिक को किसी भी सरकारी या सरकारी सहायता प्राप्त शैक्षिक संस्थान में प्रवेश देने से मना नहीं किया जा सकता है। [अनुच्छेद 29(2)]
   (v) केन्द्रीय तथा राज्य के सरकारी कार्यालयों के पदों पर तथा सेवाओं में अनुसूचित जातियों-जनजातियों का पूरा ध्यान रखा जाएगा। [अनुच्छेद 355]
   (vi) राज्य के नीति निर्देशक तत्त्वों के अनुसार, राज्य अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों की रक्षा और विकास करेगा। [अनुच्छेद 46]
   (vii) अनुसूचित जातियों-जनजातियों के लिए लोकसभा एवं राज्य विधानसभाओं में राज्य की कुल जनसंख्या में उनकी जनसंख्या के अनुपात के आधार पर सीटें आरक्षित की जाएँगी। [अनुच्छेद 330 एवं 332]

5. सरकार द्वारा सीमांत वर्ग के लिए उठाए गए कदम निम्नलिखित हैं—

(i) सन् 1955 में अस्पृश्यता उन्मूलन अधिनियम बनाया गया। कोई भी व्यक्ति किसी भी रूप में अस्पृश्यता का व्यवहार करने पर कानून द्वारा दण्डित होगा।

(ii) केन्द्रीय तथा राज्य सरकारें अपनी सेवाओं में अनुसूचित जातियों-जनजातियों तथा अन्य पिछड़ी जातियों के लिए सीटों का आरक्षण देती हैं। आरक्षण के अतिरिक्त, इन जातियों को अनेक सुविधाएँ दी जाती हैं; जैसे—आयु, योग्यता तथा अनुभव में छूट आदि।

(iii) सीमान्त समुदायों को शिक्षा प्रदान करने हेतु विशेष सुविधाएँ भी दी गई हैं, इनमें शामिल हैं—

(अ) प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं के लिए कोचिंग की सुविधा, जिसके लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारों से धन की व्यवस्था की जाती है।

(ब) कक्षा VI से X तक राज्य सरकारों द्वारा छात्रवृत्तियाँ।

(स) पाठ्य-पुस्तकें, पुस्तकीय अनुदान, ऋण इत्यादि।

(द) अनुसूचित जातियों-जनजातियों तथा लड़कियों के लिए छात्रावास की व्यवस्था।

(य) जनजातीय क्षेत्रों में व्यावसायिक प्रशिक्षण।

(iv) अलग-अलग राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में उनके हितों की रक्षा और प्रचार-प्रसार के लिए अलग-अलग कल्याण विभाग बनाए गए हैं।

6. कई देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं दिया जाता है, राजनीति को महिलाओं का व्यवसाय नहीं माना जाता है। यहाँ तक कि अतीत में भी राजनीति हमेशा मुख्य रूप से एक मर्दाना व्यवसाय रही है। वहाँ महिलाओं की भूमिका सिर्फ अपने पति द्वारा बच्चे पैदा करना और उन्हें पालना और घर संभालना है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

❑

21. संसदीय सरकार

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) विधायिका 2. (b) लोकसभा 3. (b) दो 4. (b) 12
5. (d) 245 6. (b) 25 वर्ष

(ख) 1. गैर-सरकारी 2. 61 3. राष्ट्रपति 4. लोकसभा अध्यक्ष
5. 30

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (v) 3. (i) 4. (ii) 5. (iii)

(ङ) 1. कार्यपालिका एवं विधायिका के संबंधों के आधार दो प्रकार की सरकारों के नाम निम्नलिखित हैं—(i) संसदीय सरकार (ii) अध्यक्षात्मक सरकार।

2. सरकार के तीनों अंगों के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) विधायिका (ii) कार्यपालिका (iii) न्यायपालिका

3. संघीय विधानमण्डल को संसद कहते हैं। इसके दो सदन–लोकसभा तथा राज्यसभा होते हैं।

4. लोकसभा की बैठकों में प्रश्नकाल वह विशेष समय होता है, जब किसी भी सदस्य को प्रश्न पूछने का अधिकार होता है। हालांकि, लोकसभा अध्यक्ष को प्रश्नकाल के दौरान किसी सदस्य को प्रश्न पूछने की अनुमति देने या न देने का अधिकार होता है।

5. वित्त विधेयक को केवल लोकसभा में प्रस्तुत किया जाता है।

6. कभी–कभी जब संसद का अधिवेशन नहीं चल रहा होता है, तब ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिससे कि एक विशेष कानून की आवश्यकता होने लगती है। ऐसी स्थिति में राष्ट्रपति एक अध्यादेश जारी करता है, जिसे छ: महीने तक कानून जैसी मान्यता प्राप्त होती है। जब संसद की बैठक होती है तो इसे संसद द्वारा अनुमोदित किया जाता है।

(च) 1. संसद देश की सर्वोच्च कानून बनाने वाली संस्था है। इसके द्वारा बनाए गए कानून पूरे भारत पर लागू होते हैं। कानून बनाने के अतिरिक्त संसद अन्य अनेक कार्य भी करती है। इसकी कानून बनाने की प्रक्रिया तथा कुछ अन्य कार्य निम्नलिखित हैं—

कानून बनाने की प्रक्रिया

संघ सूची के सभी 100 विषयों पर संसद नए कानूनों का निर्माण कर सकती है या पुराने कानूनों में संशोधन कर सकती है। यह समवर्ती सूची के 52 विषयों के अतिरिक्त राज्य सूची के विषयों पर भी कानून बना सकती है। संघ की संसद को संविधान में परिवर्तन करने का भी पूर्ण अधिकार है।

अन्य कार्यों में सम्मिलित हैं—

(i) सरकार के वित्त पर नियन्त्रण
(ii) कार्यपालिका पर नियन्त्रण
(iii) न्यायिक कार्य
(iv) चुनावी कार्य
(v) संविधान संशोधन।

2. लोकसभा संसद का निचला सदन होता है। यह जनता के द्वारा चयनित प्रतिनिधियों से बनती है। इसमें 550 तक सदस्य हो सकते हैं। इनमें से 530 सदस्य राज्यों से तथा 20 सदस्य केन्द्रशासित प्रदेशों से प्रत्यक्ष चुने जाते हैं। राष्ट्रपति एंग्लो–इण्डियन समुदाय से दो सदस्यों को नामांकित कर सकता है। वर्तमान में, लोकसभा में 545 सदस्य हैं।

3. लोकसभा अध्यक्ष के निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण कार्य हैं—

(i) वह लोकसभा की बैठकों की अध्यक्षता करता है तथा सदन में अनुशासन बनाए रखता है।

(ii) वह सदस्यों को सदन में बोलने के लिए समय निश्चित करता है।

(iii) वह लोकसभा की बैठकों की समाप्ति की घोषणा कर सकता है।

(iv) प्रस्ताव या बिल केवल उसकी अनुमति से ही सदन में रखे जाते हैं।

(v) वह प्रस्तावों या अन्य मामलों में मतदान कराता है।

(vi) वह दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन की अध्यक्षता करता है।

(vii) वह सुनिश्चित करता है कि कोई प्रस्ताव धन विधेयक है या नहीं।

(viii) वह किसी भी सदस्य को उसके दुर्व्यवहार के लिए निलम्बित कर सकता है।

(ix) वह सदन के सदस्यों के विशेषाधिकार की रक्षा करता है।

(x) कोरम पूरा न होने पर वह सदन को स्थगित कर सकता है। इसका अर्थ यह है कि वह जब तक 1/10 सदस्य उपस्थित न हों तब तक संसद की कार्यवाही नहीं चल सकती।

(xi) वह प्रश्नकाल के दौरान किसी सदस्य को प्रश्न रखने की अनुमति दे भी सकता है तथा अस्वीकार भी कर सकता है।

(xii) वह स्थगन या अविश्वास प्रस्ताव आदि को स्वीकार करता है।

(xiii) गतिरोध होने की स्थिति में उसके पास निर्णायक मत होता है।

(xiv) वह विभिन्न संसदीय समितियों की नियुक्ति करता है तथा उनके कार्य में निर्देशन देता है।

4. सैद्धान्तिक रूप से कहें तो संसद के दोनों सदन—लोकसभा और राज्यसभा को समान शक्तियाँ प्राप्त हैं, लेकिन वास्तव में लोकसभा को निम्नलिखित कारणों से अधिक शक्तिशाली माना जाता है—

(i) लोकसभा के सदस्य सीधे लोगों द्वारा चुने जाते हैं, जबकि राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव उनकी राज्य विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा किया जाता है। लोकसभा के सदस्य उस निर्वाचन क्षेत्र के लोगों के प्रति जवाबदेह होते हैं, जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए संसद से संबंधित सभी मामलों में लोकसभा का पलड़ा भारी रहता है।

(ii) एक साधारण विधेयक दोनों सदनों में से किसी में भी पेश किया जा सकता है, लेकिन धन विधेयक केवल लोकसभा में ही पेश किया जा सकता है। यदि किसी विधेयक को लेकर दोनों सदनों के बीच गतिरोध उत्पन्न हो जाता है तो उसे दोनों सदनों के संयुक्त सत्र में सुलझा लिया जाता है। राज्यसभा की तुलना में दोगुनी से अधिक सदस्यता वाली लोकसभा का संयुक्त सत्र में पलड़ा भारी रहता है।

(iii) दोनों सदनों को प्रश्न पूछने या सरकार के खिलाफ विभिन्न प्रस्ताव लाने का समान अधिकार है। फिर भी लोकसभा का पलड़ा भारी है। मन्त्रिपरिषद् मुख्य रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होता है। यदि राज्यसभा अविश्वास प्रस्ताव पारित कर देती है, तो सरकार इस्तीफा देने के लिए बाध्य नहीं होती है, लेकिन यदि लोकसभा ऐसे अविश्वास प्रस्ताव को पारित कर देती है तो सरकार को इस्तीफा देना पड़ता है।

5. संघीय सूची में 100 विषय सम्मिलित होते हैं, जिन पर संसद ही कानून बना सकती है। इनमें से कुछ विषय हैं—(i) रेलवे, (ii) राष्ट्रीय राजमार्ग, (iii) जहाजरानी, (iv) वायु परिवहन, (v) विदेशी मामले, (vi) अन्तर्राष्ट्रीय समझौते, (vii) संयुक्त राष्ट्र संघ, (viii) मौसम विज्ञान, (ix) थल सेना, (x) वायु सेना, (xi) जल सेना, (xii) डाक एवं तार विभाग, (xiii) बेतार का तार, (xiv) टेलीफोन, (xv) साख मुद्रा, (xvi) सिक्के, (xvii) प्राचीन स्मारक आदि।
6. समवर्ती सूची, जिसे सूची III (सातवीं अनुसूची) भी कहा जाता है, भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची में दी गई 52 विषयों की एक सूची है। संसद और राज्य विधानमण्डल दोनों समवर्ती सूची में निर्दिष्ट विषयों पर कानून बना सकते हैं। इसमें लगभग 52 विषय सम्मिलित हैं, जैसे—(i) विवाह, (ii) चिकित्सा, (iii) संयुक्त परिवार, (iv) अन्य व्यवसाय, (v) पुस्तकें, (vi) समाचार-पत्र, (vii) ट्रेड यूनियन, (viii) श्रम कल्याण, (ix) कारखानें, (x) धार्मिक संस्थाएँ, (xi) दीवानी तथा फौजदारी प्रक्रियाएँ, (xii) विद्युत आदि। लेकिन इन विषयों पर केन्द्रीय विधानमण्डल (संसद) द्वारा पारित कानून द्वारा राज्य विधायिका द्वारा पारित कानूनों पर लागू होंगे।
7. किसी चुनाव या जनमत संग्रह में, गुप्त मतदान का उपयोग किया जाता है, जिससे मतदाता की पसंद गुप्त रहे और मतदाता को डराने-धमकाने और संभावित वोट खरीदने के प्रयासों को रोका जा सके। इस प्रणाली में, कागज के एक कोरे टुकड़े का उपयोग किया जाता है। जिस पर प्रत्येक मतदाता किसी को अपनी पसंद बताए बिना अपनी पसंद लिखता है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

22. संघीय कार्यपालिका

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) निर्वाचन मण्डल द्वारा 2. (d) राष्ट्रपति द्वारा 3. (b) मुख्यमंत्री
4. (a) राष्ट्रपति 5. (a) उपराष्ट्रपति

(ख) 1. निर्वाचक मण्डल 2. 35 3. राष्ट्रपति 4. प्रधानमंत्री 5. राज्य

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (v) 3. (i) 4. (iii) 5. (ii)

(ङ) 1. भारतीय संघ का मुख्य कार्यकारी भारत का राष्ट्रपति होता है। उसका चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से एक निर्वाचक मण्डल द्वारा किया जाता है, जिसमें संसद के दोनों सदनों और राज्य विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य शामिल होते हैं। चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली द्वारा होता है, जिसका अर्थ है कि निर्वाचक मण्डल के प्रत्येक सदस्य के पास निश्चित संख्या में वोट होते हैं।

2. केन्द्र सरकार का वास्तविक मुखिया (प्रधान) प्रधानमंत्री होता है।

3. मन्त्रिपरिषद् में तीन स्तर के मन्त्री होते हैं—(i) कैबिनेट मन्त्री (ii) राज्यमन्त्री (iii) उपमन्त्री।

4. महाभियोग राष्ट्रपति को उसके पद से हटाने की एक विशेष प्रक्रिया होती है। महाभियोग का प्रस्ताव संसद द्वारा दो-तिहाई बहुमत से पारित किया जाता है। महाभियोग का प्रस्ताव तभी पारित होता है, जब यह साबित कर दिया जाए कि राष्ट्रपति ने संसद के विरुद्ध काम किया है।

5. यदि संसद में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिलता है तब दो या दो से अधिक दल आपस में मिलते हैं एक नेता का चुनाव करते हैं। इस प्रकार बनी सरकार को गठबंधन की सरकार कहते हैं।

(च) 1. प्रधानमंत्री सरकार का वास्तविक मुखिया होता है। उसकी स्थिति निम्नलिखित शक्तियों और उसके कार्यों द्वारा महत्त्वपूर्ण होता है—

(i) वह मन्त्रिपरिषद् के सदस्यों की सूची बनाता है तथा उनके विभागों का आवण्टन करता है।

(ii) वह सभी मन्त्रियों के कार्यों की देखभाल करता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उन्हें सलाह भी देता है।

(iii) वह सरकार का प्रमुख प्रवक्ता होता है।

(iv) वह मन्त्रिमण्डल और मन्त्रिपरिषद् की बैठकों की अध्यक्षता करता है।

(v) वह गलती करने वाले मन्त्रियों से कारण पूछ सकता है।

(vi) वह राष्ट्रपति को प्रमुख नियुक्तियों; जैसे—सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों, राज्यपालों, राजदूतों आदि के विषय में सलाह देता है।

(vii) वह राष्ट्रपति को लोकसभा का सत्र बुलाने, स्थगित करने या भंग करने के विषय में भी सलाह देता है।

(viii) वह राष्ट्रपति तथा मन्त्रिपरिषद् के बीच कड़ी का कार्य करता है। प्रधानमन्त्री न केवल मन्त्रिमण्डल का नेता होता है, बल्कि वह संसद का भी नेता होता है। प्रधानमन्त्री द्वारा सभी महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय नीति के संबंध में घोषणाएँ संसद में की जाती हैं। सरकार की सफलता या विफलता का भार उस पर होता है।

2. राष्ट्रपति निम्नलिखित स्थितियों में आपातकाल की घोषणा कर सकता है—
   (i) राष्ट्रीय आपातकाल—विदेशी आक्रमण, देश की सुरक्षा और शान्ति के लिए खतरा, गृहयुद्ध, विद्रोह आदि के कारण। (अनुच्छेद 352)
   (ii) संवैधानिक आपातकाल—जब संवैधानिक व्यवस्था समाप्त हो जाए या राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हो जाए। (अनुच्छेद 356)
   (iii) वित्तीय आपातकाल—जहाँ देश में वित्तीय अस्थिरता या ऋण व्यवहार्यता ध्वस्त हो जाए। (अनुच्छेद 360)
3. मन्त्रिपरिषद् एक समूह के रूप में कार्य करती है, जिसका नेता प्रधानमन्त्री होता है। यह 'सामूहिक जिम्मेदारी के सिद्धान्त' पर काम करता है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक मंत्री प्रधानमंत्री द्वारा लिए गए किसी भी निर्णय के लिए जिम्मेदार है। मन्त्रिपरिषद् सरकार के कार्यों के लिए सामूहिक रूप से संसद के प्रति जवाबदेह है। यदि प्रधानमंत्री के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होता है तो यह सम्पूर्ण मन्त्रिपरिषद् के विरुद्ध अविश्वास मत के बराबर होता है। इसी प्रकार किसी मंत्री द्वारा पेश किया गया कोई विधेयक लोकसभा द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है तो इसे मन्त्री दल के प्रति अविश्वास मत माना जाता है और पूरे समूह को इस्तीफा देना पड़ता है। मन्त्रियों के बीच मतभेद हो सकते हैं, लेकिन वे इसे खुलकर व्यक्त नहीं कर सकते हैं। इन सभी से निकट सहयोग से काम करने की अपेक्षा की जाती है। ये एक साथ तैरते और डूबते हैं। इस तथ्य को 'सामूहिक उत्तरदायित्व के सिद्धान्त' के नाम से जाना जाता है।
4. राष्ट्रपति की विभिन्न शक्तियाँ (कार्य) निम्नलिखित हैं—
   (i) कार्यपालक शक्तियाँ—राष्ट्रपति भारतीय संघ का मुख्य कार्यकारी होता है। वह कार्यपालिका के उच्च अधिकारियों की नियुक्ति करता है। वह प्रधानमन्त्री तथा उसकी संस्तुति पर मन्त्रिपरिषद् की नियुक्ति करता है। वह राज्य के राज्यपालों, एटॉर्नी जनरल, कॅम्प्ट्रोलर तथा ऑडिटर जनरल, लेफ्टिनेण्ट गवर्नर तथा केन्द्रशासित प्रदेशों के मुख्य आयुक्तों, संघीय लोक सेवा आयोग के चैयरमैन तथा सदस्यों, सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीशों तथा अन्य न्यायाधीशों की भी नियुक्ति करता है। वह सैन्य बलों का सर्वोच्च सेनापति होता है। वह राजदूतों को भेजता है तथा स्वागत करता है। सभी सन्धियाँ उसी के नाम द्वारा हस्ताक्षरित होती हैं।
   (ii) विधायी शक्तियाँ—राष्ट्रपति चुनावों के बाद संसद के प्रथम सत्र को सम्बोधित करता है। वह संसद के सत्र बुलाता और स्थगित करता है। उसकी अनुमति के बिना कोई भी विधेयक कानून नहीं बन सकता। जब संसद का सत्र जारी नहीं होता, उस समय यह 'अध्यादेश' जारी कर सकता है। वह संसद को भी भंग कर सकता है। युद्ध की घोषणा के लिए भी उसकी सहमति आवश्यक होती है।

(iii) **न्यायिक शक्तियाँ**—न्यायालय द्वारा सजा पाए किसी भी व्यक्ति की याचिका पर राष्ट्रपति उसकी सजा कम कर सकता है या उसे माफ कर सकता है।

(iv) **वित्तीय शक्तियाँ**—राष्ट्रपति की संस्तुति के बिना कोई भी बजट संसद में पेश नहीं किया जा सकता। वह विशेष खर्चों के लिए भारत की आपातकालीन कोष से अग्रिम धन देता है।

(v) **आपातकालीन शक्तियाँ**—जब देश की शान्ति और सुरक्षा को खतरा हो या किसी राज्य में संवैधानिक व्यवस्था समाप्त हो जाए या देश में वित्तीय संकट उत्पन्न हो जाए तो राष्ट्रपति आपातकाल की घोषणा कर सकता है।

5. अशोक चुनाव नहीं लड़ सकता, क्योंकि लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को घोषित अपराधी, दिवालिया या मानसिक रूप से अस्वस्थ नहीं होना चाहिए। चूँकि अशोक घरेलू हिंसा के मामले में शामिल था और उसने कई मौकों पर रिश्वत भी ली है। इसलिए वह चुनाव लड़ने के लिए पात्र नहीं है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

23. न्यायपालिका

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) सर्वोच्च न्यायालय 2. (b) उच्चतम न्यायालय
3. (a) नई दिल्ली 4. (b) पंजाब-हरियाणा 5. (c) सेवानिवृत्त न्यायाधीश

(ख) 1. अभिलेख 2. सत्र न्यायाधीश 3. हमारे संविधान
4. 65 5. जिला न्यायाधीश

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (iv) 3. (i) 4. (v) 5. (iii)

(ङ) 1. भारत का राष्ट्रपति सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है।

2. लोक अदालतें लोगों की अदालते हैं। वे एक स्वैच्छिक संस्थाएँ हैं, जिसके अध्यक्ष सेवानिवृत्त न्यायाधीश होते हैं। वे जन-साधारण को कम खर्च एवं शीघ्र न्याय दिलाने में उपयोगी होती हैं।

3. न्यायिक वादों को दो प्रमुख श्रेणियों में रखा जाता है—दीवानी तथा फौजदारी। दीवानी वादों में अतिचार, लापरवाही, अनुबन्ध का उल्लंघन, वैवाहिक मामले आदि, जबकि गंभीर अपराधिक मामले जैसे—हत्या, आपराधिक षडयन्त्र,

धोखाधड़ी, खाद्य पदार्थों में मिलावट आदि को फौजदारी वादों में वर्गीकृत किया जाता है।

4. सूचना-प्राथमिकी (प्रथम सूचना रिपोर्ट) वह सूचना होती है, जिसे पुलिस अधिकारी किसी अपराध के घटित होने पर प्राप्त करता है। यह आमतौर पर संज्ञेय अपराध के पीड़ित द्वारा पुलिस में दर्ज कराई गई शिकायत है, लेकिन इसे कोई भी व्यक्ति दर्ज करा सकता है, जो किसी संज्ञेय अपराध के घटित होने के बारे में जानता है।
5. मुख्य न्यायाधीश एवं अन्य न्यायाधीशों की योग्यताएँ निम्नलिखित हैं—
   (i) वह भारत का नागरिक होना चाहिए।
   (ii) उसे कम से कम दस वर्षों का किसी न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में कार्य करने का अनुभव होना चाहिए या उच्च न्यायालय में दस वर्ष तक अधिवक्ता होना चाहिए या प्रसिद्ध विधिवेत्ता होना चाहिए।

(च) 1. भारत में समेकित न्यायिक प्रणाली है। पदानुक्रमित प्रकृति होने के कारण इसकी संरचना पिरामिडाकार है। पिरामिड के शिखर पर भारत का सर्वोच्च न्यायालय है। राज्यों में सबसे ऊँचे उच्च न्यायालय होते हैं। राज्य के जिलों के निचले न्यायालय उच्च न्यायालयों के अधीन होते हैं। केन्द्र तथा राज्यों में क्रमशः अपने कानून लागू करने के लिए अलग न्यायालयों की व्यवस्था नहीं है।

2. राज्य में उच्च न्यायालय न्याय की सर्वोच्च अदालत होती है। इसे निम्नलिखित क्षेत्राधिकार तथा शक्तियाँ प्राप्त हैं—
   (i) प्रारम्भिक क्षेत्राधिकार—उच्च न्यायालय का प्रारम्भिक क्षेत्राधिकार मौलिक अधिकारों तथा राज्य चुनावों के विवादों से संबंधित होता है।
   (ii) अपीलीय क्षेत्राधिकार—उच्च न्यायालय अधीनस्थ न्यायालयों के दीवानी तथा फौजदारी के मुकदमों की अपीलों को सुनता है।
   (iii) पर्यवेक्षीय क्षेत्राधिकार—उच्च न्यायालय निचले न्यायालयों के अभिलेख देखता है तथा उनके कार्यों पर नियन्त्रण रखता है। यह अपने सभी निर्णयों तथा कार्यवाहियों का रिकॉर्ड रखता है, जिन्हें अधीनस्थ न्यायालयों के वकील दृष्टान्त के रूप में प्रस्तुत करते हैं।
3. क्षेत्राधिकार वह शक्ति और अधिकार है, जो अदालत या न्यायाधीश को तथ्यों की स्थिति पर कानून की सजा सुनाने या कानून द्वारा प्रदान किए गए उपायों के लिए संवैधानिक रूप से प्रदान किया जाता है।
   उच्च न्यायालयों की शक्तियों तथा क्षेत्राधिकार के लिए प्रश्न संख्या (च का) 2 देखें।
4. न्यायपालिका सरकार का वह अंग है, जो व्यक्तियों के आपसी विवादों का कानून के अनुसार निर्णय करती है तथा जो कानून को तोड़ते हैं व शान्ति एवं व्यवस्था को भंग करते हैं, उन्हें कानून के अनुसार सजा देती है। न्यायपालिका व्यक्तियों तथा सरकार के मध्य, राज्यों के मध्य तथा राज्य एवं केन्द्र के मध्य उत्पन्न होने वाले विवादों को भी सुलझाती है। लोकतन्त्र में एक स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष न्यायपालिका

का होना आवश्यक है। यह न केवल लोगों के अधिकारों एवं स्वतन्त्रता की बल्कि लोकतान्त्रिक व्यवस्था की भी रक्षा करती है। यह संविधान की संरक्षिका तथा देश का सर्वोच्च कानून है। यह अपने समक्ष विचार के लिए लाए गए विवादों के संबंध में कानूनों को लागू करती है, उनकी व्याख्या करती है तथा वर्तमान कानूनों को नया अर्थ एवं विस्तार प्रदान करती है।

5. सरकारी अभियोक्ता राजपत्रित अधिकारी होते हैं, जिन्हें समाज को अपराध मुक्त रखने के लिए, कानून तोड़ने वाले व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने में सहायता देने के लिए राज्य द्वारा नियुक्त किया जाता है। उनके कार्यालय न्यायालय भवन में स्थित होते हैं। वर्तमान अपराध व्यवस्था इस सिद्धान्त पर आधारित है कि किसी व्यक्ति द्वारा किया गया अपराध समूचे समाज के विरुद्ध किया गया अपराध है। अतएव अपराध का अभियोजन तथा दण्डित करना राज्य का दायित्व है। राज्य की ओर से अभियोजन का कार्य सरकारी अभियोक्ता द्वारा किया जाता है। सरकारी अभियोक्ता से निष्पक्ष तथा तटस्थ भूमिका का निर्वाह करना तथा पुलिस द्वारा लगाए गए आरोपों के अभियोजन में सहायता करना अपेक्षित है।
6. पुलिस का मुख्य कार्य कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना, अपराधों की जाँच करना, अपराधियों को गिरफ्तार करना, साक्ष्य एकत्र करना और सजा दिलाना है। लेकिन आजकल पुलिस से अनेक कल्याणकारी कार्य करने की अपेक्षा की जाती है। जिसमें कमजोर वर्गों, महिलाओं, बच्चों और विकलांग आदि की सेवा भी शामिल है। पुलिस की कार्यकुशलता निम्नलिखित मानदण्डों से आँकी जाती है—
   (i) समाज में सुरक्षा की भावना।
   (ii) अपराध रोकने में लोगों का सहयोग एवं सहभागिता की इच्छा।
   (iii) लोगों के सहयोग से कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना।
   (iv) महिलाओं, बच्चों तथा अपंग लोगों के प्रति पुलिस का सेवाभाव।
   (v) प्राकृतिक आपदाओं के समय पुलिस द्वारा लोगों की सेवा।
   (vi) सूचना प्राथमिकी (एफ०आई०आर०) दर्ज करना, घटना स्थल पर पुलिस का तुरन्त पहुँचना तथा उचित जाँच करना।
7. एक न्यायाधीश का पद अत्यधिक जिम्मेदारी वाला होता है और इस पद के लिए प्रासंगिक कानूनी योग्यता और पाँच या सात साल या उससे भी अधिक वर्षों का अनुभव और जिम्मेदारियों को समझने, उचित निर्णय लेने और पद के साथ न्याय करने में सक्षम होना आवश्यक है।
8. यदि अभियुक्त निचली अदालत द्वारा लिए गए फैसले से बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं है तो वह अपीलीय क्षेत्राधिकार के तहत न्याय पाने के लिए ऊपरी अदालत में जा सकता है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

24. सीमान्तीकरण और सामाजिक न्याय

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) मैला ढोना 2. (a) अनुसूचित जातियों की 3. (d) 16.8%
4. (d) 84.33 मिलियन जनसंख्या 5. (c) मंडल आयोग

(ख) 1. अस्पृश्यता 2. 1993 3. मुसलमान, ईसाई, सिख
4. मैला ढोना 5. सीमान्त

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. (ii) 2. (i) 3. (iv) 4. (iii)

(ङ) 1. हाशिये पर रहने वाले समूह समाज के वे समूह हैं, जो अतीत में विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कारणों से उपेक्षित रहे। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक को हाशिए पर रहने वाले समूह में शामिल किया गया है।

2. अनुसूचित जातियों की कोई विशिष्ट परिभाषा नहीं है। समाज की वे जातियाँ जिन्हें पहले अछूत समझा जाता था, अनुसूचित जातियाँ कहलाती हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, देश के 201.4 मिलियन लोग (देश की कुल जनसंख्या का लगभग 16.8% भाग अनुसूचित जातियों) के रूप में दर्ज है।

3. संविधान में अनुसूचित जनजातियों की कोई विशिष्ट परिभाषा नहीं दी गई है। फिर भी ये उन समुदायों का प्रतिनिधित्व करती हैं; जो आर्थिक रूप से पिछड़ी हैं तथा अधिकांशत: दुर्गम पर्वतीय और घने जंगलों वाले क्षेत्रों में रहते हैं। उनकी आबादी 84.33 मिलियन (देश की कुल आबादी का 8.6%) है।

4. अल्पसंख्यक, चाहे भाषायी हो या धार्मिक, वे लोग हैं जिनकी संख्या किसी प्रदेश या राज्य की जनसंख्या में अल्प होती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, उनकी जनसंख्या 242 मिलियन (भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 20% भाग) थी। मुसलमान, ईसाई तथा सिखों को अल्पसंख्यक माना जाता है।

(च) 1. सामाजिक न्याय का तात्पर्य यह है कि सामाजिक दृष्टि से नागरिकों के बीच कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। उन्हें आत्म-विकास के सभी अवसर मिलने चाहिए। वास्तव में, भारत में सामाजिक न्याय मौजूद नहीं है, क्योंकि भारतीय समाज में विभिन्न सामाजिक असमानताएँ मौजूद हैं। ये असमानताएँ जाति, रंग, पंथ, भाषा, लिंग आदि से संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त समाज में आर्थिक असमानताएँ भी मौजूद हैं। समाज में आज भी सम्पन्न वर्ग द्वारा शोषण किया जाता है।

2. इस प्रश्न के उत्तर के लिए अध्याय 20 के (च का) प्रश्न संख्या 4 का उत्तर देखें।

3. भारत में अस्पृश्यता की प्रथा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। यह उच्च जाति के हिन्दुओं द्वारा निचली जाति के हिन्दुओं के विरुद्ध अलगाव की प्रथा है। अस्पृश्यता विभिन्न रूपों में रही है; जैसे—

(i) अनुसूचित जाति के लोगों को मन्दिरों में प्रवेश करने तथा वहाँ पूजा-अर्चना न करने देना।

(ii) अनुसूचित जाति के लोगों को तालाब में नहाने तथा कुँओं से पानी लेने से रोकना।

(iii) अनुसूचित जाति के लोगों के बच्चों को शिक्षा देने से इनकार करना।

(iv) अनुसूचित जाति के लोगों को ऊँची जातियों की ग्रामीण गलियों, सड़कों पर चलने तथा आवासीय क्षेत्रों में प्रवेश से रोकना।

(v) रोजगार तथा नौकरियों में अनुसूचित जाति के लोगों से भेदभाव का व्यवहार करना।

(vi) अनुसूचित जाति के लोगों को अलग बर्तनों में भोजन तथा चाय आदि देना।

(vii) अनुसूचित जाति के लोगों को तुच्छ कार्यों एवं अस्वच्छ व्यवसायों को अपनाने के लिए मजबूर करना।

(viii) अनुसूचित जाति के लोगों को उच्च जातियों के साथ उठने-बैठने, विवाह करने तथा भोजन करने से इनकार करना।

4. सफाई कर्मियों द्वारा अपने सिर पर टोकरियों में मानव मल ढोने की प्रथा को मैला ढोना के रूप में जाना जाता है। यह रीति सदियों से चली आ रही थी, जब तक कि 'फ्लश' प्रणाली का विकास नहीं हुआ था। यह निसन्देह शर्मनाक थी। अतएव मानवाधिकारों के कार्यकर्त्ताओं ने इस प्रथा की ओर निन्दा की। सरकार ने मैला ढोने की प्रथा के विरुद्ध एक कानून पारित किया। शुष्क शौचालयों का (निषेध) मैला ढोने वालों का रोजगार अधिनियम (1993) के तहत शुष्क शौचालयों का निर्माण कराने वालों तथा उन्हें रोजगार देने वालों को एक वर्ष तक का कारावास एवं ₹ 2000 तक के आर्थिक दण्ड का प्रावधान किया गया है।

5. (i) अनुच्छेद 15 के तहत, पिछड़े वर्गों से अस्पृश्यता और दुर्व्यवहार करने पर कानूनी रूप से प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

(ii) भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15(1) के अनुसार, पंथ, प्रजाति, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा, लेकिन यदि अनुसूचित जाति सहित पिछड़े वर्गों और अनुसूचित जनजातियों के लिए कोई विशेष प्रावधान किया गया है तो इसे भेदभाव नहीं माना जाएगा।

(iii) संविधान के अनुच्छेद 17 के द्वारा अस्पृश्यता के व्यवहार को निषिद्ध घोषित कर दिया गया है। अब यह एक दण्डनीय अपराध है।

(iv) संविधान के अनुच्छेद 25(2) (बी) के अनुसार, सभी धार्मिक संस्थाएँ हिन्दू जातियों और अन्य वर्गों के लिए खुली रहेंगी।

(v) अनुच्छेद 29(2) के अनुसार, धर्म, जाति, प्रजाति या भाषा के आधार पर किसी भी भारतीय नागरिक को किसी भी सरकारी या सरकारी सहायता प्राप्त शैक्षिक संस्थान में प्रवेश देने से मना नहीं किया जाएगा।

(vi) अनुच्छेद 330 और 332 के द्वारा अनुसूचित जातियों-जनजातियों के लिए लोक सभा एवं राज्य विधान सभाओं में राज्य की कुल जनसंख्या में उनकी जनसंख्या के अनुपात के आधार पर सीटें आरक्षित की जाएँगी।

(vii) भारत का संविधान धर्म, रंग, जाति, समुदाय या भाषा के नाम पर पार्कों, सिनेमाघरों, भोजनालयों, स्कूलों, कुँओं, टैंकों, दुकानों आदि के उपयोग में भेदभाव पर प्रतिबंध लगाता है। यह स्पष्ट है कि सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए सरकार ने संविधान में किए गए विभिन्न प्रावधानों के माध्यम से जाति, प्रजाति और रंग के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें।

❑

25. सरकार की आर्थिक उपस्थिति

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) प्रधानमंत्री 2. (a) आर्थिक और सामाजिक विकास 3. (c) सतलज 4. (d) आई०आर०डी०पी०

(ख) 1. केन्द्र 2. 1950 3. रोजगार 4. जल-विद्युत 5. रेलवे

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (v) 4. (ii) 5. (i)

(ङ) 1. भारत की सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ जैसे—गरीबी, बेरोजगारी और अल्प विकास आदि हैं।

2. नदी पर बाढ़ का निर्माण करना, जिससे नदी के पानी का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा सके, जैसे—बिजली उत्पन्न करना, सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराना, बाढ़ और मिट्टी के कटाव को रोकना, वनीकरण, नौवहन, मछली पकड़ने और मनोरंजन आदि की सुविधा प्रदान करना बहुउद्देशीय परियोजना कहलाती है।

दो प्रमुख परियोजनाएँ भाखड़ा नाँगल परियोजना और दामोदर घाटी परियोजना हैं।

3. सरकार ने विभिन्न गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम प्रारम्भ किए हैं, जिनमें से दो निम्नलिखित हैं—

(i) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम—इस कार्यक्रम को ग्रामीण गरीबी को कम करने के लिए छठी पंचवर्षीय योजना में शामिल किया गया था। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत चिन्हित ग्रामीण परिवारों को उत्पादक सम्पत्तियाँ और निविष्टियाँ प्रदान की जाती हैं।

(ii) स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना—इस योजना का उद्देश्य गरीब परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाना है। यह एक केन्द्र आयोजित योजना है; जो देश के सभी विकास खण्डों में 1980 ई० से सक्रिय है। इस योजना के अन्तर्गत गरीबी रेखा के नीचे स्थित परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

4. मूल्यों के स्तर में तीव्र एवं निरन्तर वृद्धि को महँगाई कहते हैं। सरकार ने महँगाई को नियन्त्रित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए हैं—

(i) धन सम्बन्धी उपाय—जब भी महँगाई बढ़ती है, भारतीय रिजर्व बैंक अर्थव्यवस्था में धन के संचार को कम कर देता है। इसके परिणामस्वरूप लोगों की कम उपभोग करने की प्रवृत्ति बढ़ती है, जो बदले में, वस्तुओं की माँग में कमी करती है, जिससे मूल्यों में कमी आती है।

(ii) वित्तीय उपाय—जब सरकार धन के संचार में कटौती करने का निश्चय करती है, तो वह उच्च वेतन वर्गों तथा अनेक उपभोक्ता वस्तुओं पर ऊँचे कर लगाती है। जब लोगों के पास खर्च करने को पैसे कम होते हैं तो उनका उपभोग भी घटता है, जिससे उनके मूल्यों में गिरावट आती है।

(च) 1. स्वतन्त्रता के बाद सरकार ने अपनी अर्थव्यवस्था सुधारने के लिए नियोजन का विचार किया। नियोजन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से थी—

(i) ब्रिटिश लोगों ने हमारे आर्थिक संसाधनों का निर्दयता से शोषण किया था। देश की अर्थव्यवस्था सुधारने के लिए उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करना आवश्यक था।

(ii) स्वतन्त्रता के बाद देश को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। अतएव लक्ष्य एवं प्राथमिकताएँ स्थापित करने के लिए नियोजन की आवश्यकता थी।

(iii) अपेक्षित गरीब लोगों को राहत देना सबसे महत्त्वपूर्ण प्राथमिकता थी। दीर्घकालीन नियोजन ही उनकी समस्याओं को सुलझा सकता था।

(iv) देश के बहुमुखी विकास के लिए नियोजन आवश्यक था।

2. सरकार ने रोजगार के अवसर उत्पन्न करने के लिए अनेक विशिष्ट कार्यक्रम प्रारम्भ किए हैं। इसमें से कुछ प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित हैं—

(i) ग्रामीण कार्यक्रम—इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी प्रकृति के नागरिक कार्यों का निर्माण करना है।

(ii) समेकित शुष्क भूमि कृषि विकास कार्यक्रम—इस योजना के अन्तर्गत मिट्टी संरक्षण, भूमि एवं जल विकास जैसे स्थायी कार्य किए जाते हैं।

(iii) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम—इसका उद्देश्य पेय जल कुएँ, सामुदायिक सिंचाई, कुएँ, ग्रामीण तालाब, लघु सिंचाई कार्य, ग्रामीण सड़कें तथा विद्यालय जैसी ग्रामीण अवसंरचना को मजबूत करने वाली सामुदायिक परिसम्पत्तियों का निर्माण करना है।

(iv) **ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारण्टी कार्यक्रम**—इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में लाभप्रद रोजगार विकसित करना, उत्पादक परिसम्पत्तियों का निर्माण करना तथा ग्रामीण जीवन की कुल गुणवत्ता को सुधारना है।

(v) **औद्योगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम**—इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त सरकार ने श्रम शक्ति में दक्षता के विकास का सृजन करने के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण हेतु अनेक उपाय किए हैं। विद्यालय के स्तर पर ही व्यावसायिक शिक्षा का समेकन किया गया है।

(vi) **उद्यमिता विकास कार्यक्रम**—सरकार ने छोटे उद्यमियों तथा स्वरोजगार वाले व्यक्तियों को कम मूल्य पर पूँजी उपलब्ध कराने के लिए अनेक योजनाएँ क्रियान्वित की है, जिसने भारतीय उद्योगों तथा व्यवसाय के विस्तार में सहायता की है।

3. किसी देश की ताकत काफी हद तक उसके आर्थिक और सामाजिक विकास पर निर्भर करती है। आजादी के बाद सरकार ने अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए योजना बनाने के बारे में सोचा। अब तक प्रारम्भ की गई विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से सरकार उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम संभव तरीके से उपयोग करके गरीबी और बेरोजगारी को दूर करने का प्रयास कर रही है। सरकार ने गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए विभिन्न योजनाएँ प्रारम्भ की है, जैसे—एकीकृत ग्रामीण विकास रोजगार, जवाहर ग्राम समृद्धि योजना, प्रधानमन्त्री रोजगार योजना, स्वर्णजयन्ती शहरी रोजगार योजना, रोजगार आश्वासन योजना, प्रधानमन्त्री ग्रामोद्य योजना, ग्रामीण कार्यक्रम, एकीकृत शुष्क भूमि कृषि विकास, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास कार्यक्रम, ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारण्टी कार्यक्रम, औद्योगिक योजना और उद्यमशीलता विकास आदि। सरकार ने विभिन्न मौद्रिक और राजकोषीय उपाय करके महँगाई और मूल्य वृद्धि पर अंकुश लगाने का भी प्रयास किया है। चिकित्सा एवं देखभाल सुविधाओं में भी वृद्धि हुई है। कई घातक बीमारियों का अब इलाज संभव है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों और उप-केन्द्रों का एक जाल बनाया गया है। साक्षरता दर में सुधार के लिए 1988 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्रारम्भ किया गया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई), 1986, जिसे 1992 में संशोधित किया गया, के माध्यम से प्रारम्भिक शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच पर जोर दिया गया। सर्वशिक्षा अभियान (एस०एस०ए०) 2001-02 में प्रारम्भ किया गया।

4. ऊर्जा एवं उद्योगों के विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ उपक्रमों (संगठनों) के नाम निम्नलिखित हैं—

(i) **ऊर्जा**—नेशनल थर्मल पॉवर कॉरपोरेशन (एन०टी०पी०सी०), नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पॉवर कॉरपोरेशन (एन०एच०पी०सी०), नार्थ ईस्टर्न पॉवर कॉरपोरेशन (एन०ई०पी०सी०), ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कमीशन (ओ०एन०जी०सी०), कोल इण्डिया लिमिटेड (सी०आई०एल०) और ऑयल इण्डिया लिमिटेड (ओ०आई०एल०)।

(ii) उद्योग—भारतीय रेलवे, भारतीय जहाजरानी निगम, भारतीय इस्पात प्राधिकरण, भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स, इण्डियन टेलीफोन इण्डस्ट्रीज, हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड आदि।

5. हमें सरकार की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है—
   (i) सरकार लोगों के कल्याण, उनकी सुरक्षा और समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए कानून बनाती है।
   (ii) सरकार परियोजनाओं, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, बुनियादी ढाँचे और अन्य व्यय के लिए कर लगाती है।
   (iii) सरकार लोगों को उनके अधिकारों के बारे में आश्वासन और गारण्टी देती है।
   (iv) सरकार कानून तोड़ने वाले किसी भी नागरिक को दण्डित करती है और सुधार कर नागरिक जीवन में वापस लाती है।
   (v) अन्त में, सरकार किसी भी आंतरिक या बाह्य खतरे से देश की रक्षा करती है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

अर्द्धवार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

नोट : सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

(क) 1. (b) तीन काल में 2. (a) रेगुलेटिंग एक्ट द्वारा 3. (b) कोल ने
4. (c) हरिजन 5. (b) कैप्टन मोहन सिंह

(ख) 1. 1858 ई० 2. 1853 3. हैजे
4. लॉर्ड विलियम बैण्टिक 5. सीधी कार्रवाई दिवस

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. (iii) 2. (i) 3. (iv) 4. (ii)

(ङ) 1. भारत में आधुनिक युग की शुरुआत अठारहवीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा उसके अधीन होने के बाद हुई थी।

2. वॉरेन हेस्टिंग्स भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था।

3. बिरसा मुण्डा बिहार (झारखण्ड) में छोटा नागपुर पठार क्षेत्र में रहने वाली मुण्डा जनजाति के एक नेता थे। उनका जन्म 1875 ई० में हुआ था। सन् 1895 ई० में उसने एक नए धर्म का प्रचार किया, जिससे कई शिष्य उसकी ओर आकर्षित हुए।

4. 'जाति' शब्द एक पदानुक्रमित संबंध को अभिव्यक्त करता है। जाति-व्यवस्था हिन्दू समाज के संगठन का आधार है। यह शुद्धता और प्रदूषण के विचार पर

आधारित है। जो प्रदूषण–शुद्धता पदानुक्रम (सीढ़ी) के शीर्ष पर हैं, उन्हें उच्चतम स्थान दिया जाता है तथा सबसे नीचे पायदान पर स्थित लोग निम्नतम् स्तर पर होते हैं।

5. स्वराजवादियों ने असहयोग आन्दोलन के निलंबन के कारण स्वराज पार्टी का गठन किया। स्वराज पार्टी के प्रमुख नेता चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू थे। उन्होंने 1923 ई० के चुनाव लड़े तथा केन्द्रीय विधान सभा में बड़ी संख्या में सीटें प्राप्त की। उनका उद्देश्य सरकार के कामकाज में लगातार रुकावट डालना था। केन्द्रीय विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों के रूप में उन्होंने महत्त्वपूर्ण सरकारी बिलों को पारित कराने में बाधा उत्पन्न की।

(च) 1. अठारहवीं शताब्दी को भारतीय इतिहास का सबसे अन्धकारपूर्ण काल माना जाता है। सन् 1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही महान मुगलों के शासन का समापन हुआ। राजपूतों, जाटों, बुन्देलों, सतनामियों तथा सिखों के कई विद्रोह हुए। दक्कन में मराठों के उभार से औरंगजेब के शासनकाल में ही मुगल साम्राज्य की जड़ें हिलने लगी थीं। नादिरशाह के आक्रमण (1739 ई०) ने मुगल शक्ति पर गहरा वज्रपात किया। अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण (1748-57 ई०) तथा पानीपत के तीसरे युद्ध (1761 ई०) मराठों तथा मुगलों के लिए घातक सिद्ध हुए। इन परिस्थितियों ने इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल में आधिपत्य जमाने का अवसर दिया और भारत में ब्रिटिश सत्ता स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया। मुगल साम्राज्य की कमजोरी का लाभ उठाते हुए बंगाल, अवध, हैदराबाद, रूहेलखण्ड, मैसूर, राजपूताना आदि स्वायत्तशासी बन गए। कर्नाटक के तीन युद्ध (1744-63 ई०) अंग्रेजों के पक्ष में निर्णायक सिद्ध हुए। भारत में राजनीतिक अस्थिरता ने देश पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए यूरोपीय व्यापारिक शक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता को आमंत्रित किया। इसका भारतीय कृषि, हस्तशिल्प तथा व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। विभिन्न कलाओं का भी ह्रास हुआ। अंग्रेजों ने भारतीय व्यापार को अपने हाथों में ले लिया। उन्होंने भारतीयों का शोषण किया, जिससे कारीगरों एवं शिल्पकारों का विनाश हो गया।

2. गवर्नर जनरल की परिषद को बड़ी संख्या में अधिकारियों द्वारा सहायता प्रदान की गई, जिन्होंने सिविल सेवा का गठन किया। लॉर्ड कॉर्नवॉलिस को भारत में ब्रिटिश सिविल सेवा का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन्होंने अधिकारियों के लिए कठोर नियम बनाए। समय के साथ ये अधिकारी दुनिया में सबसे ज्यादा वेतन पाने वाले सिविल सेवक बन गए। इन सेवाओं के सम्मान और उच्च वेतनों के कारण कुलीन परिवारों के युवक इसकी ओर आकर्षित होने लगे। उन दिनों प्रभावशाली ब्रिटिश परिवारों के सदस्य ही मुख्य रूप से इन सेवाओं के लिए नामित होते थे। इसके बाद 1853 ई० के अधिनियम द्वारा भारतीय सिविल सेवाओं के लिए एक खुली प्रतियोगिता की प्रणाली लागू की गई। लॉर्ड वेलेस्ली ने इन अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।

हालांकि 1806 ई० में निदेशकों ने इन अधिकारियों को प्रशिक्षित करने का काम इंग्लैण्ड के हेलीबरी कॉलेज में स्थानान्तरित कर दिया। प्रशासनिक दृष्टि से ब्रिटिश भारत को अनेक जिलों में बाँटा गया। प्रत्येक जिला एक कलेक्टर के अधीन रखा गया, जो प्रशासन का प्रमुख व्यक्ति होता था तथा राजस्व वसूलने एवं कानून व्यवस्था कायम रखने के लिए उत्तरदायी होता था।

3. 19वीं शताब्दी में जनजातीय अर्थव्यवस्थाओं तथा समाजों में अनेक परिवर्तन हुए। वे मुख्य रूप से शिकार करके, मछली पकड़कर और भोजन इकट्ठा करके अपना गुजारा करते थे। बाद में, उन्होंने झूम खेती को अपनाया। उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश राजस्व प्रशासन ने पाया कि कई आदिवासी क्षेत्रों में भूस्वामित्व का संचार माध्यम अभी भी बरकरार है। हालांकि यह प्रथा लम्बे समय तक नहीं चली, जब भू-अभिलेख विभाग निहित स्वार्थों के दबाव के आगे झुक गया और धीरे-धीरे भूमि गैर-जनजातीय किसानों को हस्तांतरित कर दी गई। जनजातीय लोग अपनी भूमि से वंचित कर दिए गए। सड़क-निर्माण, रेल पटरियाँ बिछाने, खनन आदि क्रियाओं से जनजातियों के संसाधनों का विनाश हुआ था तथा उनके जीवन में गरीबी और कष्ट आ गए। इससे उनके समाज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। छोटा नागपुर क्षेत्र में इस तरह के विकास कार्यों से जनजातीय अर्थव्यवस्था में अनेक संरचनात्मक परिवर्तन हुए—
   (i) जनजातीय अपनी भूमि से अलग कर दिए गए, लेकिन उनका पुनर्वास संतोषजनक रूप से नहीं किया जा सका।
   (ii) गैर-जनजातीय लोगों के प्रवेश से जनजातीय बस्तियों में उल्लेखनीय जनांकिकीय परिवर्तन हुए।
   (iii) जनजातीय लोगों को उनकी पारंपरिक भूमि से बेदखल करने से व्यावसायिक परिवर्तन हुए। उनमें से कई लोग बागानों, खानों और उद्योग में सामान्य श्रमिक बन गए।

4. राजनीतिक क्षेत्र में महान योगदान देने के अतिरिक्त, महात्मा गाँधी ने जाति-व्यवस्था में सुधार और दलित वर्गों के उत्थान के लिए उपयोगी योगदान दिया। उन्होंने अस्पृश्यता की निंदा की। वे गीता में निहित समानता के सिद्धान्त में आस्था रखते थे। जब ब्रिटिश सरकार ने सांप्रदायिक पुरस्कार द्वारा हरिजनों को हिन्दुओं से अलग करने की कोशिश की तब उन्होंने आमरण अनशन किया। हरिजनों के उत्थान के लिए उन्होंने 1932 ई० में हरिजन सेवक समाज की स्थापना की। सन् 1933 ई० में उन्होंने साप्ताहिक पत्र हरिजन का प्रकाशन प्रारम्भ किया तथा इसके माध्यम से हरिजन के हितों पर ध्यान दिया। 'हरिजन' का अर्थ था—ईश्वर की संतान। वे स्वयं हरिजनों के साथ उनकी बस्ती में जाकर रहने लगे। उन्होंने अस्पृश्यता के निवारण को बहुत महत्त्व दिया।

5. सन् 1942-45 ई० की अवधि में सुभाष चन्द्र बोस की कट्टरपंथी गतिविधियों का प्रभुत्व रहा। गाँधीजी के विरोध के बावजूद वे दो बार (1938-1939 ई०) काँग्रेस के अध्यक्ष बने। बोस सन् 1941 में गुप्त रूप से भारत छोड़कर बर्लिन पहुँचे। वहाँ से वे जापान गए, जहाँ रासबिहारी बोस की पहल पर कैप्टन मोहन सिंह ने 'आजाद हिन्द फौज' या भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) की स्थापना की। इसमें ब्रिटिश सेना के भारतीय सैनिक जो युद्ध में जापानियों द्वारा बन्दी बना लिए गए थे, सम्मिलित थे। बोस ने इस सेना में नया जीवन फूँका तथा नेताजी कहलाए जाने लगे। उन्होंने प्रसिद्ध युद्ध नारा भी दिया : दिल्ली चलो। आजाद हिन्द फौज जापानी सेना के साथ भारत की पूर्वी सीमा तक पहुँची और भारतीय झण्डा फहराया। उसके अनेक सैनिक बन्दी बना लिए गए। इसके बाद, लाल किले में उन पर सार्वजनिक मुकदमा चलाया गया। इससे लोगों में देशभक्ति के भाव जाग उठे। परिणामत: आजाद हिन्द फौज के नेताओं की सजा माफ कर दी गई तथा उन्हें छोड़ दिया गया। अशान्ति की लहर रॉयल इण्डियन एयर फोर्स तथा नेवी में भी फैल गई। इस अनुभूति ने देश की स्वतन्त्रता की प्रक्रिया तेज कर दी।

❑

वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

नोट : सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

(क) 1. (d) प्राकृतिक 2. (b) अवसादी चट्टानों में 3. (c) कागज उद्योग
4. (d) अनुच्छेद 17 5. (d) 245

(ख) 1. मिलेट 2. अयस्क 3. केरल 4. तीन 5. 61

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (i) 3. (ii) 4. (iii)

(ङ) 1. कोई भी पदार्थ जो पृथ्वी का भाग है और जो मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करता है, संसाधन कहलाता है।

2. अनेक वस्तुएँ ऐसी हैं, जो प्रयोग करने के उपरांत पुन: नया रूप देकर उपयोगी वस्तुओं को बनाने के काम आ सकती हैं। इस प्रक्रिया को ही पुन: चक्रण कहते हैं।

3. भारत के तीन इस्पात उत्पादक केन्द्रों के नाम हैं—जमशेदपुर, दुर्गापुर और भिलाई।

4. संवैधानिक उपचारों का अधिकार सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकार है, क्योंकि यह संविधान द्वारा प्रदत्त अन्य सभी अधिकारों की रक्षा करता है। यह अधिकार किसी भी नागरिक को उसके किसी भी अधिकार का उल्लंघन होने पर न्यायालय में जाने की अनुमति देता है। मौलिक अधिकार न्यायोचित हैं। संविधान न्यायालयों को नागरिक की याचिका पर नागरिक के अधिकारों को बहाल करने के लिए सरकार को रिट (आदेश) जारी करने का अधिकार देता है।

5. भारत की सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ जैसे—गरीबी, बेरोजगारी और अल्प विकास आदि हैं।

(च) 1. संसाधनों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से होता है। मूल रूप से संसाधन दो प्रकार के होते हैं—(i) प्राकृतिक संसाधन, (ii) मानव-निर्मित संसाधन।

(i) प्राकृतिक संसाधन—पर्यावरण से प्राप्त कोई भी पदार्थ या तत्त्व, जो मानव द्वारा उपयोग किया जाता है, जैसे—हवा, पानी, मिट्टी, खनिज ईंधन, पौधे तथा वन्य जीवन आदि प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। कुछ संसाधन जैसे—हवा, पानी और पौधे मानव जाति के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं, जबकि अन्य जैसे—खनिज और ईंधन का उपयोग अन्य भौतिक आवश्यकताओं और चाहतों को पूरा करने के लिए किया जाता है।

(ii) मानव-निर्मित संसाधन—मानव संसाधन लोगों की संख्या और क्षमताओं (मानसिक और शारीरिक) को सन्दर्भित करता है। जनसंख्या के वितरण और घनत्व का मापन संख्यात्मक रूप में किया जाता है। लोगों की मानसिक और शारीरिक क्षमताएँ जटिल होती हैं, जिसे मापना आसान नहीं है। लोगों की मानसिक और शारीरिक क्षमताओं को समाप्त करने के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य को महत्त्वपूर्ण मानदंड माना जाता है। वास्तव में, ये दोनों तत्त्व लोगों को संसाधन विकसित करने में सक्षम बनाते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से शिक्षित और स्वस्थ जनसंख्या किसी भी देश की मूल्यवान धरोहर है। मानव अपनी योग्यता के आधार पर भौतिक पदार्थों को मूल्यवान संसाधनों में परिवर्तित कर देता है। उदाहरण के लिए, मशीनें, औजार, प्रौद्योगिकी, पूँजी, मकान तथा इमारतें, यातायात और संचार के साधन, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाएँ आदि विभिन्न प्रकार के मानव-निर्मित संसाधन हैं।

2. प्राकृतिक गैस, कोयला और पेट्रोलियम को जीवाश्म ईंधन कहते हैं। पृथ्वी के अंदर करोड़ों वर्षों तक मृत पेड़-पौधों और जानवरों का मिट्टी, बालू एवं चट्टान के बीच दबे रहने के फलस्वरूप जो पदार्थ बनते हैं, उन्हें जीवाश्म कहते हैं और इनसे मिलने वाले ईंधन को जीवाश्म ईंधन कहते हैं।

पृथ्वी के भीतर ऑक्सीजन की अनुपस्थिति होने के कारण उच्च, ताप एवं दाब के कारण कालांतर में इन जीवों के अवशेष कोयले में परिवर्तित हो गए, जिसमें यह अलग-अलग पर्त के रूप में परिवर्तित होते गये। जिसमें पेट्रोल, प्राकृतिक गैस तथा कोयले आदि की अलग-अलग पर्तें होती हैं, अलग-अलग गहराई में भिन्न-भिन्न ताप और दाब मिलने के कारण यह असमानता होती है।

3. भारत में सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिकी का विकास 1984 ई० में शुरू हुआ। पिछले तीन दशकों में भारत ने दूर-संचार क्षेत्र ने बहुत तरक्की की है। सन् 1984 से 1988 तक कम्प्यूटरों की संख्या दस गुना बढ़ी, कम्प्यूटर उद्योग का राजस्व चार गुना बढ़ा और कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर निर्यात पाँच गुना बढ़ा है। बंगलुरु, हैदराबाद, मुम्बई,

पुणे, चेन्नई, दिल्ली–नोएडा–गुड़गाँव पेटी, चण्डीगढ़ और तिरुवनन्तपुरम सूचना प्रौद्योगिकी के कुछ महत्त्वपूर्ण केन्द्र हैं। भारतीय कम्पनियाँ अन्य क्षेत्रों के अलावा चिप डिजाइन, वेब आधारित सेवाएँ और दूरसंचार सॉफ्टवेयर में दक्ष हो रही हैं। इस क्षेत्र में भारत एक महान नेतृत्वकर्त्ता के रूप में उभरा है।

4. अधिकार और कर्त्तव्य साथ–साथ चलते हैं। लोकतान्त्रिक व्यवस्था तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक कि नागरिकों के अधिकारों और कर्त्तव्यों में सन्तुलन स्थापित न हो। सरकार अपने नागरिकों के अधिकारों की संरक्षक है। इसके बदले में नागरिकों को अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। नागरिक अपने मौलिक अधिकारों का आनन्द तभी ले सकते हैं जब वे अपने मौलिक कर्त्तव्यों का पालन करें। नागरिकों को देशभक्त बनाने और सद्भाव के विचारों को बढ़ावा देने और राष्ट्र को मजबूत करने के लिए मौलिक कर्त्तव्यों को संविधान में शामिल किया गया है।

5. सरकार ने रोजगार के अवसर उत्पन्न करने के लिए अनेक विशिष्ट कार्यक्रम प्रारम्भ किए हैं। इसमें से कुछ प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित हैं—

   (i) ग्रामीण कार्यक्रम—इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी प्रकृति के नागरिक कार्यों का निर्माण करना है।

   (ii) समेकित शुष्क भूमि कृषि विकास कार्यक्रम—इस योजना के अन्तर्गत मिट्टी संरक्षण, भूमि एवं जल विकास जैसे स्थायी कार्य किए जाते हैं।

   (iii) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम—इसका उद्देश्य पेय जल कुएँ, सामुदायिक सिंचाई, कुएँ, ग्रामीण तालाब, लघु सिंचाई कार्य, ग्रामीण सड़कें तथा विद्यालय जैसी ग्रामीण अवसंरचना को मजबूत करने वाली सामुदायिक परिसम्पत्तियों का निर्माण करना है।

   (iv) ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारण्टी कार्यक्रम—इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में लाभप्रद रोजगार विकसित करना, उत्पादक परिसम्पत्तियों का निर्माण करना तथा ग्रामीण जीवन की कुल गुणवत्ता को सुधारना है।

   (v) औद्योगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम—इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त सरकार ने श्रम शक्ति में दक्षता के विकास का सृजन करने के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण हेतु अनेक उपाय किए हैं। विद्यालय के स्तर पर ही व्यावसायिक शिक्षा का समेकन किया गया है।

   (vi) उद्यमिता विकास कार्यक्रम—सरकार ने छोटे उद्यमियों तथा स्वरोजगार वाले व्यक्तियों को कम मूल्य पर पूँजी उपलब्ध कराने के लिए अनेक योजनाएँ क्रियान्वित की है, जिसने भारतीय उद्योगों तथा व्यवसाय के विस्तार में सहायता की है।

❑